32

10, III

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

वसन्ताङ्क

वर्ष
१०
सं० २००८

संख्या
३
चैत्र



वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

ग्राहकों और लेखकोंको आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' निश्चित तिथि पर प्रकाशित होनेसे बम्बई कलकत्ता मद्रास आदि दूर-दूरके ग्राहकोंको डाक द्वारा पांच दिनके विलम्बसे पहुँचता था, अतः अनेक ग्राहकोंके आग्रहसे अब 'श्रीस्वाध्याय' निश्चित तिथिसे एक सप्ताह पूर्व प्रकाशित करनेका निश्चय किया है ताकि दूर-दूरके ग्राहकोंको डाक द्वारा निश्चित तिथिसे एक दो दिन पहले ही मिल जावे। इस योजनाके अनुसार, यह अङ्क नववर्षारम्भके दिन चैत्र शु० १ को ही हम पाठकोंको भेंट कर रहे हैं। इस शीघ्रतामें विलम्बसे आये हुए कुछ लेख और सूचनाएं इस अङ्कमें नहीं जा सकी हैं। आगामी 'ग्रीष्माङ्क' में वे ही लेख और विज्ञापन प्रकाशित हो सकेंगे जो ज्येष्ठ कृष्णा ३० ता० ४ जून ५१ तक कार्यालयमें पहुँच जावेंगे, विद्वान् लेखक और विज्ञापनदाता इस बातको स्मरण रखकर समय पर अपने लेख और विज्ञापन भेजनेकी कृपा करें।

जो सज्जन गत वर्षके 'वसन्ताङ्क' से (मार्च १९५० से) ग्राहक बने थे उनका मूल्य गताङ्कमें समाप्त हो चुका है। अतः जिन ग्राहकोंने अभी तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है वे अब शीघ्र ही भेजकर यह अंक मंगवा लें। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी। पत्र व्यवहार और मनीआर्डरके कूपन पर अपना पूरा पता और ग्राहक नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें हिन्दीमें लिखें। उत्तरके लिए जवाबी कार्ड वा टिकट आना आवश्यक है। — व्यवस्थापक।

❀ श्रीः ❀

❀ श्रीस्वाध्याय ❀

———०००———

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

★

★

प्रधान सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उप सम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री बी० ए०

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन [हिमाचल प्रदेश]

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक-

(१) जो महानुभाव ३००) तीनसौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्त्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेमें उक्त मूल्यमें चार आने रजिस्ट्री खर्च के अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहकसंख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसी को नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे, उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः   ❀ श्रीः ❀   स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [गद्याश्लोक]

वर्ष १० | सोलन, चैत्र शु० १० मंगलवार सं० २००८ वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

निवेदन

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

असत्याभिर्वाग्भिर्जनहृदयमाकृष्य सहसा
वयस्य ! स्निग्धाभिः श्रवणमधुराभिश्च सततम् ।
यशः प्राप्तं लोके किमु यमपुरीवैतरिणिका-
सरित्पारं नेतुं प्रतिपदमगाधं प्रभु भवेत् ॥१॥

स्वकल्याणाऽऽकांक्षा वसति यदि चित्तेषु सुजनाः
प्ररूढं जिह्मं तज्जहित झटिति ध्वान्तकरणम् ।
न जिह्मानां प्राप्यं कथमपि सदाऽऽलोकनयनं
यदा यत्तैवाऽस्ते जगति खलु निर्व्याजकरुणा ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

सङ्कटसे बचनेके लिए

आज विश्व विक्षुब्ध हो उठा है। चारों ओर घोर अशान्ति, लोलुपता और प्रतिहिंसाकी भावनाएं भर रही हैं। कहीं भी शान्ति, संतोष, समता और प्रभु-भक्तिका चिन्ह भी दिखाई नहीं देता। पारस्परिक संघर्षजन्य विनाशक अग्निकी प्रबल लपटें धांय-धांय करती हुई समग्र संसारको भस्मसात् किये जा रही हैं। कोई भी उस अग्निको शान्त करनेका प्रयत्न करता नहीं दिखाई देता। वयक्तिक स्वार्थोंसे घिरे हुए सबके सब प्राणी उन आगकी लपटोंको दुष्कर्मका पैट्रोल छिड़क कर उत्तरोत्तर भड़काते ही जा रहे हैं। स्मरण रखिए राष्ट्रोंके पारस्परिक संघर्षकी यह अग्नि केवल युद्ध-ग्रस्त दो देशोंका या युद्धमें भाग लेने वाले सैनिकोंका ही संहार नहीं करती प्रत्युत विश्वके प्राणिमात्रको संतप्त कर देती है। विगत युरोपीय युद्धको समाप्त हुए पांच वर्ष बीत जानेके पश्चात् भी आज जो सारे संसारमें और विशेष रूपसे हमारे देशमें भुखमरी, विनाश और महर्घताका अकाण्ड ताण्डव हो रहा है, वह उक्त योरोपीय युद्धका ही परिणाम तो है। इस सङ्कट-कालमें सारा संसार भारतकी ही ओर आशा भरी दृष्टिसे देख रहा है और सोच रहा है कि स्यात् यह प्राचीन राष्ट्र विपत्तियोंके पारावारसे संसारको पार लगानेमें समर्थ हो जाय। देखनेमें यह बात कुछ अटपटी-सी प्रतीत होती है, क्योंकि जो देश स्वयं ही आपत्तियोंकी चक्कीमें पिसा जा रहा हो, कण-कणके लिए तरस कर दूसरोंकी ओर आशा भरी दृष्टिसे हाथ फैला रहा हो, जो अपना ही त्राण करनेमें विवश हो रहा हो वह भला संसारका क्या उद्धार करेगा, और संसार उससे क्यों कोई आशा रखेगा।

भारतमें इसी विरोधाभासका तो विलक्षण समन्वय है। यह सबसे दीन होकर भी सबसे शक्तिशाली है अपने आत्मबलके कारण, और दूसरे राष्ट्र भौतिक शक्तिमें सबसे बलवान् होकर भी सबसे दीन हैं, आध्यात्मिक बलके अभावके कारण। भौतिक बल विजयी होकर भी अंतमें पराजित होता है और आत्मबल पराजित होकर भी अंतमें विजयी होता है। भारत सदासे उस आध्यात्मिक बलके बूते पर ही विश्वमें विजयी रहा है। उसने कभी भौतिक सत्ता पर स्वत्व प्राप्त करनेका प्रयत्न नहीं किया। और ऐसा करके वह घाटेमें भी नहीं रहा। आध्यात्मिकताके कारण वह विश्वके विज्ञ-विवेचकोंकी दृष्टिमें सदा गौरवान्वित ही रहा है। आज भी इसी कारण आने वाले संकटोंसे उद्धार पानेके लिए विश्व भारतकी ओर उन्मुख हो रहा है।

किन्तु, आज भारतकी अपनी स्थिति अत्यन्त विचित्र हो रही है। यह देश स्वतन्त्र होकर भी पीड़ित और दिन-दिन दलित होता जा रहा है। इस दुरवस्थासे अपना और विश्वका उद्धार करनेके लिए हमें फिरसे प्राचीन संस्कृतिको, आध्यात्मिकताको अपनाना होगा। आर्यत्वकी पुनः प्रतिष्ठाके बिना कल्याण होनेका नहीं। हम लोग जितने बड़े यज्ञके उपासक थे उतने ही यज्ञविमुख होते जा रहे हैं। यज्ञ विमुखता ही हमारी सब विपत्तियोंका मूल कारण है। वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता आदि प्रत्येक ग्रन्थका अक्षर-अक्षर हमें यज्ञ-निरत होनेके लिए प्रेरणा दे रहा है। दूसरोंका भाग दूसरोंको देकर अपना भाग स्वयं ग्रहण करना ही यज्ञ है। अथवा यों कह सकते हैं कि जिस वस्तुकी जहां आवश्यकता है उसको उचित मात्रामें वहां पहुँचाना ही वास्तविक यज्ञ है।

विश्वको आत्ममय जानकर त्याग पूर्वक उपभोग करना ही आर्यत्व है। हमारे पंचमहायज्ञ हमें इसी त्यागमय उपभोगकी ओर प्रेरित करते हैं और सब झंझटोंको छोड़कर हम वेद भगवान्‌के—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

इस आदेशका पालन करने लग पड़ें तो बातकी बातमें अपना और विश्वका, व्यक्तिका और समाजका, जातिका और राष्ट्रका, सभीका उद्धार कर लेंगे।

'तेन त्यक्त न भुंजीथा'

यदि हम इस वैदिक आदेशको अपने जीवनका आदर्श बना लें तो फिर कोई संकट रह ही कैसे सकता है। किन्तु आज तो हम इस आदर्शके सर्वथा विपरीत जा रहे हैं। वेद भगवान् आज्ञा देते हैं कि त्यागपूर्वक उपभोग करो, लालच मत करो, धन किसीका नहीं है, या यह सोचो कि धन किसका है ? वह तुम्हारा नहीं प्रत्युत राष्ट्रका है। पर हम आचरण सर्वथा इसके विपरीत कर रहे हैं। हम त्याग तो करते नहीं और उपभोगमें ही प्रवृत्त हैं, लोभके दल-दलमें फंसे हुए हैं, धनको राष्ट्रका न समझकर अपना समझ बैठे हैं। ऐसी स्थितिमें हमारा उद्धार हो तो भला कैसे हो। गीता भी बार-बार यज्ञप्रेमी बननेके लिए हमें प्रेरित करती है और आदेश देती है कि :—

"यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥
यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय ! मुक्तः संग समाचर॥"

कितने स्पष्ट शब्दोंमें घोषणा की गई है कि यज्ञसे अवशिष्टका भोग करने वाले प्राणी सब पापोंसे, कष्टोंसे, संकटोंसे छूट जाते हैं। और इसके विपरीत आचरण करने वाले वे लोग जो केवल अपने लिए ही पकाते हैं, वे केवल पाप ही का उपभोग करते हैं। अघ, पाप और कष्ट ही का नाम है। यदि हम "यज्ञ शिष्टाशी" न होकर "केवलादि" बन जांय तो पाप और कष्ट ही तो हमारे लिए बचेंगे।

"केवलादी केवलाघो भवति।"

अपने ही लिए संग्रह करने वाला व्यक्ति अवश्य पापी और दुःखी होगा। अतः हमें आज ही से यज्ञ-निरत हो जाना चाहिए। अधिक कुछ न कर सकें तो अपनी आयका दशमांश अवश्य दूसरेके निमित्त निकाल दिया करें। यह कोई बड़ी बात नहीं है। एक बार आरम्भ करना ही कठिन है। फिर किसी प्रकारका कोई अटपटापन प्रतीत न होगा। और जब हम ऐसा करने लग पड़ेंगे तो निश्चित रूपसे हमारी सर्वविध उन्नति आरम्भ हो जायगी। ऐसे कुछ निदर्शनभूत व्यक्ति अब भी विद्यमान हैं जो इस स्वर्ण-सिद्धान्त पर आचरण कर अपना और समाजका कल्याण कर रहे हैं। पंजाबकी विख्यात व्यवसायी फर्म बाबा प्रद्युम्नसिंह एन्ड सन्सके संस्थापक श्री बाबा प्रद्युम्नसिंहजी आरम्भमें पन्द्रह रु० मासिक पाते थे। उन्होंने उसका दशांश डेढ़ रुपया मासिक राष्ट्रके निमित्त निकालकर शेष १३॥) में ही अपने परिवारका निर्वाह करनेका निश्चय कर लिया था। और उनके उत्तराधिकारी आज भी उन्हींके नियम पर चल रहे हैं। इस शुभ संकल्पका जो श्रेयस्कर परिणाम हुआ वह संसारमें सर्वत्र विदित ही है। १५) मासिक पाने वाला एक साधारण व्यक्ति अपने शुभ-संकल्पके प्रभावसे करोड़पति बन सकता है यह कल्पना उस समय किसे थी। अस्तु।

अनेक व्यापारी अपने यहां कुछ निश्चित दान निकालते भी हैं, पर उस दानके धनकी सम्पत्तिका उपभोग वे अपने सम्बन्धियोंके या परिचितोंके कार्योंमें कर लेते हैं। कई लोग उस सम्पत्तिसे तीर्थ यात्रा कर आते हैं। ऐसा करना तो अपने आपको और संसारको धोखा देना है, इसलिए जो लोग अपनी दुकानोंमें धर्मादा काटते हैं, उन्हें हम विशेष रूपसे कहना चाहते हैं कि वे उस सम्पत्तिका उपयोग अपने या अपने सम्बन्धियोंके लिए न कर दीन दुःखियोंकी सेवाके लिए करें। तभी वे अपना और राष्ट्रका कल्याण कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे यहां जप यज्ञकी बड़ी महिमा गाई गई है, अतः प्रत्येक आर्यका यह कर्तव्य है कि वह प्रतिदिन थोड़ा मंत्र जप भी अवश्य करें। गायत्री मंत्र तो मंत्रराज है ही, साथ ही मृत्युंजय मंत्र भी अपूर्व सामर्थ्य रखता है। जिसने भी इसका जप किया है उसीको निश्चित लाभ हुआ है। इसलिए विश्व, राष्ट्र तथा अपने पर आने वाली विपत्तिसे त्राण पानेके लिए हमें इन आध्यात्मिक उपायोंको आज हीसे अपना लेना चाहिए। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि 'श्रीस्वाध्याय'के श्रद्धालु पाठक जिनकी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पहलेसे ही पर्याप्त उन्नत है, उक्त दोनों साधनोंको भी अपनाकर अपनी आयका दशमांश परोपकारके निमित्त निकालने तथा गायत्री मृत्युंजय वा अपने इष्टदेवका गुरु प्रदत्त मन्त्रका जप करने लग पड़ेंगे तो निश्चित रूपसे कल्याण मार्गके पथिक बन जायेंगे।

श्रीरामजन्मोत्सव—

इस तिमाहीमें धर्मके उद्धारक और अधर्मके नाशक दोनों रामों (भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीपरशुराम) के अवतार धारण दिवस आ रहे हैं। वर्षके आरम्भ ही में प्रतिवर्ष आते हुए ये दोनों महापर्व भारतीयोंको प्रतिवर्ष कर्म परायण रहनेकी प्रेरणा देते हैं। चैत्र शुक्ल नवमी और वैशाख शुक्ल तृतीया ये दोनों तिथियां अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं।

रामनवमी प्रति वर्ष आती और हम भारतीयोंको 'रामराज्य' का सन्देश दे जाती है, पर क्या हमने उस राज्य की प्रतिष्ठाके लिए कुछ प्रयत्न किया? नहीं कुछ नहीं। गांधीजी 'रामराज्य' की रट लगाते हुए चले गए, पर उनके अनुयायी आज प्रत्येक बातमें रामराज्यके आदर्शोंसे सर्वथा विपरीत जा रहे हैं। 'रामराज्य' कभी आर्यत्वसे विहीन नहीं हो सकता, पर आजकलकी कांग्रेस सरकार तो आर्यत्वका नाम लेते ही चौंक उठती है। भारतीयतासे वह भयभीत होती है। अभी पिछले दिनों देहलीमें सम्पन्न हुए सांस्कृतिक सम्मेलनमें व्यक्त किए गये हमारे प्रधान-मन्त्रीके विचारोंमें कहीं भारतीय संस्कृतिके प्रति प्रेमका चिन्ह भी प्रकट नहीं हुआ। विपरीत इसके उन्होंने दूसरी संस्कृतियोंकी ही बड़े जोरसे वकालत की, और कहा कि यदि हमने दूसरी संस्कृतियोंकी ओरसे अपनी आंखें बन्द कर लीं तो हमारे मस्तिष्क बौने और ठिगने हो जायेंगे। इत्यादि।

वे तो भारतीयताके इतने विरोधी हैं कि अपने नामके साथ पंडित शब्दका प्रयोग करनेमें भी लज्जाका अनुभव करते हैं। 'गो रक्षा' का समर्थन तो कहीं रहा वे तो आर्थिक दृष्टि कोणकी दुहाई देते हुए गो हत्याको भी बुरा नहीं मानते। शासन सत्ताके सूत्रधार व्यक्ति हीके जब ऐसे विचार हों तो उससे 'रामराज्य' की स्थापनाकी आशा करना एक दुराशा मात्र नहीं तो क्या?

इसलिए सरकारसे कुछ भी आशा न रखते हुए जनताको ही इस 'राम-नवमी' से प्रेरणा प्राप्त कर रामराज्यकी स्थापनाके लिए प्रयत्नशील हो जाना चाहिए।

अक्षय तृतीयाका भारतीय जीवनमें विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि यह तिथि दो-दो महान् आदर्शवीरोंकी जननी है। भगवान् श्रीपरशुराम और महाराज शिवाजी, ये दोनों दुष्ट संहारक महावीर इसी दिन प्रकट हुए थे। भारतीय जनताका कर्तव्य है कि वह इन दोनों महापुरुषोंका जन्मोत्सव संयुक्त रूपसे मनाकर राष्ट्रमें वीर-भावनाका प्रचार करें।

यह एक आश्चर्य और खेदका विषय है कि भगवान् श्रीपरशुरामका जन्मोत्सव मनानेमें जनता कुछ विशेष उत्साह नहीं दिखाती और उसे केवल ब्राह्मण वर्गका ही उत्सव समझती है। यह संकीर्ण जातीयताका ही सूचक है। हमें इस संकीर्ण जातीयतासे ऊपर उठकर भगवान् रामके समान ही श्रीपरशुरामजीका जन्मोत्सव भी बड़ी धूम-धामसे मनानेका आयोजन करना चाहिए। इसी दिन शिवाजी महाराजका जन्मोत्सव भी सोत्साह सम्पन्न होना आवश्यक है।

संस्कृति समाप्त हो रही है—

पिछले दिनों देहलीमें अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन सोत्साह सम्पन्न हो गया। सम्मेलनमें अनेक महापुरुषोंके विविध विषयों पर बड़े-बड़े धुंआं-धार भाषण हुए। राष्ट्रपति और केन्द्रीय मंत्रिमण्डलके अनेक सदस्योंने भी इसमें भाग लिया था। सबने अपने-अपने विचार और उद्गार व्यक्त किए। और संस्कृति-संरक्षणकी खूब दुहाई दी गई, पर किसीने भी भारतीय संस्कृतिके मूल स्रोत संस्कृत की ओर ध्यान नहीं दिया। हमारा निश्चित मत है कि जब तक संस्कृतकी रक्षा न की जायगी तब तक भारतीय संस्कृतिका संरक्षण हो नहीं सकेगा। संस्कृतका आज उत्तरोत्तर ह्रास हो रहा है, संस्कृतके विद्यार्थियोंकी संख्या दिन पर दिन न्यून होती जा रही है। संस्कृतके सामान्य विद्यार्थियोंकी जब यह दशा है तो विद्वानोंकी तो बात ही क्या! संस्कृतके पुराने प्रकाण्ड विद्वान् ज्यों-ज्यों उठते जा रहे हैं उनका स्थान लेने वाले नये विद्वान् कहीं नहीं दिखाई देते। यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। कांग्रेस सरकारकी स्थापनाके पश्चात् तो संस्कृतकी अवस्था और भी दयनीय हो गई है। धनिक

चरित्ररक्षा और धर्मसाधन

अर्थात्

चरित्रवान् के लिये धर्मपालन स्वाभाविक है

[ले०—कविशिरोमणि भट्ट श्रीमथुरानाथजी शास्त्री साहित्याचार्य]

[प्रस्तुत लेखमें विद्वान् लेखकने चरित्ररक्षा पर, जिसे धर्मशास्त्रोंनेही संसारके सामने उपस्थित किया है, शास्त्रीय और वैज्ञानिक दोनों प्रकारोंसे विचार किया गया है और जो लोग धर्मके नामसे ही घबड़ाते हैं उन्हें धर्मका महत्त्व समझाया गया है। आशा है यह विद्वत्तापूर्ण लेख पाठकोंको रुचिकर होगा। —सं०]

धर्मके विषय पर लोकरुचिको लाना वास्तवमें आजकल एक कठिन समस्या है। क्या राजनीति, क्या साहित्य, क्या समाज, क्या शिक्षा-प्रणाली सब ही स्थानों पर धर्मके नामसे लोग भागते हैं। धर्मको विवादका मानों एक अड्डा समझ रक्खा है। सार्वजनिक सभामें जहां कोई धर्मका विषय आरम्भ करने लगता है तो प्रबन्धकर्त्ता गुप्त प्रार्थना करवाते हैं कि कृपया विवादका विषय न छेड़िये। जिस भारतमें क्या शिक्षित और क्या अशिक्षित, सबके लिए धर्म ही एक विवादका सुलझाने वाला विश्वासपात्र निर्णायक माना जाता था, साधारण मनुष्य भी 'धर्मसे कह दीजिये' कह कर विवादको समाप्त कर देना चाहते थे, धर्म पर आते ही सम्पूर्ण विवाद समाप्त हो जाता था, आज वही धर्म विवादका कारण माना जा रहा है, क्या यह कम आश्चर्यकी बात है ?

प्राचीन धार्मिक इस परिस्थितिको चाहे युग-धर्म कह कर संतोष कर लेना चाहते हों, किन्तु अप्रिय भी सत्य बात निवेदन करनी ही पड़ेगी। युगके साथ-साथ हम लोग भी तो बहते जा रहे हैं। अपने कर्त्तव्य पर कहिये कितने डटे हैं ? जिन धार्मिकोंका धर्मप्रचार कर्त्तव्य है वह भी तो निरस्त होकर बैठे हैं। वह स्वयं केवल जान ही नहीं रहे हैं, कह भी रहे हैं कि 'आजकल चारों ओरसे धर्म हटता जा रहा है।' फिर बिचारे साधारण लोग धर्मसे परिचित हों तो कैसे हों ? पहले धर्म पढ़ाया जाता था, अब पढ़ाईमें वह विषय ही नहीं। पहले प्रत्येक समाजमें उत्सवों पर धार्मिक सभाएं होती थीं, जिनमें धर्मके तत्त्व चारों ओर फैलाये जाते थे, अब वह नहीं। ध्वंसावशेष चाहे भले ही हो। प्रतिदिन स्थान-स्थान पर पौराणिक कथायें होती थीं, जिनके द्वारा शिक्षित अशिक्षित सभी धर्मके अभिमुख होते रहते थे, आज यह सब कहां ? फिर भला धर्मकी चर्चा होती भी कैसे ?

ऐसी दशामें — शिक्षाके क्षेत्रमें नवीन पनपने वालोंके सामने जब धर्मका विषय कभी आया ही नहीं तब वह उससे परिचित ही कैसे होंगे। उसमें दृढ़ अनुरागी होनेकी बात तो दूर रही। फिर धर्मका विषय भी साधारण नहीं। चौका-चूल्हा, पाठ-पूजा, तिलकछापा, केवल इन्ही पर तो धर्म समाप्त नहीं हो जाता, जैसा कि बहुतसे समझते हैं। धर्म जैसे हमारा 'सर्वस्व' और 'जीवनाधारक' (जिसके बिना किसी पदार्थ की सत्ता नहीं) है वैसे ही गहन भी है। उसे झट ही समझ लेना सबके लिए सरल नहीं। हमारी दृष्टिमें जो बड़ेसे बड़े सिद्ध हैं वह भी कहते हैं 'धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्'

वर्गकी ओरसे जो पाठशालाएं चलती थीं वे भी प्रायः बन्द हो गई हैं और हो रहीं हैं। चारों ओरसे संस्कृतका भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होता है। और यदि संस्कृत नष्ट हो गई तो भारतीय संस्कृति भी समाप्त हो जायगी। इसलिए भारतीय संस्कृतिकी रक्षाके इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह संस्कृतके प्रचारके लिए कटिबद्ध हो जाय।

———

(धर्मका तत्व बड़ा छुपा है)। भीष्मपितामह जो ज्ञानके जहाज गिने जाते हैं, वह भी किसी किसी धार्मिक प्रसंगमें चुप हो जाते हैं।

महाराज युधिष्ठिर जिस समय जुएमें सब कुछ खो चुके, यहां तक कि पहले अपने आपको और फिर महारानी द्रौपदीको भी दाव पर लगाकर हार चुके, उस समय दुःशासन एकवस्त्रा द्रौपदीको बलात् राजसभामें खींच कर लाता है। द्रौपदी सब सभासदोंकी दृष्टि धर्मकी ओर खींचती है। भीष्मपितामहके आगे वह एक बड़ा धार्मिक प्रश्न उपस्थित करती है कि 'जब युधिष्ठिर पहले अपनेको हार चुके थे तो मुझ पर उनका अधिकार ही क्या रह गया था, जो मुझे दाव पर लगाते ? फिर मुझे कौरवोंने क्योंकर जीता ? कहिए, द्रौपदीकी यह युक्ति साधारण है ? जब युधिष्ठिर अपने आपको हार चुके तो द्रौपदी पर वास्तवमें उनका क्या अधिकार था ? किन्तु भीष्मपितामह इस पर सोचते हैं कि सनातनधर्मके नियमानुसार पुरुषका और सब परसे अधिकार हट सकता है किन्तु जिसे 'अर्धाङ्गिनी' मानते हैं, क्या उस पत्नि परसे भी युधिष्ठिरका अधिकार चला गया ? अतएव यह विषय बहुत कुछ सोचकर सुलझाने योग्य है। इसीलिए ज्ञानके समुद्र भीष्मपितामह कुछ कौरवोंके अत्याचारकी लज्जासे और कुछ विचारमग्नतासे नीची गर्दन किये हुए ही आज्ञा करते हैं कि — 'बेटी ! यह विषय बड़ा गम्भीर है, इस पर मैं अभी कुछ निर्णय नहीं दे सकता।'

धर्मज्ञ भीष्म जब धर्मके विषयको इतना गहरा समझते हैं, तब किसी ओरसे भी धर्मकी शिक्षा नहीं पाये हुए होने पर भी अपनेको सर्वज्ञ मानने वाले महोदयोंकी समझमें वह हमारा भारतीय धर्म झटपट कैसे आजायगा?

धर्म शब्दका अर्थ

प्रथम तो 'धर्म' शब्दके अर्थ ही पर विचारसमुद्र उमड़ उठता है, क्योंकि धर्म शब्द पर बहुतसे अर्थोंका आधिपत्य है। हमारे शास्त्रोंमें ही धर्म शब्दको बहुतसे अर्थोंमें बरता है। कुछ नीचे दिखाता हूं —

'त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोप अदाभ्यः। अतो-धर्माणि धारयन्' (जो विष्णु रक्षक है, जिन्हें कोई दबा नहीं सकता, वह धर्म समूहोंको धारण करते हुए तीन पैंड चले)। यहां प्रकरणसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि धर्म शब्दसे विश्वके सनातन नियम समूह से प्रयोजन है।

महर्षि जैमिनि (पूर्व मीमांसामें) कहते हैं — 'प्रेरणालक्षणोऽर्थो धर्मः'। आचार्य (वेद ?) के द्वारा प्रेरित यागादि कर्मानुष्ठान धर्म है)। अर्थात् धर्मपदसे वेदोक्त कर्मकाण्डको ही मीमांसा वाले स्वीकार करते हैं।

महर्षि कणादके वैशेषिक दर्शनमें दर्शन करते हैं कि — 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'। इसके दो प्रकार से अर्थ हो सकते हैं। एकान्त व ज्ञान द्वारा मुक्ति लाभका जो हेतु है वही धर्म है' यह। दूसरा 'जो सुख और मोक्षका साधन है वही धर्म है, यह। यहां सुखपदसे लौकिक सुख नहीं लिया गया है, किन्तु उच्चतम आध्यात्मिक आनन्दसे ही तात्पर्य है। जो कुछ हो, दोनों ही व्याख्यानों से स्पष्ट प्रतीत हो जाता है कि यहां धर्म शब्दसे जो कुछ लिया जाता है, वह कर्मकांडसे भिन्न है।

गीताके तृतीय अध्यायमें भगवान्की उक्ति है — 'श्रेयान् स्वधर्मोविगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्' यहां धर्म शब्दसे भिन्न ब्राह्मणादिवर्णोंके अलग-अलग कर्त्तव्योंसे तात्पर्य है। जैसे ब्राह्मणका धर्म स्वाध्यायादि, क्षत्रियका धर्म प्रजापालनादि।

महाभारतमें कहा है — 'अहिंसालक्षणो धर्मो हिंसा चाधर्मलक्षणा' (किसीके प्रति हिंसा न करना यही धर्मका लक्षण है। हिंसा करना यह अधर्मका चिन्ह है।)

कहीं धर्म शब्दसे धर्मप्रतिपादक शास्त्र भी लिए जाते हैं, जैसे —

'श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वाचाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

(धर्मके सर्वस्वको सुनिये और सुनकर निश्चय कीजिये — अपनेको जो बुरी बातें मालूम हों, वे दूसरों के साथ भी न करना चाहिए) यहां धर्मप्रतिपादक शास्त्रीय वचनोंसे ही असली तात्पर्य है।

श्रीमद्भागवतमें कहा है — 'वेदप्रणीतो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः' (वेदोंके द्वारा जो कुछ कहा गया है वही धर्म है, उसके विपरीत अधर्म)।

इसीको स्पष्ट करते हुए दूसरे समझाते हैं —

विहितक्रियया साध्यो धर्मःपुंसां गुणो मतः।
प्रतिसिद्धक्रियासाध्यः सगुणोऽधर्म उच्यते ॥'

(चाहे कुछ गुणकी बातें हों, किन्तु वे वेदविहित क्रियाके द्वारा की गयी हों तो धर्म कहलाती हैं और यदि निषिद्ध क्रियाओंके द्वारा सिद्ध हुई हों तो उन्हें अधर्म कहा जायगा)।

कई लौकिक व्यवहारोंमें भी 'धर्म' शब्दका प्रयोग अनादि कालसे आता है, वह भी नहीं छोड़ा जा सकता। जैसे कर्त्तव्यके अर्थमें धर्म शब्दका प्रयोग आता है — पुत्रधर्म, स्त्रीधर्म। गुणके अर्थमें भी धर्म शब्दका प्रयोग होता है — जैसे 'शैत्यं जलधर्मः' (शीतलता जलका धर्म है)। मनोवृत्तियों पर भी धर्म शब्द लागू होता है। जैसे — दया धर्म। आचार अर्थको हृदयमें रख कर भी हम धर्म शब्दका व्यवहार करते हैं। जैसे—'विधर्मी'। यहां आचार रहित अथवा शास्त्रविहित आचारोंसे विरुद्ध आचार वाला इस अर्थसे तात्पर्य है।)

श्रीमान् मनुने धर्मके दश लक्षण बताये हैं —

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

प्रामाणिक टीकाकार कुलूक भट्टके अनुसार इसका अर्थ यह है—

सन्तोष धृति (धैर्य) है। क्षमा का अर्थ है दूसरेके अपकार करने पर भी उसका अपकार न करना।। विकारके कारण सामने उपस्थित रहने पर भी मनका विकृत न होना दम है, क्योंकि 'मनसो दमनं दमः' यह सनन्दका वचन है। गोविन्दराजके मतमें — सर्दी-गर्मी, सुख-दुख आदि द्वन्द्वोंका सहन करना दम है। विद्या धन आदिके मदका न होना यही दम है, मेधातिथि का मत है—अन्यायसे परधनादिका ग्रहण न करना अस्तेय है। शास्त्रके अनुसार शरीरकी शुद्धि शौच कहलाता है। अपने-अपने भोग्य विषयोंसे नेत्र, कर्ण आदिका रोकना इन्द्रियनिग्रह है। शास्त्रादिके तत्वको समझना धी है। आत्मज्ञान विद्या कहलाता है, ('कर्माध्यात्मज्ञानेन धीविद्ययोर्भेदः' इति मेधातिथिः)। यथार्थ बोलना सत्य है। क्रोधका कारण रहने पर भी क्रोध न होना अक्रोध है। यही दशविध धर्मका स्वरूप है।

अर्थात् मनुके मतानुसार 'धार्मिक' कौन है? जिनके मनमें संतोष है, दूसरेकी ओरसे बुराई होती रहने पर भी जो उसके उत्तरमें दूसरेकी बुराई कभी नहीं करते, विकारका पर्याप्त अवसर रहने पर भी जिनके चित्त पर विकार नहीं होता, जो अन्यायसे कभी दूसरेका धन नहीं चाहते, जिनका देह शुद्ध है, जो इच्छामात्रसे अपनी इन्द्रियोंको विषयोंसे हटा सकते हैं, जो शास्त्रोंका अभ्यास करते हैं, आत्मज्ञानसम्पन्न हैं, और क्रोध शून्य हैं (वही धार्मिक हैं)।

अब शास्त्रकी बात जाने दीजिये। ऊपर कहे गुण वाले पुरुषको व्यवहारकी दृष्टिसे भी आप 'चरित्रवान्' कहते हैं कि नहीं? फिर कहिये सर्वाङ्गसुन्दर और सर्व-प्रशंसित चरित्रके लिए मनुके बताये धर्मोंका पालन कितना आवश्यक हो जाता है? ऊपर कहे गुणोंमेंसे किसीकी न्यूनता और किसी किसी गुणका पूर्णतया विकास यह चाहे चरित्रवान् पुरुषोंमें देखा जाता हो, किन्तु सरसरी तौर पर हम कह सकते हैं कि मनुवर्णित धर्मोंका साधन और उज्ज्वल चरित्रके लिये यत्न, यह दोनों एक बात है।

चरित्रके मूल कारण

क्या हैं, यह नीचे दिखाता हूं। इनमेंसे पहला है—

देहका सङ्गठन

देह और उसमें रहने वाला 'आत्मा' इन दोनोंको मिलाकर 'मनुष्य' कहा जाता है। आत्मारामसे रहित देह और देहरहित आत्मा इन दोनोंको ही हम मनुष्य नहीं कह सकते। आत्मा यद्यपि चिदानन्दमय है, ब्रह्मका ही एक स्फुलिङ्ग (अवयव या प्रकाश) है, किन्तु देहकी सहायता बिना इसके काम नहीं चलते। इस ही लिये ज्ञानस्वरूप होने पर भी आत्माको देहके निकट आत्म-समर्पण करना पड़ता है। मूल बात यह एक ही है किन्तु इसकी व्याख्यामें हमारे शास्त्र और पश्चिमी विद्वानोंका प्रकार भेद है।

पश्चिमी पण्डित कहते हैं कि शारीरिक अवस्थाके ऊपर ही अनेक सद्‌गुण निर्भर हैं। दिमाग, हृदय, यकृत, पाकाशय, स्नायु, रुधिर और मांसपेशी आदिकी क्रियाओंमें जैसे-जैसे तारतम्य होता है वैसे-वैसे ही अलग व्यक्तियोंमें चरित्र अलग-अलग होते हैं। स्वस्थ और स्वाभविक देहधारी पुरुषकी अपेक्षा अस्वस्थ (रोगी), अस्वाभाविक देह—विशिष्ट मनुष्यका चरित्र भिन्न होगा, इसमें किसको संदेह है? किन्तु जो सभीकी दृष्टिमें स्वस्थ समझे जाते हैं उनमें भी एकका चरित्र दूसरेसे नहीं मिलता, इसमें भी दैहिक संघटन कारण है। यह जल्दीसे समझनेमें नहीं आ सकता, इसलिये इसका कुछ विस्तार करना पड़ेगा।

जो स्वस्थ हैं अर्थात् जिनका रक्त शुद्ध है, पाचन-शक्ति (हाजमा) जिनकी तेज है, दिमाग ठंडा है, अङ्ग प्रत्यङ्गोंकी क्रिया जिनकी बेरोक टोक चल रही है, वे प्रसन्नचित्त, उत्साही, सब कामोंमें आशा रखने वाले, आलस्य रहित, परोपकारी और क्रोधशून्य देखे जाते हैं। इसके विपरीत जिनकी पाकस्थली दुर्बल है, जिगरकी क्रिया बड़ी मन्दी है, उनका रक्त भी दूषित होगा, दिमागका पारा भी प्रायः चढ़ा रहता है। इसी लिये वे सुनिद्रासे वञ्चित और चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। ऐसे पुरुष भीतरी रोगकी यन्त्रणासे कष्ट पाया करते हैं। अपने शरीर संचालनमें भी उनकी अरुचि रहती है। अतएव धीरे-धीरे वह दूसरोंको छोड़कर अपने ही कार्योंमें अधिकतर लगे रहते हैं। उनकी 'आपबीती' को नहीं जानते हुए हम उन्हें आलसी, अनुत्साही और स्वार्थपर कहने लगते हैं, चरित्रके ऊपर देहका यहां तक प्रभाव है कि जो सगे भाई हैं, एक माताके दूधसे पले हैं, उसमें भी आपसका स्वभाव नहीं मिलता। हमें यह बात देखकर आश्चर्य होता है, किन्तु दोनोंके देहका वैज्ञानिक रीतिसे परीक्षण करने पर यह आश्चर्य बहुत कुछ न्यून हो सकता है।

कितने ही गुण अथवा दोष मनुष्यमें बाल्यकालसे ही प्रतीत होने लगते हैं। भारतीय शास्त्रकार इसका क्या कारण मानते हैं, यह आगे कहा जायगा। किन्तु पश्चिमी विद्वानोंके मतमें दैहिक संघटन भी एक इसका कारण है। वह ऐसे-ऐसे पुरुषोंका दृष्टान्त देते हैं जो बालकपनसे स्वाभाविक उत्तम थे, या दुष्ट थे। उसका उल्लेख करनेसे लेखमें विस्तार हो जायगा किन्तु पश्चिमी वैज्ञानिक यहां भी दैहिक संघटनको ही कारण मानते हैं।

वंशका प्रभाव

चरित्रका दूसरा कारण है वंश। संतान माता-पिता के गुण दोषोंका अधिकारी होता है, यह सत्य है, प्रत्यक्ष देखा भी जाता है। कई स्थानों पर देखा गया है कि माता-पिता, अथवा उनके भी पिता (नाना और दादा) के चरित्रका प्रभाव किसी-किसी व्यक्तिमें नहीं पाया जाता। इससे वंशप्रभाव नियमको झूठा नहीं समझना होगा। जिनने इस तत्वका विशेषरूपसे अन्वेषण किया है उनका कहना है कि एक-एक दोष अथवा गुणके मूलकारणके अन्वेषणमें शाखा-प्रशाखा रूपसे बहुत दूरतक अनुसंधान करना पड़ता है। कहीं कहीं तो कई पीढ़ीकी खोज करने पर कई कई गुण दोषोंकी समस्या हल होती है। यहां भी पाश्चात्य विद्वान् कई एक ऐसे ऐसे खानदानोंका हवाला देते हैं जिनमें कई पीढ़ियों तक एक एक गुण अथवा दोष पाया गया है। उनका कहना यह है कि चरित्र-संबंधी गुण अथवा दोषों पर दैहिक संघटन और वंशका प्रभाव प्रधानतया पड़ता है।

भगवद्‌गीताका मत

पश्चिम देशीय पण्डितोंके मतमें जिसको देह संघटन और वंशका प्रभाव कहा गया है, आर्यशास्त्र-कारोंके मत से उसे 'प्रकृति' कहना चाहिए, अर्थात् प्रकृति है पूर्वजन्ममें अर्जित धर्म अथवा अधर्मका ऐसा दृढ संस्कार जो पूर्व जन्ममें प्रकट न होकर इस जन्ममें अभिव्यक्त हुआ है। गीताके तृतीय अध्यायमें अर्जुनके प्रति भगवान्‌की उक्ति है—

> 'सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
> प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति॥'

"ज्ञानवान् भी पुरुष अपनी 'प्रकृति'के अनुरूप ही काम करता है; क्योंकि संपूर्ण भूतमात्र 'प्रकृति' के अधीन हैं। वह खिंचकर 'प्रकृति'की ओर आ जाते हैं। इसके प्रभावको उलङ्घन करनेकी किसीकी शक्ति नहीं। फिर भला इन्द्रिय-निग्रहसे क्या होता है?"

अठारहवें अध्यायमें फिर भगवान् आज्ञा करते हैं—

'यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैव व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति॥'

"हे अर्जुन! अहंकारके वशीभूत होकर तुम अपने मन में यह निश्चित करते हो कि भाई बन्धुओंके इस युद्ध में मैं नहीं लड़ूंगा, किन्तु आगे चलकर देखना, तुम्हारा यह संकल्प बिलकुल मिथ्या सिद्ध होगा। 'प्रकृति' ही तुझे इस संग्रामभूमिमें उतारेगी"।

भगवान् शङ्कराचार्यने इन श्लोकोंके भाष्यमें 'प्रकृति' शब्दके अर्थ पर लिखा है —"वर्तमान जन्मादौ अभिव्यक्तः पूर्वकृतधर्माधर्मादिसंस्कारः" (वर्तमान जन्म अथवा इससे आगेके जन्मोंमें अभिव्यक्त होने वाला पहले जन्म का संचित धर्म अथवा अधर्मका संस्कार)।

एक स्थान पर 'प्रकृति' शब्दका अर्थ 'क्षेत्रस्वभाव' भी लिखा है। इसका अर्थ है कि 'ऐसा स्वभाव जो शरीरके साथ दृढ़ संबद्ध हो' जब तक शरीर रहे तब तक उससे विमुक्ति न हो। यहां पश्चिमी पण्डित कह सकते हैं कि 'क्षेत्रस्वभाव' कहनेसे दैहिक संघटन और वंशके प्रभावको अनुलङ्घनीय आर्योंने भी मान ही लिया है।

चरित्रकी उन्नति वा धर्मसाधन

यहां यह संदेह हो सकता है कि जब 'क्षेत्रस्वभाव' या वंशका प्रभाव इतना प्रबल है कि इससे निस्तार नहीं, तब फिर चरित्रकी उन्नति या पूर्वोक्त धर्मोंके साधनमें यत्न क्यों किया जाय? क्योंकि पूर्व संस्कारोंके कारण चरित्रकी उन्नति तो हो नहीं सकेगी, फिर व्यर्थ परिश्रम क्यों किया जाय। ठीक है, देह-संघटन और वंशका प्रभाव एकदम अनतिक्रमणीय (उलांघने योग्य) न भी हो, तो भी 'दुरतिक्रमणीय' (बड़ी कठिनतासे उलांघने योग्य) अवश्य है। पुराण कथाओंमें आप देखते हैं कि एक-एक तपोनिष्ठ साधक जीवनभर कठोर तपश्चर्या करके भी एक दिन विषयवासनारूप वैरीके हाथ आत्माका समर्पण कर देते हैं। यह भी आप पाते हैं कि—सरलप्राण, सदा ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले साधक लोग व्याकुल चित्त होकर अपने पहले किये हुए अपराधोंके लिए अनुताप पूर्वक आंसू बहाते हुए भी किसी समय थोड़ीसी आत्म-दुर्बलतासे नहीं बच पाते। तब चित्तमें यही होता है कि अपने यत्नके द्वारा चरित्रकी उन्नति या धर्म-साधन भस्ममें आहुतिमात्र है। किन्तु यह बात नहीं। लाख-लाख साधकोंका जीवन-चरित्र हमारे लिए साक्षी है कि एकाग्रता से किया हुआ कोई भी अध्यवसाय (यत्न) कभी निरर्थक नहीं जाता। फिर हमारे यत्नसे हमारे चरित्रकी उन्नति क्यों नहीं होगी। साधनके बलसे वंशका प्रभाव चाहे एकदम निर्मूल न हो तो भी निस्तेज और निर्मल अवश्य हो जाता है। वह साधना होनी चाहिए अपने अधिकार के अनुरूप।

हमारे यहां समाजके नेता बननेका जो दावा करते हैं, बस, उनमें यही बड़ी कमी है कि वह सब लोगोंको एकरूप बनाना चाहते हैं। जिस-जिस समाजने प्रत्येक पुरुषका देह-सङ्गठन और वंशके प्राभावको पैरोंसे ठुकराया है, वहां-वहां ही अनेक अनर्थ खड़े हो गये हैं। सच्चा नेता अथवा गुरु या संचालक वही है जो साधककी प्रकृति को देखकर उसीके अनुसार साधन-मार्ग बतावे। ऐसे नेता नहीं हुए, सो नहीं, उपनिषद् और पुराणोंके उपाख्यानोंसे स्पष्ट हो जायगा कि पहले ऋषि, महर्षि साधककी योग्यताके अनुसार ही साधना-मार्ग स्वीकार करते थे। अस्तु।

प्रसङ्गसे आई हुई और और बातें विस्तारसे समझाई गई हैं, किन्तु आपने देखा होगा कि शास्त्रके अनुसार धर्मसाधनपर आप चाहे अड़ जांय तो भी आजकलकी व्यवहारकी दृष्टिसे भी मनुके बताये हुए धर्मोंका पालन आवश्यक हो जाता है। किसी भी समाजमें उच्छृंखल, हिंसाशील, स्वार्थपरायण पुरुषकी प्रशंसा नहीं। सब जगह नम्र परोपकारी और उदारहृदय पुरुषकी प्रशंसा है। प्रत्येक समाज, चाहे वह अपनेको पूर्वी समझे या पश्चिमी, सब जगह चरित्रवान् पुरुषका आदर्श लिया है। ऐसी दशामें यदि मनु-आदि शास्त्रकारोंने हमें वह नियम समझाये हों जिनके पालनसे मनुष्य चरित्रवान् बनता है तो क्या हमें उनसे मुंह मोड़ना चाहिए? धर्मके नाममात्र से ही मत घबरा जाइये। जिन नियमोंके पालनसे हमारी सत्ता स्थिर रह सकती है उन्हींके लिए आर्यशास्त्रकारों का जोर है। शास्त्रकी न सही, युक्तियुक्त बात मानना तो सभी समझदारोंका कर्तव्य है।

———

एक आदर्श पतिव्रताकी कहानी

सती साध्वी उपकोशा

[श्री पं० जयदेवजी शर्मा विद्यालङ्कार मीमांसातीर्थ वेदभाष्यकार]

'उपकोशा' पाणिनिके समयकी एक पतिव्रता स्त्री थी। यह कात्यायन वररुचि जिसने पाणिनिके व्याकरण पर वार्त्तिक बनाई हैं, उसकी धर्मपत्नी थी। वररुचि और पाणिनि पाटलिपुत्रमें दोनों वर्षाचार्यके शिष्य थे। पाणिनिको वर्षाचार्यसे संतोष न होनेके कारण वर्षाचार्य को छोड़ कर हिमालयमें तपसे विद्याभ्यासके लिए चले गये थे। वहांसे शिवसे व्याकरणका ज्ञान प्राप्त करके पुनः वर्षाचार्यके शिष्य वररुचिको परास्त किया था। प्रतिस्पर्धा में वररुचिने भी हिमालयमें तपसे शिवोक्त व्याकरण प्राप्त किया, शिव गुरुकी आज्ञासे पाणिनीय व्याकणको वार्त्तिकांश लगा कर पूर्ण किया।

पण्डित वररुचि श्रुतधर थे। वे एक बार ही सुन कर शास्त्र कंठ कर लेते थे। इनकी बालकपनकी चमत्कारवती बुद्धिकी कथा तो पाठकोंको फिर किसी समय सुनायेंगे। परन्तु उनकी धर्मपत्नी उपकोशाकी कथा हमारे इस लेखका लक्ष्य है। वर्षाचार्यसे शास्त्राध्ययन करके वररुचिने वर्षाचार्यके छोटे भाई उपवर्षकी कन्या उपकोशासे सहज आकर्षणवश विवाह कर लिया था। उपवर्ष एक सम्पन्न ब्राह्मण थे, फलतः उपकोशाके स्नेहसे उपवर्षने वररुचिका गृह भी उत्तम रीतिसे बसा दिया था। पंडित वररुचि पंडित होकर भी पर्याप्त प्रतिष्ठासे पाटलिपुत्रमें ही रहने लगे थे। परन्तु पाणिनिसे पराजित होकर अपमानवश वे अपनी समस्त विद्या भूल गये थे, उन्होंने पुनः विद्याभ्यासार्थ हिमालयमें जाकर तपस्या पूर्वक विद्याध्ययन करनेका निश्चय कर लिया था। उन्होंने पर्याप्त धन नगरके सेठ हिरण्यगुप्तके यहां धर कर एक दिन वे हिमालयको प्रस्थान कर गये और घर पर केवल उपकोशा ही अपने चरित्रकी रक्षा करती हुई नियम धर्मसे जीवन व्यतीत करने लगी।

उपकोशा गुणोंमें और रूपमें भी मनोहर थीं। वह प्रतिदिन नित्य नियमसे गङ्गास्नान करने जाती थी। वररुचिके चले जानेकी बात कानोंकान अनेक निकृष्ट चित्त वालोंको भी पता लग गई। वे उपकोशाको अपनी दुर्वासनाओंका शिकार करनेकी घातमें रहने लगे। वे अपने दुष्ट मनोरथोंके आवेगमें शीलवती उपकोशाकी दुष्टदमनी प्रतिभा और चरित्र बलसे सर्वथा अनभिज्ञ थे। उन्होंने अपने चित्तमें उपकोशाको अपने चंगुलमें फंसानेका विकट निश्चय कर लिया था।

एक बार वसन्त कालमें प्रायः जब लोगोंको होलीका उन्माद चढ़ने लगता है, तभी राजपुरोहितने गंगा स्नानसे आती हुई उपकोशा पर कुदृष्टि की, उसी अवसर पर नगर कोतवाल और राजाके महामन्त्री कुमार सचिवने भी दुर्दृष्टि की। उसी समय तीनोंने चाहा कि गंगा स्नानसे लौटते हुए ही उपकोशा पर जाल डालना चाहिए। उपकोशा अब बालिका न थी, वह संसारके भले-बुरे मार्ग पहचानती थी, वह भी विदुषी और प्रतिभावती थी। वह भारतकी उत्तम शिक्षित ललनाओंमें एक थी। उसने भी अपना एक कर्त्तव्य पथ निश्चित कर लिया था। वह देहमें अबला थी, परन्तु बुद्धि और प्रतिभाके बलसे अपने चरित्रकी भली प्रकार रक्षा करनेमें स्वयं समर्थ थी। वह अपने चरित्र दुर्ग पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं को अपनी कैदमें लेकर अनेकोंको राजदंड दिलाना भी जानती थी। परन्तु दुष्ट लोग अपनी कुचालोंसे कब मानने वाले थे। वे उसे केवल अबला ब्राह्मण कन्या समझते थे।

एक दिन वह सायंकालके समय गंगा स्नानसे कुछ विलम्बसे लौट रही थी। मार्गमें महामान्य कुमार सचिवने उपकोशाको रोक लिया और अपना प्रणय दिखाने लगा। उपकोशा अकेली थी, कुछ कर न सकती थी, बोली:— 'सचिव! आप चिन्ता न कीजिये, आप जैसा विचारते

हैं, मैं भी ऐसा ही विचारती हूं। मैं उत्तम कुलकी कन्या हूं। मेरे पतिदेव प्रवासमें गये हैं। मैं सहसा कोई काम नहीं करती। यदि कोई देख लेगा तो मेरी और आपकी बदनामी होगी। और आपके साथ मेरी भी दुर्दशा होगी।

'तब फिर' कुमार सचिवने पूछा।

'इसलिए ऐसा अवसर खोजिये, जब लोगोंकी दृष्टि हम पर न पड़े' उपकोशाने गम्भीरता से कहा।

'ऐसा समय कब आवेगा कहो देवी?' कुमारने धीरेसे कहा। 'सचिव! तुम जानते हो मदनोत्सवके दिनमें समस्त पुरवासी अपने नाच रंगमें मस्त रहते हैं। वह रात्रि ही ठीक है। आप पहले ही पहरमें पधारिये। मैं आपकी गृह द्वार पर प्रतीक्षा करूंगी।

उपकोशाके ऐसे सांत्वना भरे वचन सुन कर कामी कुमार सचिवने धन्य जाना और उपकोशाको जाने दिया। वह कुछ आगे बढ़ी थी, दैवयोगसे मार्गमें राजपुरोहितने उपकोशाको रोक लिया। उसने भी अपना निकृष्ट मनोरथ उसके सामने प्रस्तुत किया। उपकोशाने अपनी कुलीनता और दोनोंकी बदनामीकी बात कह कर उसे भी मदनोत्सवकी रात्रिके द्वितीय प्रहर अपने घर आनेकी बात कही, वह भी इस प्रलोभनमें उपकोशाकी बात मान गया। उपकोशा आगे बढ़ी। कुछ ही मार्गकी ओर चली थी कि नगरके कोतवाल दंडनायकने उपकोशाको रोका। उपकोशाने अपनी कुलीनता और दोनोंकी बदनामीको दिखा कर पूर्ववत् उसे भी समझाया और उसे भी मदनोत्सवकी रातके तीसरे पहर अपने घर पर निमन्त्रित कर लिया। उसने भी कामवश हो मान लिया और जाने दिया। ज्यों-त्यों करके उपकोशाने उस दिन विलम्बसे लौटनेकी संकटकी घड़ी पार की और घर पर आ गई। सोचने लगी कि आगे उन तीनों कामी कुक्कुरोंको किस प्रकारके दंडसे दंडित किया जाये।

उपकोशा कांपती हुई मार्गकी समस्त घटनाओंको बार-बार सोचती थी। आगे भी क्या करना है, इसकी योजना उसके उपजाऊ मस्तिष्कने बना ली थी। उसने अपने घरकी कुछ नौकरानियोंको बुलाया और गम्भीरतासे घरके कामकाज करनेको कहा। अनेक प्रकारके संकल्प-विकल्पोंमें रात बीत गई। उसने उस रात्रि भोजन नहीं किया। अपने पतिके विद्याभ्यासकी सफलताकी आशाओं में उसके चित्तने बड़ा धैर्य धारण किया। अगले दिन ही प्रातः एक दासीको सेठ हिरण्यगुप्तके पास भेजा कि कुछ धन ले आओ। सेठने स्वयं ही घर पर आकर उपकोशासे एकान्तमें अपने चितका खोटा मनोरथ प्रस्तुत करनेकी चेष्टा की, बोला—"देवी! तुम मुझे अपना पात्र बनाओ तो मैं आपके पतिकी धरोहर आपको दूं।"

उपकोशा सुन कर अवाक् रह गयी। कुछ सोचा कि ठीक है, यह बनिया है, मेरे पतिदेवने विश्वास करके इसको धन सौंप दिया था। मेरे सिवाय अन्य कोई साक्षी नहीं है, इस समय यह दुष्ट मुझे अबला जान मेरा शील हरण करना चाहता है। अच्छा, इसको भी ऐसा दण्ड देना चाहिए कि यह जीवन भर याद रखे कि अबलाको सतानेका क्या फल होता है। सब सोचकर आंखे उठाकर बोली—'सेठजी! कोई देखेगा तो आपकी और मेरी अपकीर्ति होगी। मदनोत्सवके दिन सब जनता नाच रंगमें मस्त रहती है। उसी रातको चतुर्थ पहरमें आप घर पधारिये।'

सुनकर सेठजी की बांछे खिल गईं। मनोरथ पूरा हुआ जान धनकी मात्रा भेज दी। बनिया सेठ भी घर चला आया।

उपकोशा अब निश्चल नहीं बैठ सकती थी। वह इन चारोंको सीधा मार्ग दिखाना चाहती थी। चारों दुष्ट भूतोंने एक ही रातमें आना था। उन चारोंकी व्यवस्था उपकोशा को ही करनी थी। उपकोशाकी बुद्धि, प्रतिभा, शील, कुलीनता, आदि सब गुणोंकी परीक्षा उसी दिन थी। चारों परीक्षकोंसे परीक्षा उत्तीर्ण करनी थी। इसके लिये उपकोशाने अपनी योजनाका अध्याय प्रारम्भ किया। अपनी दासियोंको आज्ञा दी कि वे एक कूंडेमें सुगन्धित तेलमें काजल घोंट कर काजली उबटन तैयार करें उसमें केसर कस्तूरीकी गन्ध दें। और चार कपड़े भी उसी काजलमें सान कर उन चारोंके स्वागतके लिये तैयार किये गये। खाती (बढ़ई) को बुला कर एक अच्छी बड़ी पेटी लकड़ीकी बनवाई गई। उसके बाहर मजबूत अर्गला लगाया गया। स्नानगृहमें खूब सुहावने जलसे टब भरवा कर रखे गये।

दासियोंको उन अतिथियोंके स्वागतके लिये सब शिक्षाएं देदी गईं। और मदनोत्सवका दिन भी आ पहुंचा।

प्रथम प्रहरमें महामात्य कुमार सचिव आ उपस्थित हुए। उपकोशाने दासियों द्वारा उसका सत्कार किया। कहलवा भेजा—"जब तक आप स्नान नहीं कर लेंगे तब तक मैं आपका स्पर्श नहीं कर सकती। इसलिये कृपाकर स्नान कर लीजिये।" उस मूढ़ने तुरन्त मान लिया। और दासियोंने तुरन्त स्नानगृहमें उसे लेजा कर उबटना लगाने को दिया। और खूब अच्छे ढंगसे अन्धकारमय गृहमें उसे उसको वही काजल-मिश्रित उबटना मला गया। वस्त्र-आभूषण तो उतार ही लिये थे और वही काजल सना कपड़ा पहना दिया गया था। इतनेमें पहर बीत गया, दूसरे पहर लगते ही, राज-पुरोहितने दरवाजे पर पैर रखा।

दासी बोली—"सचिव! पंडित वररुचिके मित्र राज-पुरोहित आये हैं। किसी आवश्यक कार्यसे ही आये हैं। आपको देखेंगे तो क्या होगा?"

"तो क्या किया जावे?" घबरा कर सचिवने कहा। चेरियोंने धीरे से कहा—"सचिवजी, पास ही बड़ी पेटी है, उसमें घुस जाइये।"

सचिव तुरन्त भाग कर पेटीमें बैठ गये और अर्गला लगा दिया गया। इधर राजपुरोहितका भी बड़े आदरसे स्वागत किया गया। उपकोशाने उनसे भी स्नान करनेके बाद ही मिलनेका आग्रह किया। चेरियोंने उनको भी उसी प्रकार उबटना लगाकर भूत बना दिया, पहर भी बीत गया, इधर कोतवाल साहब आ गये। चेरियोंने कोतवालका भय पुरोहितको बतलाया, पुरोहित कोतवाल का नाम सुनते ही कांपने लगे। लगे पूछने—'अब क्या किया जाय, कहां छिपाया जाय,। चेरियोंने उनको भी उसी सन्दूकमें छिपनेको कहा, पुरोहितजी मान गये। उनको भी उसी पेटीमें बन्द कर दिया गया।

कोतवालकी बहुत अच्छे ढंगसे अगवानी की गई। चेरियोंसे सती साध्वीने कहला दिया—कि बिना स्नान किये आपके साथ स्पर्श नहीं कर सकती। आप विश्वास-पूर्वक भली प्रकार स्नान कर लें। कोतवाल भी अपने भावी मनोरथमें उलझे हुए स्नानके लिये वही वस्त्र पहनकर स्नानगृहमें चले गये। दासियोंने सुगन्धित-काजल-उबटनका लेप लगाना प्रारंभ किया उनको भी अच्छा खासा भूत बना दिया गया। पहर भी बीत गया सेठजीने किवाड़ खटखटाये।

चेरियों ने कहा—"कोतवाल साहेब! नगरके नामी सेठ हिरण्यगुप्त आये हैं। उपकोशाके पतिने बहुत सा धन उनके पास ही जमा किया है, आवश्यक कार्यसे आये हैं। वे आपको देखेंगे तो आपकी क्या मान-मर्यादा रहेगी, आपकी बड़ी अपकीर्त्ति होगी।" कोतवालजी कांपने लगे, बोले—"क्या करूं। कहीं छिप जाऊं तो ठीक है।" चेरियोंने अवसर उचित जान कर उनको वह बड़ा सन्दूक दिखला दिया। कहा—"थोड़ी देरके लिये आप इस में बैठ जाइये। सेठजी कुछ मिनटोंमें बात करके चले जावेंगे, फिर बाहर निकल आना। राजी खुशीसे कोतवाल भी सन्दूकमें बन्द हो गये। इस प्रकार तीनों भूत उस बड़ी पेटीमें काबू आ गये। वे तीनों उस सन्दूकमें एक दूसरेसे सट रहे थे, पर रहस्य खुल जानेके डरसे कोई एक दूसरेसे बोलता नहीं था, चुपचाप उसमें मौनव्रत लिये हुए थे।

सेठके आते ही उपकोशाने दीपक जलवा दिया। और सेठजीको बुलवा लिया। उपकोशाने कहा—"सेठजी आप अच्छा हुआ आ गये, मैं भी प्रतीक्षा ही कर रही थी, कृपा कर आप मेरे पतिका जो धन आपके पास धरोहर है, वह तो अवश्य दे दीजिये।" सेठने देखा घर तो सूना है। अपनी इच्छा पूर्तिमें विघ्न न हो, इसलिये मान लेना ही अच्छा है। बोले—"भद्रे! इसमें क्या सन्देह है, आपके पतिका धन मेरे पास है, और वह मैं आपको अवश्य दूंगा"। उस संदूककी ओर मुंह करके उपकोशा बोली—"हे मेरे गृह देवताओं! सेठ हिरण्यगुप्तकी बात आप सब सुन रहे हैं। इस बातके आप सब साक्षी हैं।" इतना कहकर उपकोशाने दीपक बुझा दिया। और सेठको भी कहा—"सेठजी मैं आपके बिना स्नान किये आपका स्पर्श नहीं कर सकती। आप स्नान कर लीजिये। सेठजी अपने मनोरथमें उलझे हुए थे, तत्काल स्नानके लिये स्नान-गृहमें चले गये। चेरियोंने उनकी भी उसी काजली उबटने से वैसी ही दर्शनीय सूरत बना दी। इधर रात्रिका चौथा

प्रहर भी बीत गया। आंगनमें प्रभातका प्रकाश दीखने लगा। चेरियां बोलीं–"सेठजी, अब दिन हो गया, अब तो आप अपने घर जायें।" सेठ सुनकर चक्करमें पड़ गया। सेठ जाना नहीं चाहता था। चेरियोंने गर्दन पकड़कर सेठको धक्का देकर मकानसे बाहर कर दिया। काजलसे काले भूत बने सेठको मुहल्लेके कुत्तोंने घेर लिया। सेठ भागते २ घर पहुँचे। मारे शर्मके सेठ अपने आपमें गड़े जा रहे थे। वहां भृत्योंकी सहायतासे देहका काजल धो-धाकर स्वच्छ हो कपड़े पहने। बहुत पूछने पर भी सेठने रहस्य न कहा।

सूर्योदयके पश्चात् उपकोशाने कुछ चेरियां साथ लीं और राजदर्बारमें जा उपस्थित हुई।

उस समय पाटलीपुत्रमें महापद्म नन्दका राज्य था। उपकोशाके पति वररुचि और इनके गुरु वर्ष और पिता उपवर्ष राज सभामें आदर प्राप्त थे ही। इसलिये उपकोशा ने बिना किसी संकोचके राजासे निवेदन किया–"राजन्! सेठ हिरण्यगुप्त मेरे पतिके रखे धरोहरको हर लेना चाहता है। वह धन मुझे वापिस दिला दीजिये।" राजाने कहा– 'देवि! क्या कोई साची भी है।' बोली–राजन्! मेरे गृह देवता इसमें साची हैं।' राजाने तुरन्त सिपाही भेजकर सेठ हिरण्यगुप्तको राज दर्बारमें बुलवा लिया। पूछा— 'सेठ! तुम उपकोशाके पतिका धरोहर रखा धन क्यों नहीं देते'?

सेठ बोला— "राजन! इस देवीके पतिका धन मेरे पास तो नहीं है।"

राजाने उपकोशाकी ओर देखकर कहा—'कहो देवी, सेठ क्या कहता है?' उपकोशा बोली—राजन्! मेरे साची हैं मेरे गृह देवता। मेरे पति उन देवताओंको पेटीमें रख कर गये हैं। उनके सामने इस सेठने अपनी वाणीसे मेरे पतिका धरोहर धन स्वीकार किया है। आप आज्ञा दीजिये तो भृत्य लोग मेरे घरसे देवताओंकी पेटीको यहां लेते आवें। राजाने तुरन्त पेटी मंगवाई। थोड़ी ही देरमें दस आदमियोंने भारी पेटी लाकर दरबारमें रख दी।

उपकोशाने पेटीकी ओर मुख करके कहा—'हे देवता जनों! आप सत्य सत्य कहना इस बनियेने क्या कहा था? इसके पश्चात् आप सब लोग अपने स्थानमें पधार जाना। आप सत्य साची न देंगे तो मैं आप सबको राजाके हाथों पकड़वा दूंगी, और पेटी खोल दूंगी। सुनते ही पेटीके तीनों भूत डरे। और भीतरसे ही बोले— 'हां, हमारे सामने ही सेठ हिरण्यगुप्तने उपकोशाके पति का धन देना स्वीकार किया था।' सेठ सुनकर अवाक् रह गया। लाचार होकर धन स्वीकार किया और वापिस दिया।

राजाने उपकोशासे विनय पूर्वक पेटी खोलकर देवता देखनेका आग्रह किया। राजाके आग्रहसे राजसभामें ही पेटीको खोला गया। काजलमें सने तीनों भूत पेटीमें से निकले। उनको पहचाना गया। उनका सब वृत्तान्त सुनकर राजाने तीनोंको देश निर्वासनका दंड दिया। राजसभामें तीनोंको देख बड़ा कौतुक हुआ।

राजाने उपकोशाके सच्चरित्र और बुद्धि, साहससे संतुष्ट होकर कहा — 'तू मेरी बहिन है, मैं प्रसन्नता-पूर्वक राज्यकी ओरसे सम्मानार्थ वैभव प्रदान करता हूं।' कह कर पर्याप्त धन उपहारमें दिया। उपकोशा सम्मान पूर्वक घर लौटी। नगर और जनपद भरमें उपकोशाकी यह अद्‌भुत कथा फैल गयी।

महिलाओंको उपकोशाकी इस धैर्य वृत्ति, बुद्धि और साहससे शिचा प्राप्त करनी चाहिए।

वर्तमान वसन्त

[श्री गिरिराज जी 'मित्र']

कण्ठ रोकि कोकिलाएं मौन गह बैठीं सब,
बुलबुल बिचारी नैन नीर ढरकाती हैं।
मोरनको शोर ना सुनाई देत वाटिका में,
शुकशारिकाकी जोट नजर न आती हैं॥
रटन पपैयाकी घटी है या हवाकूं देख,
'गिरिराज' फाखता भी फाकें मरी जाती हैं।
गाते हैं उलूक गीत, बागड़ बजाते ढोल,
चमगीदड़ोंकी टोली पारटी मनाती हैं॥१॥

ग्रहोंसे भाग्योदय काल

[ले०—श्री ज्यो. आ. पं० मदनगोपालजी शास्त्री]

मैंने अनेक बार निम्न लिखित पद्धतिसे अनुभव किया है, जिसके द्वारा मुझे फल कहनेमें सफलता मिली है, अतः ज्योतिर्विज्ञानके उत्साही विद्यार्थियोंके लिए उस पद्धतिको यहां लिख रहा हूं। यदि वे इसके अनुसार फल कहनेका उपयोग करेंगे तो मुझे आशा है कि उन्हें इसमें अद्भुतताका भान होगा।

जन्मपत्रमें ग्रह अपनी भली बुरी स्थिति एवं बलाबलके अनुसार जिस समय विशेष फल उत्पन्न करते हैं, उस समयको ग्रहोंका उदयकाल कहा जाता है। इस समयमें यदि ग्रहकी स्थिति अच्छी व ग्रह बलवान् हो तो यह समय नाना प्रकारके सुख, अनुकूल उत्कर्ष आदि उन्नति कारक फलदायक होता है। इसके विपरीत यदि ग्रह निर्बल हो तो अपने समयमें अनिष्ट एवं अनेक प्रकारसे कष्ट, प्रतिकूल वातावरण तथा संकटमय दिनों को उत्पन्न करता है।

ग्रहोंका भला बुरा परिणाम कितने समय तक रहता है, उसका मान इस प्रकार है।

ग्रह	रवि	चंद्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
	से	से	से	से	से	से	से	से	से
वर्ष	२४	२५	३२	३५	२२	२८	४२	४८	५४

उदाहरणार्थ—किसी एककी पत्रिकामें मङ्गल सब प्रकारसे बलवान् है, उपरोक्त मानसे उसका भग्योदय २८ वर्षकी आयुसे प्रारम्भ होगा। यदि मंगल निर्बल हो तो इस मङ्गलके समय २८ से ३२ वर्ष पर्यन्त उसे अधिक रूपमें कष्ट व अहितकारी दिन व्यतीत करने होंगे। किन्तु मेरे अनुभवमें यह आया है कि ग्रहोंका उपरोक्त पूरा काल इष्टकारक या अनिष्टकारक नहीं होता, जब तक कि गोचर ग्रहकी भी स्थिति अनुकूल अथवा प्रतिकूल न हो। यदि गोचर ग्रह अनुकूल फल कारक हो और भाग्योदय कारक ग्रह प्रतिकूल फलदायक हो, तो अधिक त्रासदायक समय नहीं जाता। जब तक गोचर ग्रह शुभ फलदायी रहता है, तब तक सम्यक् रूपसे विपरीत फल प्राप्त नहीं होता। उसमें न्यूनता आ जाती है। यदि भाग्योदय कारक और गोचर ग्रह भी अशुभ हों तो फल पूर्ण रूपसे अनिष्टकारक होता है। इस प्रकार भाग्योदय ग्रह और गोचर ग्रहकी समानता असमानताके तारतम्यसे ग्रहोंका भाग्योदय काल निर्णय अधिक निश्चय फलका बोधक होता है।

गोचर मानसे रवि, चन्द्र, मंगल, बुध एक राशिमें एक माससे डेढ़ मासके लगभग रहते हैं, अतः गोचरमें ये ग्रह तात्कालिक फल कहनेमें उपयोगी हैं, किन्तु मुख्यतः गुरु, शनि और राहुकी स्थिति विशेष रूपसे निश्चय करना आवश्यक है, कारण कि गोचरमें इनकी अधिक काल पर्यन्त स्थिति रहती है। जैसे किसी व्यक्ति की पत्रिकामें गुरु निर्बल है, इसका समय १६ से २२ वर्ष पर्यन्त अशुभ कारक रहेगा। किन्तु गोचरमें गुरु १७ वें वर्षमें ५ वां और २१ वें वर्षमें ९ वां तदनुकूल शनि १७ वर्षसे २० वर्ष पर्यन्त ११ वां रहता है तो इसका समय १७ वर्षसे २१ वर्ष तक अशुभ नहीं जायगा, कारण कि अनिष्ट भंग करने वाले गुरु, शनि बलवान् हैं। इस प्रकार प्रत्येक ग्रहका उदय काल निर्णय किया जा सकता है।

भौतिकवादकी प्रधानता ही विश्वशान्तिमें बाधक

[अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराज]

चौरासी लक्ष योनियोंमें भ्रमण करनेके बाद जीव मनुष्य योनि प्राप्त करता है। यह जन्म-मरण-रूपी कारागारसे निकलनेका फाटक है। जीवको जबतक आत्मबोध या परमात्माका साक्षात्कार नहीं हुआ, जबतक ऋतम्भराप्रज्ञा द्वारा उसकी यथार्थ दृष्टि नहीं खुली है; तबतक वह वास्तवमें अन्धा ही है। अन्धा जीव चौरासी लक्ष योनियोंके घेरेमें पड़ गया है। इस घेरेसे बाहर जानेका एक ही फाटक है मनुष्य-योनि; किन्तु इस योनिमें आते ही उसको भोगरूपी लालसा-खुजली पैदा हो जाती है और उसीमें पड़कर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधमें ही मस्त हो जाता है और इसी बीचमें मनुष्य जीवन-रूप मोक्षका फाटक छूट जाता है, वह बाहर नहीं निकल पाता, फिरसे चौरासीके चक्करमें पड़ जाता है।

इसलिए मनुष्यका कर्त्तव्य है, कि वह विषय-भोगकी खुजलीसे बचे। खुजलीको खुजलानेसे सुखका अनुभव होता है; परन्तु खुजलानेसे खुजली बढ़ती ही जाती है। उससे तृप्ति नहीं होती। इसी प्रकार इन्द्रिय-सुखके विषय, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधकी भोग-लालसासे कभी भी तृप्ति नहीं होती। जितना भोगोगे, उतनी ही भोग-लालसा बलवती होगी और इसीमें जीवनका अमूल्य समय नष्ट कर दोगे। हमने कई बार कहा है कि विषयानन्द सीकरानन्द हैं; आनन्दपिपासुके लिये वह जलकण स्वादनके समान है। जिस प्रकार बून्द बून्द जलके आस्वादनसे किसीकी तृषा शान्त नहीं होती, उसी प्रकार विषयानन्दके अनुभवसे मनकी आनन्द-पिपासाकी तृप्ति नहीं हो सकती। यदि अपनी आनन्द-पिपासाको तृप्त करना चाहते हो, तो मनको आनन्दस्वरूप आत्मा या परमात्मामें लगाओ। जब मनको वह आनन्दसागर मिलेगा, तभी वह संतुष्ट होगा और जब तक मन उस आनन्द-सिन्धुमें नहीं रमता, तबतक वह कभी शान्ति-सन्तोषका अनुभव नहीं कर सकता। सदा ही आनन्दकी खोजमें एकके बाद दूसरे विषयोंमें धक्का खाता रहेगा और अशान्त बना रहेगा। सुख-शान्तिकी स्थापनाके लिये लोग बड़ी-बड़ी स्कीमें बनाते हैं, विश्व-शान्तिके लिये बड़ी-बड़ी बातें कही जाती हैं; अपनी-अपनी सूझके अनुसार सभी देश सुझाव पेश करते हैं; परन्तु भौतिक पदार्थोंमें और भौतिकवादी दृष्टिकोणमें न कभी किसीको सुख-शान्ति मिली है और न मिलेगी। भौतिकवादका क्षेत्र ही अशान्तिका क्षेत्र है। इस क्षेत्रमें रहकर यदि कोई सुख-शान्तिका अनुभव करना चाहता है, तो उसे यह समझ लेना चाहिये कि सुख-शान्ति और दुःख एवं अशान्ति—दोनोंका अनुभव सूक्ष्म शरीर अर्थात् मनको होता है। इसलिये मनमें आनन्दस्वरूप परमात्माका स्थान बनाओ, तो मन सदा आनन्द और शान्तिका अनुभव करेगा। मनमें जब संसार घुस जाता है, तभी मन अशान्त रहता है। संसारमें रहो, परन्तु संसारको मनसे बाहर रखो। संसारी पदार्थोंमें भीतरसे राग मत होने दो। तन और धनसे व्यवहार चलाओ और मनसे परमात्माका चिन्तन करो। मनमें परमात्माको रखोगे, तो सदा सुख-शान्तिका अनुभव होगा और जबतक आनन्दस्वरूप परमात्माको मनमें नहीं बैठाया, तबतक सुख-शान्तिकी स्कीमोंसे सुख-शान्ति मिलेगी नहीं। विश्व-शान्ति स्थापनाके लिये व्यग्र राजनीतिज्ञोंको यह निश्चय रखना चाहिये, कि परमात्मवादी अध्यात्मवादी दृष्टिकोण हुए बिना जीवनमें सुख-शांतिका अनुभव नहीं हो सकता। निश्चय है, कि भौतिकवादी दृष्टिकोण ही विश्व-शान्तिमें बाधक है। जब तक जीवनका वर्तमान दृष्टिकोण भौतिकवादसे हटकर अध्यात्मवादमें नहीं जायगा, तबतक विश्व-शांतिकी स्थापनाकी आशा निराशामात्र है।

—★★—

सृष्टिका जन्म और विकास

क्या हम प्रलयके निकट जा रहे हैं? (१)

[लेखकः—श्री कन्हैयालाल 'मत्त']

[कुछ वैज्ञानिक और विचारक कहते हैं कि सृष्टिमें ऐसी प्रतिक्रियाएं हो रही हैं, जो संसारको प्रलय की ओर खींचे लिये जा रही हैं, और पता नहीं ब्रह्मांडकी अज्ञात हलचल किस समय पूरी सृष्टिका संहार कर दे। प्रस्तुत लेख प्रलयकी शंकाके रहस्यको समझनेका एक प्रयत्न है। इसमें सृष्टिके विकाससे लेकर विनाशकी वैज्ञानिक संभावनाओं पर विचार करने का प्रयत्न किया गया है।]

आज विज्ञानके चमत्कारपूर्ण उत्कर्ष और उसकी विध्वंसकारी प्रवृत्तियोंको देख कर यह आशंका प्रकट की जाने लगी है कि अब कुछ ही समयमें प्रलय होने वाली है। अणु-बम, हाईड्रोजन-बम, तथा कास्मिकरे आदि आविष्कार इस धारणाको बल दे रहे हैं और सामान्यतः यह सोचा जा रहा है कि यदि विध्वंसकारी अस्त्रों के निर्माणका यह क्रम अबाध गतिसे चलता रहा तो एक-न-एक दिन प्रलय हो जाना अवश्यम्भावी है। यों तो स्वयं प्रकृतिमें भी सृष्टि और प्रलयकी प्रवृत्तियां सन्निहित है, परन्तु मनुष्य-कृत प्रलयका क्या रूप और विस्तार होगा — यह बात समझ लेनेकी है। यह बात समझ लेनेके लिए हमें सृष्टिके विस्तार और उसकी पोषण शक्तियोंके स्रोतों तथा मनुष्यकी अधिकार सीमाओंका ज्ञान होना भी आवश्यक है।

सृष्टिके आदि स्रोत

सृष्टिके आदि स्रोतोंके विषयमें तो आजके वैज्ञानिकों में पर्याप्त मत-भेद चल रहा है परन्तु विस्तार और दूरियों के विषयमें जिन निष्कर्षों पर पहुंचा जा रहा है उन्हें देख कर सहसा सृष्टिके अनादित्व और अनन्तत्वों का भास होने लगता है — मानों मनुष्यका दुर्बल मस्तिष्क अभी तक उसकी सीमाओंको स्पर्श करनेका साहस न कर सका हो। जिस सृष्टिकी विशालताका निरूपण करते हुए आजके वैज्ञानिक यह कहते हैं कि १ लाख ८७ हजार ०७२ मील प्रति सेकिण्डकी गतिसे चलने वाला प्रकाश स्वाति नक्षत्रसे २०० वर्षमें हम तक पहुँच पाता है, वह नक्षत्र भी हमारी सृष्टिका एक अंग ही है। जो प्रकाश इस पिण्डमें आज आपको दीख रहा है वह अब से तीन चार पीढ़ी पहले ही वहांसे चला था। फिर यहीं तो अन्त नहीं है। किसी किसी नक्षत्रका प्रकाश तो, उसी कल्पनाके अनुसार, उस समय चला हुआ माना जा सकता है जब बुद्ध और ईसाका भी जन्म न हुआ था। क्या इन दूरियोंकी कल्पना पागलपन नहीं जान पड़ती? इन भयंकर दूरियोंको नापनेकी शक्ति रखने वाले मस्तिष्क अथवा किसी गणक-यंत्रके आविष्कारकी बात तो दूर रही, उनको नष्ट कर देनेकी कल्पनाका आविष्कार हो गया। इसमें कोई सन्देह भी नहीं कि निर्माणात्मक शक्तियोंकी अपेक्षा आज विनाशात्मक शक्तियां अधिक जागरूक एवं क्रियाशील होती जा रही हैं और इसीके फलस्वरूप मनुष्यकी दुष्कल्पना सृष्टिके विधायककी अपरिमेय शक्तियोंमें विश्वास खो कर पग पग पर सर्वनाशका स्वप्न देख रही है। सृष्टि अन्ततः सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणुओंके समन्वयका परिणाम ही होता है और इन्हीं परिणामोंके व्यतिक्रम व विकेन्द्रीकरणका अवश्यम्भावी परिणाम प्रलय नहीं हो तो क्या होगा? परन्तु इस काल्पनिक भयका समाधान तब तक नहीं होगा जब तक कि आजके वैज्ञानिकका ज्ञान सत्यकी कसौटी पर न कस लिया जाय। इन तर्कनाओंके समुचित निरूपणके बाद ही किसी तथ्य पर पहुँचा जा सकता है। यदि हम किसी प्रकारकी प्रलयकी आशंकासे अभिभूत हैं तो हमें उस अवश्यम्भावी प्रलयका स्वरूप भी समझ लेना होगा। हमें

यह भी जान लेना होगा कि क्या सृष्टिको गतिशील रखने वाले तत्व समाप्त होते जा रहे हैं ? और यह कि सृष्टि जिन कारणोंसे बनी है उनके मूल-स्रोत क्या हैं ?

सृष्टिका निर्माण अथवा विकास कैसे हुआ — इस विषयमें तो मतभेद है, परन्तु उसके विस्तारके विषयमें इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि उसकी अनुमान सम्मत कक्षा (भ्रमण-मार्ग) अरबों-खरबों, बल्कि पद्मों शंखों मीलों की समझी जाती है और उसमें समाये हुए, हमारे इस सूर्यसे भी लाखों-करोड़ों गुने अनेकानेक महासूर्य हमें अपनी पृथ्वी परसे मटरके दानेसे भी तुच्छ जान पड़ते हैं। जरा सोचिये तो कि इस तुच्छतामें कितनी भयंकर विशालता छिपी हुई है। हमारे इस तुच्छसे सौर मंडलका विस्तार ही हमारी बुद्धिको चकरा देनेके लिये पर्याप्त है। सूर्य और पृथ्वीके बीचकी दूरीका माध्यमिक मान ९ करोड़ २८ लाख ७० हजार मील है और सौर मंडलका नवोदित ग्रह यम (प्लूटो) इससे ४० गुनी दूरी पर स्थित है। हमारी नंगी आंखोंसे मटरके दाने जैसा दीखने वाला एक तारा हमारे सौर मंडलसे किसी अंशमें कम नहीं और परिवार भी संभवतः सौर परिवारसे कहीं अधिक बड़ा हो सकता है। फिर कई कई तारोंके अनेक गुच्छ !

यदि आप किसी जाड़ेकी रातमें स्वच्छाकाश पर दृष्टिपात करें तो आपको एक अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा, देखेंगे कि सारा आकाश एक स्वच्छ नीली चादर-सा तना हुआ है और असंख्यासंख्य तारे गहराईमें तैरते हुए चले जा रहे हैं। तारोंके अतिरिक्त कुछ छोटे बड़े, जाली जैसे श्वेत और झीने, हल्के-पतले, बादलोंके टुकड़ोंसे भी यत्र-तत्र बिखरते हुए दिखाई देते हैं। उन्हें नभस्तूप या नीहारिका (नेबुला) कहते हैं। उनके आकार प्रकार एक दूसरेसे इतने भिन्न होते हैं कि उनके विषयमें कुछ कहा नहीं जा सकता। हां, प्रायः उनमेंसे अधिकतर गोल अंडाकार या चक्राकार होते हैं। ये नीहारिकाएं अनेकानेक तारोंके व्यूह में हैं। इनके मध्यमें जो वाष्प सा दीखता है उसके विषयमें विद्वानों में मतभेद था। परन्तु अब यह स्पष्ट हो गया है कि यह वास्तवमें कुहरा या वाष्प नहीं प्रत्युत अनेकानेक तारोंके गुच्छ हैं जो पास पास स्थित होनेके कारण हमें ऐसे दीखते हैं। ये हमसे और हमारे ज्ञान नक्षत्रोंसे इतने दूर हैं जिसकी कल्पना मनुष्यका लघु-मस्तिष्क कर ही नहीं सकता। रश्मि-विश्लेषक यंत्रोंके द्वारा अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ है कि इनमेंसे कुछ तो अभी तक दहकती हुई भापके रूपमें है। सबसे प्रसिद्ध और बड़ी नीहारिका ओराइन इसी प्रकारके वाष्प-गुच्छोंकी एक और लम्बी-चौड़ी धारा आकाश में देख पड़ती है जिसे दुग्ध-पथ या आकाश गंगा (मिल्की वे) कहते हैं। यह करोड़ों तारोंको अपने दुग्धमय क्रोड़में छिपाये हुए न जाने कहां बही जा रही है ? लोगोंका अनुमान है कि आकाशमें लगभग एक अरब तारे हैं और प्रायः सभी इस स्वर्ग गंगाकी अविरल धारामें बहे चले जा रहे हैं।

सृष्टिकी पौराणिक और वैज्ञानिक धारणा

तो क्या इसके बाहर कोई लोक नहीं है ? क्या इसी गंगाके ओर-छोरको विश्वकी परिसमाप्ति समझी जाय ? यदि नहीं, तो इन कल्पित लोकोत्तरोंकी स्थिति कहां है ? इन सबका विचार करते समय बुद्धि बिगड़ने लगती है। परन्तु इस प्रकारकी कल्पना है अद्भुत ! उसमें काव्यका सा रस है। यों कहिए कि, यह विषय विज्ञानका न होकर तत्वदर्शनका है। विज्ञानकी आंखें तो इन्हीं लोकोंको देखनेमें असमर्थ हैं, लोकोत्तरोंकी कौन कहे ? जिस प्रकार विज्ञान लोकोत्तरोंको देखनेमें असमर्थ है इसी प्रकार लोक और लोकोत्तरोंकी सृष्टि और प्रलयके विषयमें उसकी वाणी मूक है। हां, दर्शनादि शास्त्र इस विषय पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं। वेदों और पुराणोंमें इसका सम्यक विवेचन किया गया है। सृष्टिकी उत्पत्ति और लयके विषयमें अनेक वेद मंत्र पाये जाते हैं। पौराणिक धारणा है कि क्षीर सागरमें शयन करने वाले अनन्त-स्वरूप भगवान्से सृष्टि उत्पन्न हुई है। आजकी पश्चिमी धारणाके अनुसार सृष्टिके मूल स्रोत अनन्त ब्रह्मांड, दुग्ध-पथ, सर्पिल नीहारिका आदि इसीके रूपक जान पड़ते हैं। भगवान्के कान से उत्पन्न दो दानवोंकी टक्कर सम्भव है किन्हीं दो महाविशाल पिण्डोंकी टक्करका रूपक हो, जिसका प्रतिपादन अर्वाचीन घर्षणवादी करने लगे हैं। विज्ञान भी धीरे धीरे किन्तु क्रमशः सत्यकी ओर अग्रसर होता हुआ

पदार्थवादके चश्मेके माध्यमसे जीववादकी ओर खिंचने लगा है, कुछ हठ-धर्मियोंको छोड़कर विज्ञानके लगभग सभी सिद्धान्त क्रमशः उन सत्यताओंकी ओर बढ़ रहे हैं जिनका प्रतिपादन दर्शनादि ग्रंथोंमें मिलता है। सृष्टिकी उत्पत्ति और प्रलयके विषयमें विज्ञानकी अभिनव कल्पना दर्शन-ग्रन्थोंमें प्रतिपादित सिद्धान्तोंसे मेल खाने लगी हैं। दर्शन कहता है कि सृष्टिकी उत्पत्ति अज्ञान व अन्धकारसे हुई हैं, विज्ञान इस विषयमें मौन है। आगे चल कर दोनोंकी कल्पनाएं ताल-मेल खाने लगती हैं। अज्ञान से ज्ञानका प्रकाश (ऋत) फिर सत्य, फिर तम (गर्मी), फिर रात (अन्धकार-मिश्रित तरलता), फिर समुद्रादि (जल), संवत्सर (काल), फिर दिन रात (पिंडों के अक्ष भ्रमण), फिर सूर्य-चन्द्रमादि ठोस पिंड, इत्यादि ...... विज्ञान भी, शब्दोंके हेर-फेरके साथ, इसी कल्पनाका आश्रय लेकर चलता है। वह अपनी सृष्टि-कल्पनाको नीहारिकाओंकी सृष्टिसे आरम्भ करता है। इसके पूर्वकी दशाका उसे ज्ञान नहीं, फिर भी उसकी कल्पनामें मधुरता है। घोर अन्धकारमेंसे प्रकाश-रूप कल्पनातीत आकारकी एक नीहारिकाका जन्म हुआ। उसमें गर्मी और तरलता थी परन्तु उसका पिंड केवल वाष्पमय था। वह सर्पिल (स्पाइरल) थी और चक्र गतिसे थिरक रही थी, काल-क्रमसे उसीसे छिटक कर ये सारे आकाश-पिंड (नक्षत्र, तारे, ग्रहादि, नभस्तूप, आकाश गंगा आदि) बन गये। यह सिद्धान्त नीहारिकावाद (नेबुलर थ्योरी) केनामसे प्रसिद्ध हैं। सम्भव है विश्वमें सबसे पहले केवल एक ही नीहारिका रही हो और फिर उससे सारी सृष्टिकी उत्पत्ति हो, परन्तु इतना निश्चित है कि सृष्टिका विकास क्रमिक गतिसे हुआ है। इन थिरकती हुई नीहारिकाओंसे छिटकते हुए अनेकानेक पिंड काल-क्रमसे सघन और ठोस होते गये और उनमें सभी अपनी २ भिन्न २ अवस्थाओं में अभी पाये जाते हैं। नभ-स्तूपोंके मध्यमें अभी तक कुहरे पर वाष्पके अस्तित्वकी कल्पना की जा रही है, अतः न जाने किस भविष्यमें उनके द्वारा नये नये पिंड धारियों का निर्माण होना संभव है।

नीहारिकावाद

नीहारिकावादकी कल्पना भी कुछ कारणोंसे ग्राह्य न हो सकी। यह कल्पना पिंडोंके अक्ष-भ्रमणकी भिन्न २ कोणीय गतियोंके लिए कोई संतोषजनक समाधान उपस्थित नहीं करती। दूसरे, लोगोंका अनुमान है कि पिघलते हुए द्रव के छल्ले घनीभूत ठोस होकर (शनिके छल्लों कीतरह) छल्लाकार ही बनेगा, न कि ऐसे विशाल अलग अलग पिंड! फलतः कुछ लोगोंने सोचा कि तत्कालीन सूर्यकी किसी बड़े सूर्यसे टक्कर हुई होगी और उस टक्करसे ही भिन्न २ पिंडधारियोंका जन्म हुआ तथा अक्ष-भ्रमण की प्रक्रिया हुई। यह सिद्धान्त घर्षणवाद (टाइडल थ्योरी) के नामसे प्रसिद्ध है। सर नमिक लाकयरका मत है कि ब्रह्मांडके सभी पिंड उल्काओं (मीटिओरस) से बने हैं और उल्काएं पिंडोंके घर्षणसे बनती हैं। ये उल्काएं कहांसे आती हैं — इस विषयमें प्रोफेसर सी०का मत है कि संपूर्ण ब्रह्मांड उल्काओं तथा उल्का-कणोंकी धूलिसे हर समय व्याप्त रहता है। कभी २ इन धूलि कणोंसे ही पिंड बन जाते हैं जो नक्षत्र और तारोंके रूपमें हमें दिखाई पड़ते हैं। इस सिद्धान्त पर भी लोगोंको संदेह होने लगा है, फलतः निकट भविष्यमें ही किसी नूतन विवृत्तिके प्रकाशमें आनेकी संभावना है।

विश्व का सृजन उल्काओंसे हुआ हो अथवा नभस्तूपों से इतना निश्चित है कि मनुष्यको अभी सृष्टिका कुछ भी ज्ञान नहीं है। एक कल्पना दूसरीको काट देती है। कल्पनाएं त्रुटिपूर्ण हों अथवा, यदि दोनों ही शुद्ध हों, या केवल बुद्धिका ही फेर हो। संभव है नभस्तूप वाष्पमय न होकर उल्कामय हो, अथवा उस वाष्पमें ही उल्काके परमाणु विद्यमान हों। दो सूर्यकी टक्करका प्रतिफल भी वही हो सकता है कि जो दो नभस्तूपोंकी टक्करका होगा। सत्य कुछ हो इतना निश्चित है कि नभस्तूप भी अभी तक अपनी भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में पाये जाते हैं, अतः सृष्टि अभी तक निर्माणके पथ पर चली जा रही है। यों तो निर्माण और विनाश दोनों साथ ही साथ चलते हैं परन्तु अद्यतन पिंडोंके अध्ययन द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि अब भी बहुत कुछ निर्माण शेष है। सृष्टिके अभी तो बहुतसे पिंड अपनी बाल्यावस्थामें हैं और उनमेंसे कुछ अपनी आयु समाप्त भी कर चुके हैं। आयु समाप्त होने पर या तो वे टूट-फूट कर यत्र-तत्र बिखर जाते हैं (वे

टुकड़े ही उल्का कहलाते हैं), या प्रकाश हीन (अन्धे) होकर उसी नियमसे चलते रहते हैं और उस समय तक चलते रहेंगे जब तक कि किसी अन्य पिंडसे टकराकर चकनाचूर न हो जायें। पिंडोंकी भिन्न भिन्न अवस्थाओंका बोध उसके द्वारा प्रेषित वर्णाभा (शेड्स) से होता है। ये आभाएं भिन्न भिन्न अवस्थाके अनुसार भिन्न होती हैं, उन्हींसे तारोंकी आयुका अनुमान लगाया जाता है। एक ही रंगके तारे लगभग एक ही आयुके होते हैं, यों दो-चार लाख वर्षोंका अन्तर कोई अर्थ नहीं रखता। नभस्तूपसे बने हुए पिंडकी नीलिमायुक्त श्वेताभा होगी, आगे चलकर नीलिमाका पर्दा उठकर केवल श्वेताभा रह जायगी, तब वह "शिशु" होगा। इसके उपरान्त उस पर पीताभाकी दीप्ति हो जायगी, तब वह "युवा" होगा। फिर रक्ताभा (लालिमा) से रंजित होने पर वह "अधेड़" कहलायेगा। यह रक्ताभा ज्यों २ गहरी होगी त्यों २ वह पिंड "वृद्ध" होता जायगा यहां तक कि अन्त में "मृत" होने पर वह "काला" हो जायगा। तब उस पर गर्मी और प्रकाश नहीं रहेगा।

यह एक पतले और फिर-फिरे दीखने वाले नभस्तूप का चमत्कार है। न जाने कितने असंख्य नभस्तूप कालकी इस यवनिका पर अपना चमत्कार दिखा चुके और भविष्य किन चमत्कारोंकी आशा रखता है, यह इस नाटकका सूत्रधार ही जाने।

'अन्त्याक्षरी-कल्पद्रुम' के कुछ दोहे

[रचयिता—श्री नन्दकुमारजी शर्मा कविशिरोमणि]

[कविवर श्री नन्दकुमारजीसे 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक परिचित होंगे। आजसे दश वर्ष पूर्व प्रथम वर्षके 'श्रीस्वाध्याय' के 'वसन्ताङ्क' में 'श्रीपरशुरामस्तोत्र' पर आपका पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ था। तदनन्तर आपके लेख और कविताएं भी 'श्रीस्वाध्याय' में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। अभी आपने लगभग १०००० दोहोंमें 'अन्त्याक्षरी-कल्पद्रुम' नामक एक ग्रन्थ निर्माण किया है। भाषा साहित्यकी यह एक अनुपम कृति सिद्ध होगी। ग्रन्थ अभी अप्रकाशित है। श्रीस्वाध्याय-सदनके संस्थापक श्री १०८ आचार्यचरण अमृतवाग्भवजी महाराजके द्वारा इस वर्षका पुरष्कार इसी ग्रन्थ पर दिया गया है। अकारादि क्रमके आरम्भिक ५४ दोहे हम यहां 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको भेंट कर रहे हैं। इससे कविकी प्रतिभा और ग्रन्थकी उपादेयताका अनुमान विज्ञ पाठकोंको स्वयं हो जायेगा।

—सम्पादक]

अति अपार हरि चरित शुभ, अथ इति इनकी नाहिं।
बरन सकहिं मानव कितौ, शारद शेष थकाहिं॥
अरि लघु सों लघु होय तऊ, विज्ञ गिनहिं लघु नाहिं।
कहं कीरी कुंजर कहां, को न जानि जग मांहिं॥
अलग अलग सबके मते अलग हि मार्ग चलाहिं।
लक्ष्य एक पै सबन को, जहं सब ही मिल जाहिं॥
इदमित्थं हरिचरित शुभ, कहुको बरन सकाहिं।
शेष शारदा कहि थके, नरकी कहा चलाहिं॥

ईख सने ही हृदय दुहुँ, सम जग मांहिं लखाहिं।
ज्यों ज्यों इनको पेरियै, त्यों त्यों अधिक मिठाहिं॥
उदर भरनके हेतु नर, जन-जन जांचत जाहिं।
सृजन पूर्व पय जिहिं दियौ, ताकों मूढ़ भुलाहिं॥
उलही वेलि सनेह की, कहुं कुम्हिलाइ न जाहिं।
वारी वारी आपनी, आछी भांति जुगाहिं॥
एक अनीह अकाम अज, अगुन अनाम अगेह।
भक्तन हित औसर परे, प्रगटत सो धर देह॥

ए० बी० सी० डी० आदि पढ़, श्रीगनेश विसराहिं।
सो जन जीवन भर न क्यों, 'ऐबी.सिडी' रहाहिं॥
काम परे कछु और ही, और हि काम सराहिं।
जिमि भांवर के परत ही, नदिया मौर सिराहिं॥
करत घात निज नेहि सों, लखे कीट हू नाहिं।
जे अलि दारु विदार हीं, जलज हिं वेधत नाहिं॥
खांस खांस पर घन सबैं, खादी खादर मांहिं।
आश्रय लेत उम.हिं जो, तिनको भय कछु नाहिं॥
खादी अक्षय कवच है, या कलजुगके मांहिं।
धारत याके व्यर्थ सब, अस्त्र शस्त्र है जाहिं॥
खर हू खादी सों मढ़े, ता जिनकों शरमाहिं।
है स्वतन्त्र विचरहिं मगन, पगिहा पैंड तुराहिं॥
गिरिजापति गिरिजा सहित, संतत भजि हैं जाहि।
गोप वधूटी विविध विधि, नाच नचावत ताहि॥
गहक गहत कर मर्द ही, बढ़ बढ़ बात बनाहिं।
गढ़ि आड़े आइ हैं, सो न मीत कल माहिं॥
घुमड़ घुमड़ घन किते भल, वारिन किन बरसाहिं।
पै नहिं निज प्रिय ग्रीष्म बिन, आक कबहुँ सरसाहिं॥
घातक सों घातकहु किन, होय प्रहार सहाहिं।
पै नैननको चोट सों, आजीवन कलपाहिं॥
चित चुराय चित चोर यदि, दुर न चहहु' तम माहिं।
तौ मम हिय सम गहन तम, अनत पाहुगे नाहिं॥
चख सम आनन भेदिया, बसत सदा तन गेह।
गूढ़ तत्त्व हियको सकल, बरजत हू कहि देह॥
छुट वैनी बल खाइ इमि, रहि उरोज लपटाहि।
मनु ढरगी शिव सों लिपट, नर तन अतहि डमाहि॥
जीवन सोई जानिये, जाको सबै सराहिं।
सूकर कूकर लों न तरु, बादहिं वैस बिताहिं॥
कुलसी लता सनेहकी, कृपा वारि बरसाहु।
ना तरु औसर वीत है, पुनि सिर धुन पछिताहु॥
झांक झरोखा सांझभक, दुरी सहेलि न मांहि।
पावस घनमें विज्जु जिमि, चमकत तुरत विलाहिं॥
टैंट पराये उघटि हैं, निज फुल्ली न लखाहिं।
जो निज दोष निहारि हैं, अस थोरे जग माहिं॥
ठग बाहर को होय यदि, बुधि बल चतुर बचाहि।
पै जब निज मन ही ठगहिं, तासों कहा बसाहि॥

ठौर कुठौर न देखि हैं, जलधर बरसें मेह।
त्यों सत जन समभाव सों, सब पर करत सनेह॥
डार पात सींचौ किते, तरुवर नहिं हरियाहिं।
जड़ जड़ सिंचनके बिना, सो समूल कुम्हिलाहिं॥
ढोल प्रेमके पीटि हैं, ते सत प्रेमी नाहि।
नेही हिय होली लगै, धुआं न प्रगट दिखाहिं॥
ढूंढ़त सतत सयत्न जो, भलि हरिहू मिल जाहिं।
मिलनो मन माफिक कठिन, मानव कलजुग मांहि॥
तूल यदपि हलकी अतहि, फूंकन जाहि उड़ाहि।
पै जग शीत निवारि है, कहो सुयश किन पाहि॥
तिलकी ओट पहाड़ है, जो जानें सो पाहि।
घट भीतर हरि बसत अरु, खोजत जनम गंवाहि॥
थिर न रहै जोवन विभव, जाहि देख ललचाहि।
यह बदरौटी धूप लों, देखत देखत जाहि॥
थर-थर कांपत सबल लख, निबल निरख घुर्राहिं।
अस अवसरवादीनके, जन्म भ्रमत ही जाहिं॥
दिये बिना पावहु कहा, मिलि है दियौ जोहि।
पाय तिमिरमय गेह कहा, जो कर दियौ न होहि॥
दिवस कहा बिनु भानुके, शशि बिनु रैन न सोहिं।
बिनु पटके ज्यों कामिनी, बिनु सनेह नर स्योहिं॥
धन - धन भारतके सुभट, तुम सम जग कहुँ नाहिं।
हितु मीतनकी बात कहा, अरि हू तुमहिं सराहिं॥
धर्म वर्म जौ लों सुदृढ़, तौलों भय कछु नाहिं।
याहीके बल सुभट रण, कालहु सौं भिर जाहिं॥
नैन भेदिया हियेके सबै भेद प्रगटाहिं।
एते हू पै ये निसुग, अपने हितू कहाहिं॥
पीठि दिखावत कूर जन, दारिद पेट दिखाहिं।
सूर सुकृति ते धन्य जो, सम्मुख लोह बजाहिं॥
फुक्यो जाय सब तन तऊ, मुख सों कढ़त न आहि।
हिय सुलुस ज्वालामुखी, प्रगट न धुआं लखाहि॥
फूलहिं फलहिं सदैव तरु, निज रितु कालहि पाहि।
पै मूरख मानव कितौ, विनु रितु काल उमाहिं॥
बुरे बुरेको मान जग, भल कोऊ पूछत नाहिं।
भले त्याग ग्रह क्रूर के, सब जप दान कराहिं॥
भंवरी सी भरती फिरै, छिन बाहर छिन गेह।
निचली नैक न बैठि हैं, नागरि नवल सनेह॥

मैं जो लौं मन में रहै, तौ लौं समझ न पाहिं।
मैं तू भेद मिटाहिं जब, प्रश्न कहा मैं काहिं॥
यश मिलनौ विधिने लिख्यो, जिहिं ललाट में नाहिं।
ता निरीहको होमहू करतहि हाथ जराहिं॥
रम्भा सदफल हेतु तू, जो हिय में ललचाहिं।
तो संक न जिय रंच कर, पहिले शीश कटाहिं॥
रूप ज्वाल सों विश्व में, बढ़ कोऊ ज्वाला नाहिं।
आन ज्वाल परसे दहैं, इहिं दरसेहि दहाहिं॥
लट्टु निगुनी गुनिकर गहत, बहुगुन गन लपटाहिं।
पै गुनि कर सों छुटत ही, निगुनी होय भ्रमाहिं॥
लालन आवन की भलैं, ठानी कहा बसाहि।
पै वरजहु निज याद ये, क्यों नित आइ सताहि॥
समुद कहा बढ़ कैं कियौ, त्रषित न तुहि ढिंग जाहिं।
तो सों तो लघु सर भले, सबकी प्यास बुझाहिं॥
सूत्रधार जैसे चहै, त्यों नट नटी नचाहिं।
त्योंही जगपति इंगितन, सब जग जीव भ्रमाहिं॥
हरि सों हलधर हैं बड़े, को नहिं जानत याहिं।
समय परे हलधर हरि हि, देते आंख दिखाहिं॥
हलधर होय न जगत में, जन की कहा चलाहिं।
तीनलोकके ईश जो, सो भूखे मर जाहिं॥
हरि पूजे सों जगतके, सब पुजनीय पुजाहिं।
ज्यों हाथीके खोज में, सबके खोज समाहिं॥

अनुभूत योगमाला

[लेखकः — राजगुरु श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी ज्योतिषालंकार]

१. जब सूर्य नीच राशि में हो और बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

२. जब चन्द्रमा नीच राशिमें हो और शनि केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

३. जब मंगल नीच राशिमें हो और शुक्र केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

४. जब बुध नीच राशिमें हो और चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

५. जब बृहस्पति नीच राशिमें हो और शुक्र केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

६. जब शुक्र नीच राशिमें हो और बुध केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

७. जब नीच राशिस्थ शनि केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो राजयोग होता है।

ये अनुभूत योग 'होराहस्कर' नामक हस्तलिखित ग्रन्थमें हैं।

'जीवार्किशुक्रेन्दु सितज्ञ सौराः नीचस्थसूर्यादिषु केन्द्र कोणे। कुर्वन्तिभूपम्......'

उपपत्ति

नीचस्थ ग्रह उच्चको पूर्ण दृष्टिसे देखता है और उच्चकी ओर प्रस्थित होता है, इसलिए नीचस्थ ग्रहमें अव्यक्त रूपसे विद्यमान शुभफल भी प्रतीत होता है। जिस प्रकार विष औषधि विशेषके संयोगसे अपना प्राण-हरत्व दोष छोड़ कर आरोग्य करने वाला होता है, उसी प्रकार नीचस्थ ग्रह भी ग्रहयोग विशेषसे अपना अशुभ फल छोड़ कर राज्यदायक होता है।

यथा हि योगादमृतायते विषं,
विषं यथा मध्वपि सर्पिषा सह।
(होराहस्कर)

बुधकी काल होरासे अनन्तर चन्द्रमाकी काल होरा होती है। इसलिये बुधके प्रभावसे अनन्तर चन्द्रमाका प्रभाव होता है। जिस समय नीचस्थ बुधकी शक्तियां व्याप्त होती हैं, उसके अनन्तर केन्द्र त्रिकोणस्थ चन्द्रमा की शक्तियां व्याप्त होकर अपने प्रभावसे उनका नीचत्व दोष निवारण कर उनमें अव्यक्त रूपसे विद्यमान राज्य-दान सामर्थ्य प्रकट करती हैं।

'कदलीषु घृतम्' इत्यादि नियमोंके अनुसार जिस प्रकार किसी वस्तु-विशेषका दोष निवारण सामर्थ्य किसी वस्तु विशेषमें है, उसी प्रकार केन्द्र त्रिकोणस्थ ग्रह विशेषमें नीचस्थ ग्रह विशेषका दोष निवारण करनेका सामर्थ्य है।

दशमस्थान खस्वस्तिकके समीपमें होनेसे सब स्थानोंसे उच्च और अधिक प्रभावशाली है। सजातीय होनेसे अन्य केन्द्रोंमें भी उसका प्रभाव व्याप्त होता है। नवमस्थानमें स्थित ग्रह दशमगामी होता है। इसलिए नवमस्थान भी प्रभावशाली है। त्रिकोणत्वसे उसका सजातीय होनेसे पंचम भी विशिष्ट प्रभाव वाला है। इस प्रकार केन्द्र त्रिकोणस्थ चन्द्रमा नीचस्थ बुधको राज्यदायक बनाता है।

बुधको कालहोरा शुक्रकी कालहोरासे अनन्तर होती है। इसलिए इसी प्रकार नीचस्थ शुक्रको केन्द्र त्रिकोणस्थ बुध राज्य दायक बनाता है।

शुक्रकी कालहोरा सूर्यकी कालहोरासे अनन्तर होती है। परन्तु आत्मकारक सूर्यका ज्ञानकारक बृहस्पतिसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए क्रमका अनादर कर नीचस्थ सूर्यने बृहस्पतिके केन्द्र त्रिकोणस्थ होने पर राज्यदान स्वीकार किया।

सूर्यकी कालहोरा मंगलकी कालहोरासे अनन्तर होती है, परन्तु सूर्यके सान्निध्यसे मङ्गलका सामर्थ्यहीन हो जाता है। इसलिए सूर्यकी कालहोरासे अनन्तर जब शुक्रकी कालहोरा होती है, तब नीचस्थ मङ्गलकी शक्तियां प्रभावशालिनी होती हैं। इसलिए केन्द्र त्रिकोणस्थ शुक्र नीचस्थ मङ्गलको राज्यदायक बनाता है।

मङ्गलकी कालहोरा बृहस्पतिकी कालहोरासे अनन्तर होती है। परन्तु मङ्गल अग्नितत्वात्मक होनेसे बृहस्पतिके प्रभावको कम करता है। इसलिए नीचस्थ बृहस्पतिको भी केन्द्र त्रिकोणस्थ शुक्र ही राज्यदान सामर्थ्य देता है।

शनि नैसर्गिक कुण्डलीमें प्रधान केन्द्रका स्वामी है। इसलिए नीचस्थ शनि केन्द्र त्रिकोणमें होने पर भी इस राजयोगमें स्थान हानि नहीं करता है। अतएव वह स्वयं राजयोग कर लेता है।

नीचस्थ अन्य ग्रह 'नीचस्थो रिपुगेहस्थो ग्रहो भाव-विनाश कृत्' इस नियमके अनुसार स्थान हानि करते हैं। इसलिए उनको केन्द्र त्रिकोणस्थ अन्यग्रहकी सहायता अपेक्षित होती है।

शनिकी कालहोरा चन्द्रमाकी कालहोरा से अनन्तर होती है, इसलिए नीचस्थ चन्द्रमाको केन्द्र त्रिकोणस्थ शनि राज्यदायक बनाता है।

यहां आग्नेय ग्रह सूर्य, मङ्गलका त्याग कर केन्द्र त्रिकोणमें ग्रह स्वीकार किये गये हैं और शुक्र, शनि द्विरावृत्तिसे केन्द्र त्रिकोणमें स्वीकार किये गये हैं। शुक्र जलतत्वात्मक और शनि वायुतत्वात्मक है। जलतत्व अग्नितत्व का कार्य और वायुतत्व उसका कारण है।

(क्रमशः)

★★

सुक्ति-सुधा

गृहेषु येष्वतिथयो नार्चिता सलिलैरपि
यदि निर्यान्ति ते नूनं फेरुराज्य गृहोपमाः
(श्रीमद्भा० ८।१६।७)

जिन घरोंमें आये हुए अतिथियोंका जलसे भी सत्कार नहीं किया जाता और वे वैसे ही लौट जाते हैं, वे घर निश्चय ही गीदड़ों के निवासस्थान के सदृश हैं।

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
भ्राता मरुत्पतेर्मूर्तिर्माता साक्षात् क्षितेस्तनुः॥
दयाया भगिनीमूर्तिर्धर्मस्यात्मातिथिः स्वयम्।
अग्नेरभ्यागतो मूर्तिः सर्वभूतानि चात्मनः॥
(श्रीमद्भाग० ६।७।२९।३०)

आचार्य ब्रह्माका, पिता प्रजापतिका, भ्राता इन्द्रका तथा माता साक्षात् पृथ्वीका स्वरूप है।

बहिन दयाकी मूर्ति है, अपना अतिथि साक्षात् धर्मका स्वरूप है, अभ्यागत अग्निका अङ्ग है तथा सम्पूर्ण भूत आत्माके रूप हैं।

★★

फलित पर विचार

[लेखक — श्री पं० रघुवीरशरणजी शर्मा वैद्य]

सूर्यादि नवग्रहोंका फल केन्द्र त्रिकोणकी स्थिति, शत्रु-मित्र उच्च-नीच तथा दीप्त आदि अवस्थाओंके अनुसार होता है, प्रस्तुत लेखमें इन्हीं पर विचार किया गया है।

दीप्त स्वस्थ आदि ग्रहोंके लक्षणोंके फल इस प्रकार हैं — दीप्त ग्रह (उच्च)की दशामें राज्य प्राप्ति (या राज्यकी नौकरी) भूस्वामित्व अथवा शासन विभागमें पद प्राप्ति, उत्साह, धन और वाहन (सवारी)की प्राप्ति, स्त्री तथा सन्तानकी प्राप्ति होती है। स्वस्थ (स्वक्षेत्री) ग्रहकी दशा में मनुष्य स्वस्थ (रोग रहित) रहता है, विद्या, यश, धन और भोग्य पदार्थोंकी प्राप्ति होती है।

मुदित (अधिमित्र राशिस्थ) ग्रहको दशामें धर्म-ग्रंथों का अध्ययन व श्रवण, तीर्थाटन आदिका लाभ मिलता है।

शान्त (मित्रक्षेत्री) ग्रहकी दशामें भूमि, स्त्री, पुत्र, सवारी, विद्या, धर्मशास्त्रका अध्ययन, तथा शासक वर्गसे सम्मान होता है।

दीन (समक्षेत्री) ग्रहकी दशामें स्थान-च्युत (अधिकारसे पृथक् होना) बन्धु वर्गसे विरोध तथा रोग होता है।

दु:खित (शत्रु क्षेत्री) ग्रहकी दशामें अनेक प्रकारके कष्ट, बन्धुजनोंसे वियोग, विदेश गमन, चौर, अग्नि तथा राज्यसे हानि होती है।

विकल (पापग्रह युक्त) ग्रहकी दशामें चित्त-व्यथित रहता है, मित्रोंसे वैमनस्य, स्त्री पुत्रादिक आत्मीयोंसे वियोग तथा चौरोंसे हानि होती है।

खल (पापक्षेत्री) ग्रहकी दशामें पिताका वियोग, शत्रु द्वारा धन और भूमिका नाश आदि होते हैं।

कोपी (सूर्य युक्त) ग्रहकी दशामें अनेक प्रकारके कुत्सित कर्म, धनका नाश, स्त्रीका मरण या मरणतुल्य कष्ट होता है। बन्धुजन तथा पुत्रादिक आत्मीय जनोंको भी कष्ट होता है।

पाठक गण! दीप्तादि ग्रहों पर अल्प विचारोंसे ही आप जान जायेंगे कि उक्त सभी ग्रह हमारे अहर्निशके परिचित उच्चादि ग्रह ही हैं। इन सबके अतिरिक्त एक आचार्यने ग्रहोंके उच्च नीचादि भेदसे वक्ष्यमाण फल लिखे हैं।

उच्चादि ग्रहोंका फल

महाधनी महोग्रश्च तुङ्गस्थे भास्करे नरः।
सभूषणो महाभोगी धनी चन्द्रे प्रजायते॥१॥
उच्चभौमे सुपुत्रश्च तेजस्वी गर्वितो नरः।
मेधावी दृढवाक्यश्च बलवांश्च बुधे भवेत॥२॥
राज्यपूज्यश्च विख्यातो विद्वानार्यो गुरौ नरः।
स्वोच्चे शुक्रे विलासी च हास्य गीतादि संयुतः॥३॥
तुङ्गस्थे भानुपुत्रे च चक्रवर्तिर्धनी भवेत्।
राजलब्ध नियोगश्च राहुश्शनि समः स्मृतः॥४॥

जिसके जन्मपत्रमें सूर्य उच्चका हो, वह प्राणी धनवान और उग्र प्रकृतिका होता है। चन्द्रमा उच्चका हो तो धनवान् और भोग्य पदार्थोंमें जीवन व्यतीत करने वाला। मंगलके उच्चका होने पर अभिमानी, तेजस्वी (रौबीला) तथा सुपुत्री। बुध उच्चका हो तो मेधावी, दृढ़ वाक्य (दृढ़ताके साथ कहने वाला) और बलवान् होता है। बृहस्पतिके उच्च होने पर प्रसिद्ध राजपूज्य (राजा या राज्य कर्मचारियोंसे सम्मानित) और विद्वान् होता है। शुक्र उच्चस्थ होने पर विलासी, गाने-बजानेका अथवा गाना-बजाना सुननेका व्यसनी और विनोदी होता है। शनि उच्चका होनेसे चक्रवर्ती और धनी होता है। राहुका फल शनिके समान जानना उचित है। उक्त ग्रहोंके अतिरिक्त वर्तमान समयमें हर्शल और नेपच्यून नामके दो ग्रह और भी माने जाते हैं, जिनमें हर्शलको वृश्चिक राशि का उच्च माना जाता है।

स्वक्षेत्री ग्रहोंका फल

स्वगृहस्थे रवौ लोके महाज्ञश्च महोद्यमो ।
चन्द्रे धर्मरतः साधुः मनस्वीरूपवानपि ॥१॥
स्वगृहस्थे कुजे चण्डश्चपलो धनवानपि ।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पण्डितो गुणवानपि ॥२॥
धनीकाव्यश्रुतिज्ञश्च स्थिरधीः स्वगृहे गुरौ ।
स्फीतः कृषिकरः शुक्रे शनौ मान्य खलोजनः ॥३॥

यदि सूर्य स्वगृही हो तो अच्छा विद्वान् और उद्योगशील होता है। चन्द्रसे धर्मात्मा, सज्जन प्रकृतिका, मनस्वी और सुन्दर होता है। मंगलसे उग्र प्रकृतिका, चंचल और धनी होता है। बुधसे अनेक प्रकारकी कलाओंका ज्ञाता, शिल्पी (इंजीनियर या अन्य प्रकारका हस्त-कौशलका ज्ञाता) पण्डित और गुणवान् होता है। गुरुसे काव्यका ज्ञाता, वेदका ज्ञाता, स्थिर बुद्धिका और धनवान् होता है। शुक्रसे स्फीत और कृषक तथा शनिसे दुर्जनोंमें सम्मानित होता है।

मित्रक्षेत्री ग्रहका फल

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्थिरसौहृदः ।
चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि ॥ १ ॥
भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः ।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यः सतां सत्कर्म संयुतः ॥ २ ॥
शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बन्धुजनप्रियः ।
शनौ पराश्नभोगी च कुकर्मनिरतो भवेत् ॥ ३ ॥

सूर्य मित्रगृही होनेसे मनुष्य प्रसिद्ध, अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, स्थायी मित्रता रखने वाला होता है। चन्द्रसे भाग्यशाली, धनवान् और व्यवहार कुशल होता है। मंगलसे शस्त्रोपजीवी (शस्त्रोंका क्रय विक्रय अथवा सेनामें नौकर) बुधसे रूपवान् और धनवान्। गुरुसे सत्कार्योंका करने वाला तथा सज्जनोंमें सम्मानित होता है। शुक्रसे बन्धुजनोंमें प्रिय तथा धनी। शनिसे परान्नभोजी (दूसरों पर आश्रित) और निरन्तर दुष्कर्म करने वाला होता है।

नीच राशि गत ग्रहका फल

नीचे सूर्ये भवेत् प्रेष्यो बान्धवैर्वर्जितो नरः ।
चन्द्रे रोगी स्वल्पपुण्यो दुर्भगोऽपि प्रजायते ॥ १ ॥
नीचेभौमे भवेन्नीचो कुत्सितो व्यसनातुरः ।
बुधे क्षुद्रो बन्धुवैरी गुरौ दीनो मलान्वितः ॥ २ ॥
शुक्रे नीचे नष्टदारा स्वतन्त्रः शीलवर्जितः ।
शनौ काणो दरिद्रश्च गताचारो विगर्हितः ॥ ३ ॥

सूर्य नीच राशिका हो तो सेवक और बन्धुजनोंसे रहित होता है। चन्द्रसे रोगी मन्दभागी किन्तु कुछ सत्कर्म भी करने वाला होता है। भौमसे बुरे व्यसनोंमें आसक्त तथा नीच स्वभावका होता है। बुधसे क्षुद्र विचार वाला बन्धुजनोंसे भी शत्रुता मानने वाला होता है। गुरुके नीच होने पर दीन-दुखी तथा पापी होता है। शुक्रसे असभ्य उजड्ड दुश्चरित्र और विधुर (रंडुवा) शनिसे काणा दरिद्र चरित्रहीन और निन्दित होता है।

शत्रुगृही ग्रहका फल

सूर्ये रिपुगृहे निःस्वो विषये पीडितो नरः ।
चन्द्रे हृदयरोगी च भौमेऽग्नेजाज्जडोऽधनः ॥ १ ॥
बुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनी दुःख पीडितः ।
जीवे च जायते क्लीबो न्यायवृत्तिविभूषितः ॥२॥
शुक्रे शत्रुगृहे मृत्युः कुबुद्धिदुःखितो नरः ।
शनौ व्याध्यर्थ शोके च संवहो मलिनो भवेत् ॥३॥
(हस्त लिखितमेंसे)

सूर्य शत्रु क्षेत्री होनेसे जातक विषयोंमें आसक्त तथा दुखी, चन्द्रसे हृदयरोगी (दिलकी धड़कन आदि) मंगलसे निर्धन, बुधसे मूर्ख तार्किक तथा दुःखी, गुरुसे नपुंसक, शुक्रसे दुर्बुद्धि दुःखी तथा अल्पायु, शनिसे रोगी पापी तथा दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

नोट—यह फल हमने एक हस्तलिखित कागजसे लिखा है कह नहीं सकते ये श्लोक किसी प्रकाशित पुस्तक में हैं या नहीं।

मूलत्रिकोण

फलितमें मूलत्रिकोणका भी कम महत्व नहीं है। फल कहते समय इधर भी दृष्टि डाल लेनी चाहिए। मूलत्रिकोणका वर्णन इस प्रकार है। सूर्य सिंहका २० अंश तक। चन्द्र वृषका ३ अंश तक। मंगल मेषका १२

अंश तक। बुध कन्याका १५ अंशसे २० अंश तक अर्थात् ५ अंश। गुरु धनुः राशिका १० अंश तक। शुक्र तुलाका १५ अंश तक। शनि कुम्भका २० अंश तक। मूल-त्रिकोणी कहलाता है। इसी प्रकार सूर्यादि ग्रहोंके हर्ष स्थान भी होते हैं किन्तु ये राशिपरक न होकर भाव या स्थानपरक होते हैं जैसे—सूर्यका नवां भाव चन्द्रका तीसरा, मंगलका छठा, बुधका प्रथमभाव (लग्न) गुरुका ग्यारहवां और शनिका बारहवां भाव हर्ष स्थान कहलाता है।

मूलत्रिकोणी ग्रहका फल

सूर्य मूलत्रिकोणमें हो तो पुरुष धनवान्, सुखी, तथा कार्यकुशल होता है। चन्द्रसे धनी और भोगी। मंगलसे शूरवीर और प्रतापी। बुधसे विद्वान् तथा विनोदी (हंसमुख) तथा प्रत्येक कार्यमें सफल होता है। बृहस्पतिसे अच्छी बुद्धिवाला—मेधावी वक्ता और विचा-रशील, अपने ग्राम तथा वंशका मुखिया और किसी मठ या संस्थाका प्रधान पदाधिकारी होता है। शुक्रसे तपस्वी, परिश्रमी सुखी और विद्वान् होता है। और शनिसे शूरवीर धनवान् तथा अनेक प्रकारकी कलाओंका ज्ञाता होता है।

ग्रहबल विभाजन

उच्च नीचादि ग्रहोंके बलके सम्बन्धमें इस प्रकारका विभाजन किया है, पाठक इसको भी जान लें।

उच्च ग्रह पूर्णबली होता है (पूर्ण बलका नाम ६० संख्या मानी गई है) मूलत्रिकोणी ग्रहका बल पौन ४५। स्वक्षेत्रीका आधा ३०। अधिमित्रगृही का इससे पौन (साढ़े बाईस) मित्रगृहीका चौथाई (१५) समगृहीका इससे आधा ७॥ शत्रुगृहीका इससे आधा (३-४५) और अधिशत्रुगृहीका इससे भी आधा होता है और नीचमें इससे भी आधा। इसका श्लोक इस प्रकार है—किन्तु अशुद्ध-सा जंचता है—

६० ४५
स्वोच्चे षष्ठिबलं समीरणयुगाः मूलत्रिकोणे स्थिताः।
३० २२।३०
वाग्नि स्वगृहेरर्धनेत्रविंशदधिमित्रगेहे स्थिताः।
१५ ७।३० ३।४५
मित्रे पंचदश समेऽर्धमुनयः शत्रोस्तदर्धं तथा
अधि शस्त्रोश्च तदर्धं तस्य अर्धं नीचाति अर्धं तथा

नोट (अधिशत्रोस्तदर्द्धं च तदर्द्धं नीच संज्ञकम्।)

चतुर्थ चरणमें ऐसा पाठ हमने किया है ठीक समझें तो मान लें हमारा कोई आग्रह नहीं है।

यह भी हमने हस्तलिखितसे ही लिया है इससे बृहत्पाराशर होरामें कुछ भिन्न प्रकारसे यों लिखा है—

स्वोच्चे शुभं बलं पूर्णं त्रिकोणे पादवर्जितम्।
स्वर्क्षे दलं मित्रगेहे पाद मात्रं प्रकीर्तितम्॥
पादार्द्धं समभे प्रोक्तं व्यर्थं नीचास्तशत्रुगे।
तद्व दुष्ट बलं ब्रूयात् व्यत्ययेन विचक्षणः॥

इसमें उक्त बलोंको शुभबल और अशुभ बल दो नामसे दो भेद कर दिये हैं, वे इस प्रकार हैं—उच्चग्रहका बलपूर्ण, त्रिकोणका पौन, स्वक्षेत्रीका आधा, मित्रगृहीका चौथाई, समगृहीका अष्टमांश, नीच, अस्त, और शत्रुक्षेत्री व्यर्थ हैं, अर्थात् इनका कोई फल नहीं होता। इसके विपरीत अशुभ बलमें (शत्रुगृही और नीचराशिके ग्रहका पूर्ण बल, समक्षेत्रीका पौन, मित्रगृहीका आधा, स्वक्षेत्रीका चौथाई, और मूलत्रिकोणका अष्टमांश, और उच्चका कुछ नहीं। इन शुभाशुभ बलकी बृहत्पाराशर होरामें दोनों प्रकारकी तालिका भी दी है। ये सब गोरखधन्धा बुद्धिसे बाहरकी चीज है। हम तो यह मानते हैं कि उच्च ग्रहयोग वश शुभाशुभ फल जो कुछ भी करेगा वह बलके साथ करेगा। यह नहीं कि उसका अशुभ फल कुछ न रहे। इसी प्रकार शत्रुक्षेत्री और नीच राशिस्थ भी अशुभ फल करेगा ही। हां, अस्तग्रहकी बात मानी जा सकती है कि वह प्रभाव रहित रहेगा, दूसरे उच्चादिग्रहोंको दीप्तादि विशेषण देकर उनके फल लिखना फिर उच्चादि ग्रहोंका स्वतन्त्र रूपसे फल लिखना कहां तक संगत है? कहा जा सकता है कि दीप्तादि ग्रहोंका फल दशाविपाकमें होता है तो मेरा नम्र निवेदन है कि सभी ग्रह दशा अन्तर्दशामें ही फल करते हैं। हम इस स्थल पर प्रसिद्ध अंग्रेज ज्योतिषी रेफलके वाक्य उद्धृत करते हैं। उनका कहना है कि—

"ग्रह यदि स्वगृही हो तो बहुत बलवान् और शुभ होता है। उच्च ग्रह भी शुभ और बलवान् होता है, किन्तु स्वगृही से कम। मित्रकी राशिमें ग्रह साधारण बलवान् और शुभ होता है।"

कितना स्पष्ट है। आपका शास्त्र मिलता है या नहीं किन्तु गोरखधन्धा नहीं है। अस्तु इनके विचार अगले अंकमें लिखनेका प्रयत्न करेंगे। अब हम इस विषयको छोड़ कर होरा (जिसका उपयोग षड्वर्गमें होता है) पर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहते हैं।

होरा

एक राशिका जिसमें कि ३० अंश होते हैं दो भागों में विभक्त करनेका नाम होरा है। जिसके प्रकार निम्नलिखित हैं—मेष, मिथुन, सिंह आदि विषम राशियोंके १५ अंश तक सूर्यकी और १५ अंशके बाद ३० अंश तक चन्द्रमाकी होरा होती है। इसके विपरीत वृष, कर्क कन्या आदि समराशियोंमें प्रारम्भके १५ अंश तक चन्द्रकी और बादमें सूर्यकी होरा होती है। आजकल यही होरा व्यवहृत होती है। इसके अतिरिक्त जातकालंकारमें वराहमिहिरने एक प्रकारकी होरा और भी लिखी है—

"केचित्तु होरां प्रथमांभपस्य वाञ्छन्ति लाभाधिपतेर्द्वितीयाम्।"

(जातकालंकार वराहमिहिरका नहीं इनका बृहज्जातक है और यह श्लोक भी बृहज्जातकका ही है जातकालंकारमें नहीं।—सं०)

वराहमिहिर कहते हैं कि किसी आचार्यके मतसे पहली होरा उसी राशिके स्वामीकी और दूसरी ग्यारहवीं राशिके स्वामीकी होती है। जैसे—मेषमें पहिली मंगलकी और दूसरी शनिकी आदि आदि। इससे सिद्ध है कि वराहमिहिरके समयमें यह होरा प्रचलित थी। उक्त दोनों प्रकारकी होरा ग्रहपरक हैं, इनके अतिरिक्त राशिपरक और भी है। जिसका उल्लेख जैमिनीयसूत्रकी वृद्धकारिकाओंमें मिलता है—

राशिरर्द्धं भवेद्धोरास्ताश्चतुर्विंशतिः स्मृताः।
मेषादि तासां होराणां परिवृद्धिद्वयं भवेत्।'

अर्थात् राशिके आधे भागको होरा कहते हैं और यह मेष आदि १२ राशियोंकी दो आवृत्ति होने पर चौबीस प्रकार की हो जाती है। मेषमें पहली मेषकी दूसरी वृषकी। वृषमें पहिली मिथुनकी दूसरी कर्ककी। मिथुनमें पहिली सिंहकी दूसरी कन्याकी कर्कमें तुला और वृश्चिक की आदि आदि। यह प्राचीनकालकी राशिपरक होरा है। यही मत स्वर्गीय श्रीरामयत्न ओझा ज्योतिषाचार्य प्रधानाध्यापक ज्योतिषविभाग हिन्दू विश्वविद्यालय काशीका भी है। इसकी तालिका इस प्रकार है।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	राशिः
तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
मे	मि	मि	तु	ध	कुं	१५
वृ	क	कं	वृ	म	मी	३०

होरालग्न

इनके अतिरिक्त एक होरालग्न और होता है इसका उपयोग आयुर्निर्णयार्थ होता है। यह होरालग्न अपने ३० अंशों को २॥ घड़ी या एक घण्टेमें भोग लेता है। इस प्रकार एक घटीमें १२ अंश, ५ पल (दो मिनट) में १ अंश और ५ विपलमें एक कला यह इसका क्रम है। निष्कासन विधि यह है—इष्ट (घटियों) में ढाईका भाग दें जो लब्धि है वह राशि हुई शेषको ६० से गुणा करके पल बना लें ५ का भाग दें, लब्ध अंश हुए शेष पुनः ६० से गुणा करके विपल बना ५ का भाग दें लब्ध कला हैं। इस प्रकार राशिअंश और कला हुए। समलग्न हो तो लग्नस्पष्टमें और विषम हो तो सूर्यस्पष्टमें जोड़ देना चाहिये

दूसरा प्रकार – इष्टकी घड़ी पलोंको दूना करके ५ का भाग, शेषको पलीकृत करके १० का भाग, पुनः शेषको विपलीकृत करके पुनः १० का भाग दें, पूर्वोक्तराश्यादिक आ जायेंगे। यदि जातक की लग्न सम हो तो लग्नमें और विषम हो तो सूर्यस्पष्टमें जोड़ना चाहिए।

तथा सार्धद्विघटिकामितात् कालाद्विलग्नभात्।
प्रयाति लग्नं तन्नाम होरालग्नं प्रचक्षते।

यज्जन्मविषमर्क्षेषु सूर्यादि गणयेत् क्रमात्
समलग्ने यदा जन्म गणयेज्जन्मभाद्द्विज।
(बृ. पा. हो. पू. ख.)
द्विघ्नेष्ट नाड्यः पञ्चाप्ताः भंशेषं च पलीकृतम्।
दशाप्तमंशास्तेयुक्ता रवौ होरादयो भवेत्।

इति वास्तविकं होरा लग्नानयनम्। विषमेङ्के रवौ-योज्यं समेङ्के लग्नभा दिषु। यदुक्तं तत् सिद्धान्त विचार बहिर्भूतं यतः सर्वेषां लग्नानां सूर्योदयादेव प्रवृत्तिः।

उदाहरण

इष्ट २८।२७ दुगुणा किया ५६।११४ हुए ५ का भाग दिया शेष १ घडी को ६० से गुणा किया और पलोंमें जोड़ दिया तो १७४ हुए १० का भाग दिया ४ शेष इसको ६० से गुणा करके विपल बनाए २४० हुए १० का भाग दिया इस तरह ११।१७।२४ राश्यादि हुए। अब लग्न जातक की मानलो मकर है और यह सम है तो मकर के अंशादि इस प्रकार हैं ६।२३।५३ में ११।१७।२४ को जोड़ने पर ६।११।१७ हुए अर्थात् होरालग्न मकर लग्न आया और उसके ११ अंश और १७ कला हुई।

विमर्श

केचिल्लग्नाद्वदन्त्येव होरा लग्नं प्रचक्षते।

अर्थात् जातक की जन्मलग्न सम हो या विषम, होरा लग्नको जन्मलग्नमें ही जोड़ें यह भी किसी आचार्यका मत है। इस तरह ये दो मत हुए। इसके अतिरिक्त भूतपूर्व प्रधानाध्यापक ज्योतिष विभाग यूनिवर्सिटी काशी तथा "फलित-विकास" "फलितसंग्रह" आदिग्रन्थोंके लेखक स्वर्गीय श्रीरामयत्नजी ओझा, और "जैमिनीय पद्यामृत" के लेखक श्रीमहामहोपाध्याय श्रीदुर्गाप्रसादजी द्विवेदी तथा विश्वपञ्चांग (काशी) के सम्पादक मण्डलका पूर्वोक्त इन दोनों मतोंसे भिन्न मत है—इन महानुभावोंके कथन लिम्नलिखित हैं—"भावलग्नं होरालग्नं घटिका लग्नं च सूर्यादेव गणनीयं, यतः सर्वेषां लग्नानां सूर्यादेव प्रवृत्तिः, सूर्योदये जन्मलग्न, भावलग्न, होरालग्न घटिका लग्नानि समानि, तदग्रे स्वस्वोदयमानेनानुसारेण सर्वाणि पृथग्रूपाणि भवन्ति। जन्मलग्नं स्वदेशोदयानुसारेण भावलग्नं पञ्चघटी मितोदयमानानुसारेण होरालग्नं सार्धद्विघटीमितमानानुसारेण, घटिकालग्नं घटीमितोदयामामानुसारेणेति"।
(श्रीरामयत्न ओझा)

"सूर्योदये खलु जन्मभावहोराघटीलग्नानि तुल्यानि भवन्ति, तदनु निजनिजोदयमानेन भिन्नान्युद्यन्ति यस्माल्लग्नानां सूर्योदयात् प्रवृत्तिस्तस्मात् सूर्यादि गणना न्याय्या।" (श्रीदुर्गाप्रसाद द्विवेदी) "विषमेऽङ्के-रवौ योज्यं समेङ्के लग्नभादिषु इति यदुक्तं तत् सिद्धान्त विचार बहिर्भूतं यतः सर्वेषां लग्नानां सूर्योदयादेव प्रवृत्तिः।" (ज्योतिषाचार्य रामव्यास पाण्डेय आदि सम्पादकमंडल विश्व पञ्चाङ्ग काशी) पूर्वोक्त मतोंका यह अभिप्राय है कि जन्मलग्न भावलग्न होरालग्न और घटिकालग्न सभीकी अपने अपने उदयमानके अनुसार सूर्योदयसे ही प्रवृत्ति होती है, अतः होराको सूर्यमें (सूर्य स्पष्टमें) ही जोड़ना चाहिए। जैसे जन्मलग्न ३ घड़ी ४५ पल वृष ४ घड़ी १६ पल आदि भावालग्न ५ घटी होरा लग्न २॥ घड़ी और घटिका लग्न एक घटीके प्रमाणसे होती हैं इस प्रकार उक्त तीन मतोंके अनुसार होरा लग्न तीन प्रकारकी होगी। मैंने इस सम्बन्धमें अनेक प्रसिद्ध ज्योतिषियोंसे बातें की हैं और पत्रव्यवहार भी किये हैं किन्तु किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा। आशा है कोई दैवज्ञ इस पर प्रकाश डालनेकी कृपा करेंगे। यही बात मुझे षड्वर्गीय होराके भी सम्बन्धमें कहनी हैं कि तीन प्रकार के होरामें तर्कसे और इससे बढ़ कर अनुभवसे कौनसा उपयोगी हो सकता है।

पापग्रह

मैंने इस लेखमें पापग्रहोंकी चर्चा या फल कहा है अतः पापग्रहोंका उल्लेख भी आवश्यक समझता हूं—सूर्यसे लेकर केतु पर्यन्त नौ ग्रह हैं, जिनमें बृहस्पति और शुक्र दो शुभग्रह निश्चित हैं। इनमें बुध और चन्द्रमा स्थिति-वश शुभग्रह और पापग्रह बनते रहते हैं। जैसे बुध पापग्रहके साथ हो तो पापी और शुभग्रहके साथ हो तो शुभ, यह वैसे भी प्रायः अस्तसा ही रहता है। रही चन्द्रमाकी बात, यह प्रत्येक मासकी कृष्ण पक्षकी पञ्चमीसे शुक्लपक्षकी पंचमी तक अशुभ और शेष शुभ रहता है। इनके अतिरिक्त वर्तमानकालमें हर्शल और नेप्च्यून दो ग्रह और भी माने जाते हैं, इनके सम्बन्धमें प्राचीन शास्त्रमें कुछ नहीं लिखा है क्योंकि नवीन ग्रह हैं, अभी जाने गये हैं, किन्तु हर्शल प्रायः शनिग्रहके समान ही फल करता है। शेष फिर।

नये वर्षका भविष्य

संसारकी राजनैतिक आर्थिक और व्यापारिक स्थितिका विश्लेषण

[लेखकः—श्री बैंगलोर वैंकट रमन D. Sc., F. R. A. S, M. R. A. S.]

[आजसे ६ मास पूर्व हमने अपने 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' में संसार और भारतकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिक धार्मिक आदि परिस्थितियों पर सं० २००८ वि० के लिए जो विस्तृत भविष्य-विवेचन, 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र' में किया था उसीकी पुष्टि इस लेखसे भी हो रही है। इस लेखके लेखक बंगलौरके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य और 'एस्ट्रालोजीकल-मेगजीन' नामक अंग्रेजी मासिक पत्रके सम्पादक हैं। यह नये वर्षका भविष्य उन्होंने अपने पत्रके जनवरी मासके विशेषांकमें प्रकाशित किया है, उसीका हिन्दी अनुवाद हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। पाठक देखेंगे कि गत कार्तिकमें प्रकाशित हमारे पंचागकी भविष्यवाणी और पौष मासमें प्रकाशित श्री रमनकी इस भविष्यवाणीमें कितनी साम्यता है।

— सम्पादक]

इस वर्ष सं० २००८ वि० (सन् १९५१-५२) में मंगल शनि और गुरुकी गति महत्वपूर्ण है। इसका शस्त्रीकरण पर प्रभाव पड़ेगा। संकट भी उत्पन्न हो सकता है। २० अक्तूबरसे १ दिसम्बरके मध्य संसारके अनेक भागोंमें जंगल कानूनका राज्य होगा और युद्ध-भीति बढ़ेगी। लूट-मार होगा। हमारे शास्त्र युद्ध, सम्पत्ति और अनाजका नाश और भारी रक्तपात बताते हैं। यथा—

> कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ।
> तदा युद्धाकुलाः पृथ्वी धन-धान्य विवर्जिता॥
> यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
> तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षयः॥

विश्वके अनेक भागोंमें भारी परिमाणमें जन-नाश होगा। एक ऐसा नया रोग उत्पन्न होगा जिसका उपचार डाक्टर भी न बता सकेंगे। करारों और सन्धियोंके इस वर्ष भंग होनेका भय है।

इस वर्ष देशमें वायु नामके मेघोंके रहनेसे वर्षा अच्छी न होगी, फसल नष्ट हो जायगी, लोग बड़ी संख्यामें एक राज्य छोड़कर दूसरेमें जीविकाकी खोज में जावेंगे।

शनिके भूमध्य रेखाके पास रहनेसे शीत कठोर होगा और भारी हिमपात होगा। १९ दिसम्बरके लगभग वातावरण अशान्त होगा। तूफान और आंधियां आवेंगी। वर्षा सर्वत्र समान रूप से न होगी। श्रावणमें भारी वर्षा होगी। उत्तरीय भारतमें प्रचण्ड वृष्टि होगी। गंगा, यमुना और कुछ अन्य नदियोंमें बाढ़ आवेगी। बाढ़ और अन्य दैवी आपत्तियोंके कारण भारी हानि होगी। भाद्रपदमें कम वर्षा होगी। १९ दिसम्बरको कन्या राशिमें मंगल व शनिकी युति होनेसे तापमान सहसा गिर जायगा, सामुद्रिक तूफान आवेंगे, जहाज डूबेंगे। दिसम्बर १९५१ में उल्लेखयोग्य आंधियां आवेंगी।

साढ़ेसातोकी छायामें

चान्द्र नववर्षका आरम्भ जब होता है, उस समय सिंह राशि दिल्लीकी चल रही होगी। इसके विषयमें शास्त्रोंका मत है:—

'सिंहलग्ने दक्षिणस्यां द्रंष्ट्राभयमुदीरयेत्।'

फलतः धातुओंके मूल्यमें भारी चढ़ाव-उतार होगा। सरकारको भी साढ़ेसाती अभी चल रही है। अतः सरकारके प्रति विरोध तीव्र होगा और उसका मार्ग इस कारण कण्टकाकीर्ण रहेगा। अन्न-संकट इस वर्ष भी बना रहेगा। आर्थिक और व्यावसायिक स्थिति १९५० से अधिक अच्छी न होगी। जूनके अन्तिम सप्ताह, और फिर अक्तूबर और दिसम्बरमें श्रम-समस्या उग्र होगी

जनमंगल परिकल्पनाओंका विस्तार और उनकी वृद्धि होगी, परन्तु वे कागजी ही सिद्ध होंगी।

भारी आघात

वर्षकी प्रथम तिमाहीमें एक महान् व्यक्तिकी मृत्युका समाचार सुननेके लिए देशको तैयार रहना चाहिए। इसकी व्यापक प्रतिक्रिया होगी और जनताके नैतिक जीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। चैत्र और वैसाखमें (अप्रैल मई) सोना-चांदीके बाजारमें भाव चढ़ेंगे। गर्मी प्रखर होगी। संक्रामक रोग और वर्कशापोंमें आग लगनेसे भारी जन-नाश होगा। अन्न-दुर्लभता रहेगी, फलतः मूल्य चढ़ेंगे। ज्येष्ठ और आषाढ़ (जून-जुलाई) में साधारण वर्षा होगी। रुईके बाजारमें भारी उथल-पुथल होगी। आषाढ़के अन्तमें कुछ अनाज-स्थिति सुधरेगी और वर्षा भी होगी। श्रावणमें अच्छी वर्षा होगी और किसानोंको भादोंमें कठिन परिस्थितियोंका सामना करना पड़ेगा। संक्रामक रोग फैलेगा और भारी संख्यामें पशु मरेंगे। आश्विन और कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर) राष्ट्रोंके बीच अविश्वास बढ़ने, जनताके दुर्भाग्यमें वृद्धि होने और पशुओंके मरनेके कारण ये मास स्मरण रहेंगे। व्यापार और व्यवसाय सम्बन्धी नये कानूनोंके बनने और अप्रत्याशित घटनाओंके घटित होनेसे व्यापारी समाजको भारी कठिनाईका सामना करना पड़ेगा। मार्गशीर्ष (दिसम्बर) में कपासका भाव सहसा गिर जावेगा। परन्तु पौष (जनवरी १९५२) में स्थितिमें अपेक्षाकृत सुधार दिखाई देगा। कठोर शीत और भारी हिमपातके कारण फसल नष्ट हो जावेगी। माघ फाल्गुनके अन्दर चांदीके मूल्यमें भारी चढ़ाव-उतार आयगा। मार्च और अगस्तके अन्दर, विशेष रूपसे भारतमें (यूरोपमें भी) में खराब हवा और ट्रेन दुर्घटनाएं होंगी। कांग्रेस पार्टीके अन्दर फट-फटाव और बढ़ेगा और उससे निकले लोग एक अलग पार्टीका निर्माण करेंगे। वे अपनेको गांधीवादी न कहेंगे।

अवास्तविक

भारतकी परराष्ट्र नीति वास्तविक और शक्तिशाली नहीं, यह इस वर्ष विशेषरूपसे अनुभव होगा। पाकिस्तान पुर्तगीज और फ्रेंच बस्तियोंके प्रति दिखाए गये धीरजको सरकारकी कमजोरी माना जावेगा। नेपालकी स्थिति अशान्त रहेगी। कम्युनिस्ट-भीति भी उसको रहेगी। उत्तर-प्रदेशके अन्दर एक भयंकर राजनीतिक गड़बड़ीका पता चलेगा, जिससे लोगोंको भारी धक्का लगेगा। आसाम और बंगालमें भयंकर बाढ़ें और भूकम्पके धक्के आवेंगे। पाकिस्तानके साथ सम्बन्ध तने रहेंगे, परन्तु खुली लड़ाई न होगी। भारतको हानि पहुँचानेके लिए पाकिस्तानकी ओरसे गुप्त कार्रवाई की जाने की आशंका है।

काश्मीर-समस्या

काश्मीर समस्या इस वर्ष भी हल न होगी। राज्यका एक प्रकारसे विभाजन होनेकी सम्भावना है। जम्मूके अन्दर भयंकर राजनीतिक उत्पात होंगे, जिसके कारण कठोर अन्धाधुंध दमन होगा। कांग्रेस भी साढ़ेसातीमें चल रही है। अतः पार्टीमें अनैक्य और प्रतिस्पर्द्धा बढ़ेगी। सम्भव है चुनाव इस वर्ष भी स्थगित हो जाय। चीनका भारतके साथ सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण होगा पर हार्दिक प्रीति न होगी। प्रधान-मन्त्री श्री नेहरूका यश और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परन्तु यान-दुर्घटनाओंसे सावधान रहनेकी आवश्यकता है। भारतके लिए यह वर्ष शान्तिका है। परन्तु विद्रोह और असन्तोषकी लहर अन्दर ही अन्दर चलती रहेगी।

पाकिस्तान

पाकिस्तानके अन्दर आन्तरिक झगड़ों और भारत विरोधी प्रचार होने पर भी उसकी साम्पत्तिक अवस्था अच्छी रहेगी। पाकिस्तानकी आय बढ़ेगी परन्तु वह उसका उपयोग सैनिक व्यय बढ़ाने में करेगा। पाकिस्तानके अन्दर जनतन्त्रके तत्व बढ़ेंगे। राजनैतिकक्षेत्रमें पाकिस्तान एक महत्वपूर्ण विजय लाभ करेगा। भारतीय प्रधान मन्त्रीकी मैत्रीका पाकिस्तान आदर न करेगा। अफगानिस्तानके साथ उसका सम्बन्ध ऊपर ऊपरसे मैत्रीपूर्ण दीखता हुआ भी सुधरेगा नहीं।

द्रविड़स्थान

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादका स्वास्थ्य १६ जुलाईके बाद ठीक न रहेगा। द्रविड़स्थानका आन्दोलन जोर

पकड़ेगा। दंगे होंगे, अशान्ति मचेगी, विशेषकरके मदुरा जिलेमें। मुद्रास्फीति बढ़ेगी। पाकिस्तानके साथ सम्बन्ध नहीं सुधरेंगे। चीन और नेपालकी स्थितिका भारतकी शान्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। दो महान् व्यक्तियोंका इस वर्ष देशको शोक सहना पड़ेगा।

सीलोनको यह वर्ष समृद्धि का होगा। भारत विरोधी कानून नरम होंगे और दोनों देशोंके बीच मैत्री बढ़ेगी। बर्माके भाग्यमें इस वर्ष भी शान्ति नहीं। कम्युनिस्ट लड़ाई जोरदार करेंगे। चीनी कम्युनिस्टोंके देशमें घुस आनेकी आशंका बनी रहेगी। परन्तु सरकार स्थिति पर काबू पाने में समर्थ होगी।

चीन

चीन भी साढ़े सातीमें से गुजर रहा है। चीनी कम्युनिस्टोंको अभी और सैनिक विजय मिलेगी। वे समस्त एशियामें फैल जानेका प्रयत्न करेंगे और इसमें उनको एक बड़ी सीमा तक सफलता मिलेगी। भारतकी सीमाके पासके एक देशका भाग्य कोरियाके समान होगा। चीन इस वर्ष यू० एन० में अवश्य ले लिया जावेगा। इसको भयंकर अकालका सामना करना पड़ेगा। रूसी प्रभाव-क्षेत्र में लानेके लिए भारत पर भारी दबाव डालेगा। मलय और हिन्दचीन भी चीनी कम्युनिस्ट-प्रभाव-क्षेत्रमें सम्मिलित किए जावेंगे। वर्ष समाप्त होने तक कोरिया-प्रकरण समाप्त हो जायगा और यू० एन० को अपमानकी कड़वी घूटें निगलनी होंगी। बड़े राष्ट्र परस्पर लड़ेंगे, पर उध्वस्त होगा कोरिया।

मिकाडो

जापानकी राजनीति गड़बड़ रहेगी। वर्षकी अन्तिम तिमाहीमें भूकम्प आयगा और इससे उसको भारी क्षति पहुँचेगी। बड़ी संख्यामें (मंगल शनिकी युतिकी घड़ीमें) राजनीतिक हत्याएं होंगी। राजघराने पर विपत्ति आयगी। गवर्नमेंटको भी दुर्भाग्यका सामना करना पड़ेगा, मिकाडोको अपने वैयक्तिक जीवनमें भारी आपदा सहनी पड़ेगी।

हिन्दचीनमें लड़ाई उग्ररूप धारण करेगी। बाओदाई का भाग्यसूर्य अस्त होता हुआ प्रतीत होगा। अरब-इजराइल विवाद जारी रहेगा। इजराइलकी शक्ति और प्रभाव दोनों बढ़ेंगे। ईरान सोवियत रूसके अधिक निकट होकर रहेगा। मिश्रमें ब्रिटेन-विरोधी प्रदर्शन और दंगे होंगे। एक महान् मिश्री राजनीतिज्ञका स्वर्गवास होगा। तुर्की अन्तर्राष्ट्रीय तनी और कसी रस्सी पर चलनेका सफल अभिनय करेगा और दोनों पक्षोंको अपने से नाराज न होने देगा।

रूस

नवम्बर-दिसम्बर सोवियत रूसके लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। रूसकी राशि कुम्भ है। इस वर्ष सूर्यग्रहण भी इसी राशिमें होगा। राहुका कुम्भमें संक्रमण देशके अन्दर उन शक्तियोंको जन्म देगा, जो अधिनायकत्वको चुनौती देंगी। मंगल सूर्य ग्रहण विन्दुमें जनवरी १९५३ में संक्रमण कराता है। यह रूसके जीवनमें नाजुक समय होगा। रूस और अमरीकाके बीच आदर्शों और विचारों की खाई पहलेके समान बनी रहेगी। रूसके एक महान् नेताकी मृत्यु होना इस वर्ष सम्भव है। रूसी विदेशी विस्तारका लक्ष्य पहलेके समान रहेगा। परन्तु उसका ध्यान विशेषरूपसे अपने और अपने अनुवर्ती देशोंके आन्तरिक विकास पर केन्द्रित होगा। कहा जाता है कि हिटलर और माओत्सेतुंग दोनोंकी जन्म तिथि २० अप्रैल १८९३ ई० है। अतः बहुत सम्भव है कि स्तालिन और माओ आगे चल कर एक दोनोंसे घृणा करें। १९५२ रूस और चीन दोनोंके लिए भयावना वर्ष होगा। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें सोवियत रूस संकट उत्पन्न करता रहेगा। परन्तु अब उसका सितारा मन्द हो चुका है। दक्षिणमें रूस कम्युनिज्मका प्रसार करनेका प्रयत्न करेगा। भारत पर अपनी इच्छा भी लादना चाहेगा। बर्लिन प्रकरण पुनः उठाया जायगा, परन्तु अन्तमें कोई न कोई निर्णय हो जायगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति इस सीमा तक बिगड़ जायगी कि युद्ध छिड़ता हुआ प्रतीत होगा, पर विश्व-युद्ध न छिड़ेगा।

ब्रिटेन

यूरोपमें अव्यवस्था बनी रहेगी। ब्रिटेन और दक्षिण अफ्रिकाके बीचका सूक्ष्म सम्बन्ध चन्द्रग्रहण के समय छिन्न-

भिन्न हो जानेकी सम्भावना है। ब्रिटेनको भारी आर्थिक विपत्तिका सामना करना पड़ेगा। परन्तु इस विपत्तिसे वह पार हो जायगा। मंगल-शनिके विरोधके समय गङ्गा-जमुनी मन्त्रीमण्डल बननेकी सम्भावना है। अमरीकाके साथ राजनीतिक मतभेद बढ़ेंगे। राजाका स्वास्थ्य कुछ बिगड़ेगा। राजपरिवारके किसी वृद्ध व्यक्तिकी मृत्यु होगी। संक्रामक रोग फैलने और बहुत लोगोंके मरनेका भय है।

यूरोप

जर्मनीकी अवस्था अस्थिर रहेगी। पश्चिम जर्मनीमें हड़तालें होंगी और श्रम अशान्ति बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति संकटापन्न रहेगी। जर्मन सेनाका निर्माण होगा। बाल्कन और पूर्वीय जर्मनीमें भी अशान्तिके कुछ चिन्ह दिखाई देंगे। पर अवस्था १९५० की तुलनामें अच्छी ही रहेगी। अमरीका और रूसके बीच चल रहे विचार-युद्ध में बर्लिन सदा विवादका प्रश्न रहेगा। पेरिसमें राजनीतिक क्रान्ति होनेकी सम्भावना है। सरकारें बदलती रहेंगी। युद्ध सामग्री तैयार करनेके कारखानों और ट्रांसपोर्टेशन सर्विसमें उग्र हड़तालें होंगी। स्पेन और ब्रिटेनके बीच तनाव बढ़ेगा। युगोस्लेवियामें राजनीतिक हत्याएं होनेका भय है। ग्रीस इस साल पुनः संकट-स्थल बना रहेगा। सिसलीको भूकम्पसे भारी हानि पहुंचेगी। आस्ट्रियामें भी अशान्ति रहेगी। १९५१ में बर्लिन, डार्डेनल्स और जिब्राल्टर प्रकरण सबका ध्यान अपनी ओर खींचेंगे। बेल्जियमको अनेक हड़तालोंका सामना करना पड़ेगा। पोलैण्ड और हंगरीमें राजनीतिक हत्याएं होंगी।

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका

इस वर्ष संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी ग्रहस्थिति अच्छी नहीं। फारमूसाको लेकर चीनी-अमरीकी विवाद अनिवार्य दीखता है। १९५१ के अन्त और १९५२ के आरम्भमें सम्भव है, रूस और अमरीकाके शासक सेनाको तैयार रहनेका आदेश दें। भयानक और विनाशक अस्त्रोंका निर्माण होगा। शस्त्रास्त्रोंका उत्पादन बढ़ेगा। सुदूरपूर्व की समस्या प्रेजीडेण्ट ट्रूमैनके लिए सिरदर्दका कारण बनी रहेगी। चीनके प्रति अमरीकी नीति गलत सिद्ध होगी। अमरीकाका रूसके साथ शस्त्र-युद्ध छिड़ जानेका भी योग हो सकता है। सितम्बरमें श्रम-समस्या सुलझ जावेगी। वर्षके प्रारम्भमें कोयलाकी खानोंमें हड़ताल हो सकती है। प्रेजीडेण्ट ट्रूमैनका भाग्य बुरा नहीं। ग्रहणके बाद सम्भव है कांग्रेस और ह्वाइट हाऊसके बीच परराष्ट्र नीतिमें मतभेद उत्पन्न हो जाय। सम्भव है सैनिक शिक्षाके सम्बन्धमें कांग्रेस कोई कानून बनावे। मंगलके मिथुन और धनुमें जाने पर अपराधोंकी लहर आवेगी। उग्र हिंसा और उत्पात होने का भय है।

१९५१ का वर्ष यद्यपि अशान्ति, अभाव, चिंता, विपत्ति और संकटोंका रहेगा, परन्तु तीसरा विश्व-युद्ध न छिड़ेगा, केवल यही एक बात इस वर्षमें मानव समाज को शान्ति और सन्तोष देगी।

सूक्ति-सुधा

यदृच्छयोपपन्नेन सन्तुष्टो वर्तते सुखम्। नासन्तुष्टस्त्रिभिर्लोकैरजितात्मोपसादितैः॥
पुंसोऽयं संसृतेर्हेतुरसन्तोषोऽर्थकामयोः। यदृच्छयोपपन्नेन सन्तोषो मुक्तये स्मृतः॥
(श्रीमद्भा० ८।१९।२४-२५)

जो कुछ प्रारब्धसे मिल जाय, उसी से सन्तुष्ट रहने वाला मनुष्य सुखी होता है। परन्तु जिसका मन अपने वशमें नहीं है, वह तीनों लोकोंका राज्य पानेसे भी सन्तुष्ट नहीं होता। अतएव वह सुखसे वञ्चित रहता है। धन और भोगोंसे सन्तोष न होना ही जीवके संसार बन्धनमें पड़नेका कारण है। तथा जो कुछ प्राप्य हो जाये उसीमें सन्तोष कर लेना मुक्तिका कारण माना गया है।

द्वादश राशिफल सं० २००८ वि०

[लेखक:—श्री नन्दकिशोर 'गर्ग' ज्योतिर्विशारद]

यह राशि फल गोचरग्रहोंके मानसे हैं। मंदगति बड़े ग्रह गुरु शनि आदिका ही विचार इसमें हो सका है। छोटे शीघ्रगामी ग्रहोंका विचार इसमें संभव नहीं था। तथापि यत्र-तत्र विशेष महत्वपूर्ण ग्रहस्थितिका विचार किया गया है। वास्तविक फलादेश तो जन्मपत्रकी ग्रह-स्थितिको गोचरसे समन्वय करने पर हो सकता है। फिर भी अवश्यंभावी फल तो होकर रहते ही हैं। यहां मोटा फलादेश ही दिया जा रहा है।

मेष

वर्ष लग्नमें श्रीमानकी राशि भाग्य स्थानमें होकर स्वामी दशममें है अतः यह वर्ष प्रगतिकारक दिखाई देता है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उत्तम है। पंचममें केतु कुछ मानसिक अशांति कारक है, साथ ही संतानकी ओरसे भी कुछ चिंता उत्पन्न कर सकेगा। कौटुम्बिक दृष्टिसे सुखप्रद रहेगा। संतानकी ओरसे मार्गशीर्षमें सावधानी रखना चाहिए। स्त्री सुख ठीक रहेगा। अगस्त सितम्बरमें कुछ रोगोपद्रव रहेगा। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष लाभकारी तो है परन्तु व्यय भी साथ ही अधिक होगा। इसका कारण वर्षारम्भमें या वर्षान्तमें घरमें धार्मिक कार्य या विवाहादि आनन्दोत्सव होगा। वर्षमें अनेक लाभ प्रद छोटी मोटी यात्रायें भी होंगी। स्थायी संपत्ति संबंधी विषय भी संतोष जनक रहेगा, परंतु वर्षके पूर्वार्धमें जो कार्य अटके रह जावेंगे वे, उत्तरार्धमें पूर्ण होंगे। शत्रु उत्पात भी होंगे, परंतु शनि राहुकी स्थिति उनके शीघ्र ही नाशकी सूचना है। उल्टा लाभ होगा। राजकीय सेवा वाले आनन्दमें रहेंगे। श्रमजीवी वर्गके लिये तो वर्ष एकंदर ठीक है, परन्तु मेष राशि वाले कुछ रोगों व शत्रुओंसे त्रस्त रहेंगे। व्यापारी वर्गको लाभ होगा, विद्यार्थी एवं विद्याजीवी वर्गको विशेष परिश्रमकी सलाह है। महिला वर्गके लिये कुछ कष्ट कारक है, विशेष कर प्रसूतिकालमें। धार्मिक पुरुषोंके लिये ज्ञान साधना एवं सिद्धि प्राप्त कराने वाला वर्ष है।

वृषभ

वर्ष सं० २००८ प्रवेश लग्नमें आपकी राशि दशमस्थ है, स्वामी व्ययमें चर राशि गत है। इस वर्ष भर आपके केंद्र व त्रिकोणोंमें श० रा० मं० के० चारों पाप ग्रह हैं। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष बड़ा अच्छा है। गत वर्ष आपको जो विशेष परिश्रम करना पड़ा है तथा पिछले वर्षोंमें जो हानियां उठानी पड़ी हैं उनकी पूर्ति करने वाला वर्ष है, परन्तु स्वास्थ्यकी ओरसे सावधानी रखना चाहिए। ऊष्ण पदार्थोंका सेवन, तथा अग्नि व जल भय आदिसे बचना चाहिए। कौटुम्बिक दृष्टिसे मिश्रित फल होंगे। बड़े भाई संतान, व स्त्रीकी ओरसे सुख रहेगा, उनकी उन्नति होगी परंतु वर्षके द्वितीय चतुर्थांशमें पारिवारिक कलह, संतान को पीड़ा तथा यात्रामें कष्टके योग बनेंगे। स्थाई संपत्ति संबंधी मामले भी कुछ कष्टके साथ सुलझते जायेंगे। घरके किसी वृद्ध व्यक्तिके अभावसे आप पर जिम्मेदारीका बोझ लद सकेगा। राजकीय सेवा वालोंको वर्ष मध्यम है। मध्यके छः मास विशेष सावधानीके हैं। श्रमजीवी वर्ग आनन्दमें रहेगा, नवीन रोजगारकी प्राप्ति व सुख होगा। व्यापारी वर्ग अच्छा धन कमावेंगे, परन्तु नवीन स्थाई संपत्ति खरीदना वर्षान्तके पूर्व लाभदाई न रहेगा। विद्यार्थी वर्गको स्वास्थ्यकी सावधानी रखनी चाहिये। वक्ता, वकील व उपदेशकोंके लिये उन्नतिका वर्ष है। महिला वर्गको वर्ष साधारण है। बच्चोंके स्वास्थ्यकी चिंता कुछ कष्टकारक रहेगी। प्रथमार्धमें द्रव्य प्राप्तिके विशेष योग हैं, अतः कुछ सुअवसरसे लाभ लेवें। सट्टा लाटरीसे भी लाभकी आशा है।

मिथुन

वर्ष लग्नसे राशि लाभस्थानमें स्व-स्वामी व पराक्रमेश सूर्यसे युत है अतः यह प्रगति कारक वर्षकी सूचना है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परन्तु आरंभिक छः मास तक घात

पातका भय रहेगा अतः सावधानी रखियेगा। नेत्र पीड़ा रक्त रोग तथा सिर या मुंहमें पीड़ाके योग हैं। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष व्यय कारक है। गत वर्षके ऋण आदिमें कुछ भार हल्का होगा। राजकीय पक्ष प्रबल है। व्यापार धंधा, आजीविका ठीक चलेंगी व लाभ भी उत्तम होंगे। वर्षका द्वितीयार्ध भाग अच्छे आर्थिक लाभ देगा। स्थाई संपत्ति संबंधी झगड़े शीघ्रतासे सुलझने लगेंगे। यात्रादि योग आवेंगे उस समय सावधानी रखें। कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष साधारण है। माताको कष्ट, संतान की प्राप्ति व उत्कर्ष, तथा द्वितीयार्धमें स्त्रीसे विशेष सुख रहेगा। शत्रु पक्ष गुप्त रीतिसे प्रयत्न शील रहेगा। अतः चोरी व धोखेबाजोंसे सावधानी रखें। राजकीय सेवासे संबंधित लोगोंको वर्षका प्रथमार्ध साधारण रहेगा, द्वितीयार्ध लाभप्रद रहेगा। आरम्भमें अधिकारियोंका कोप हो सकता है। अतः सचेत रहें। मध्यमें स्थानान्तर आदि योग बनेंगे। श्रमजीवी वर्ग तथा निम्न कोटिके कर्मचारी सुखका अनुभव करेंगे। व्यापारी वर्ग मजेमें रहेंगे। विशेषकर जल सम्बन्धी या तरल पदार्थोंसे विशेष लाभ रहेगा। अचानक द्रव्य प्राप्ति एवं सट्टा लाटरीसे भी सम्बन्धित लोग वर्षके द्वितीयार्धमें लाभ कमावेंगे। विद्यार्थी एवं विद्याजीवी वर्ग सुख पावेंगे। वकील, न्यायाधीश लोगोंको विशेष लाभ होगा। महिलाओंको प्रथमार्ध साधारण तथा द्वितीयार्ध शुभ रहेगा। धार्मिक लोगोंकी उत्साह वृद्धि होगी।

कर्क

वर्ष लग्नसे श्रीमान्‌की राशि व्यय स्थानमें है। गुरु राशिसे इस वर्ष अधिकतर भाग में नवम रहेगा। शनिका बुरा प्रभाव अब समाप्त हो गया है, षडग्रही भी पराक्रम स्थानमें है अतः श्रीमान्‌का यह वर्ष शुभ एवं उन्नति कारक रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मन प्रसन्न रहेगा। कौटुम्बिक दृष्टिसे कुछ चिन्ता हो सकती है। अपनेको बोलनेमें सावधानी रखना चाहिए। आर्थिक लाभ वर्षमें सन्तोष जनक होंगे, परन्तु निरर्थक व्ययसे सावधानी रखना चाहिए। इस वर्ष धन्धा रोजगारमें उन्नति होगी, पराक्रमकी वृद्धि होगी। स्थाई संपत्ति संबंधी अनेक लाभ होंगे। कृषि, पशु तथा भूमि लाभ-दायक रहेगी, श० मं० की स्थिति वर्षारंभसे ही सब कष्टोंकी निवारक एवं प्रगतिका लक्ष्य कर रही है। अगस्त, सितम्बर, मासमें घात पात, अग्नि आदिसे सावधानी रखना चाहिए। वर्षमें आरम्भिक ६-७ मासमें तीर्थ यात्राके योग आवेंगे। राज्यपक्ष सामान्य रहेगा। व्यापारी वर्गको काले बाजारसे दूर रहनेकी सलाह है। श्रमजीवी वर्गकी आशातीत उन्नति होगी। राजकीय कर्मचारी, वकील, व सैनिकवर्ग पदवृद्धि, सम्मान व आर्थिक लाभ पावेंगे। संतान प्राप्तिके लिए वर्ष उत्तम है। प्रथमार्धमें पुत्र तथा उत्तरार्धमें कन्या जन्मकी सम्भावना होगी। विद्यार्थी वर्ग इस वर्षमें अच्छी सफलता पावेंगे। धार्मिक लोगोंके प्रिये शुभ समय है। महिलाओं को आनन्द वृद्धि कारी वर्ष रहेगा।

सिंह

वर्ष लग्नमें ही आपकी राशि इस वर्ष है, अतः यह वर्ष सब विषयोंमें परिवर्तन उत्पन्न करेगा। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे वर्ष प्रथमार्धमें कष्ट कारक है। विषैले जन्तुओंसे भय, कफ तथा वायुके रोग होंगे। शीतसे पूरी सावधानी रखना चाहिये। कुटुम्ब स्थानमें शनि कुटुम्ब वृद्धिका सूचक है। आर्थिक लाभ सन्तोषजनक रहेंगे। राज्यपक्ष प्रबल रहेगा। स्थायी सम्पत्ति, पशु भूमिसे सन्तोषजनक लाभ होंगे। अर्थहीन व्ययकारक यात्रायें होंगी। शत्रु उपद्रव होंगे। पत्नीकी रुग्णताके योग वर्षके प्रथमार्धमें बन रहे हैं। वर्षका उत्तरार्ध, आर्थिक, राजकीय, संतान व अन्य सभी विषयोंमें सुख उत्पन्न करेगा। वर्षके द्वितीय चतुर्थांशमें नेत्र सम्बन्धी रोग, चोर, अग्निभयसे सावधानी रखना चाहिये। राजकीय कर्मचारी, सेना सम्बन्धी लोगोंके लिए वर्ष उत्तम है। व्यापारी वर्गको द्वितीयार्ध लाभकारी है। श्रमजीवी वर्गको धनिकोंसे संघर्ष करना पड़ेगा। पर सफलता वर्षान्त तकही सम्भव है। महिलाओंको वर्ष शुभ नहीं कहा जा सकता। पतिसे बेबनाव, विद्रोह तथा गुप्त रोगोंका भय है। प्रसूती सम्बन्धी स्त्री वर्ग विशेष कष्टका अनुभव करेगा। धार्मिक पुरुष दिवाली बाद ही कष्टोंसे मुक्त होंगे। विद्यार्थी वर्गको जो १९५१की परीक्षाओंमें बैठ रहे हैं, अपने स्वास्थ्य तथा अभ्यास दोनों विषयकी सावधानी रखना चाहिये। शिक्षक व पाठक वर्ग भी ध्यान रखें तो अच्छा है, क्योंकि समय उनको कुमार्गमें ले जाने वाला है।

कन्या

इस राशि वालोंको वर्ष स्वास्थ्यकी दृष्टिसे शुभ रहेगा। वर्षके अन्तिम तीन मास कुछ कष्टप्रद हो सकेंगे । कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष मध्यम है। स्त्री सुख उत्तम रहेगा। माता पितासे भी सुख व उन्नतिके योग बन रहे हैं। सन्तान सम्बन्धी चिंताओंका नाश होगा । नवरात्रसे दिवाली तकका समय मित्रोंसे बेबनाव, व किसीकी मृत्यु के समाचार लाने वाला रहेगा। राज्य पक्ष प्रबल है। धार्मिक विषयमें अनियमितता न आने दीजिये । शत्रुके उपद्रव वर्ष भर तक चलेंगे, परन्तु अन्त आपके ही पक्षमें रहेगा। वर्षके द्वितीयार्धमें शास्त्र यात्राओंका निषेध करता है। साथ ही उधर स्थाई संपत्ति या किसी बड़ी योजना में पूंजी फंसाना या जोखिम उठाना हानिकर होगा। राजकीय सेवक, पदाधिकारी लोग यश, उन्नति व द्रव्यका लाभ लेंगे, व्यापारी वर्ग अनेक व्यवसायमें, लाटरी, सट्टा हाजर सभी प्रकारसे लाभ लेंगे। विद्यार्थी वर्गको सफलता का समय है, परन्तु स्वास्थ्यसे सावधानी रखना चाहिये। श्रमजीवी वर्गके लिए वर्ष अशुभ उहीं है। धार्मिक पुरुष त्रस्त रहेंगे। महिलाओंको वर्षका प्रथमार्ध कुछ शुभ है, द्वितीयार्ध अशुभ है। कृषक वर्ग आनन्द प्राप्त करेगा।

तुला

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे वर्ष अच्छा रहेगा। वैसाख मास तक कुछ गिर पड़ने, चोट लगने या रक्त विकार और अग्निभय हो सकता है, पर छठा गुरु सब अरिष्टोंको दूर कर देगा। वर्ष आर्थिक दृष्टिसे मध्यम है। मध्यम श्रेणिके लोग ऋणके कारण दुःखी रहेंगे। साहूकार लोगोंकी वसूली पूरी नहीं होती दिखती। फिर भी काम-काज चलता रहेगा। कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष चिन्ताकारक है। स्त्री सन्तानकी ओरसे चिन्ता उत्पन्न होनेके योग बने हुए हैं। तात्पर्य यह कि प्रथम दो ढाई मास कुछ अशांतिप्रद समझिये। इस समय आप अनेक बातोंके रहस्यको समझेंगे व मित्रोंकी परीक्षा भी हो जायेगी। साझेदारीमें धन्धा करेंगे तो हानिके योग होंगे। राजकीय पक्ष प्रबल रहेगा। परन्तु अगस्त सितम्बर मास सावधानीके हैं। महत्वपूर्ण मुकदमें इन दो माहमें टाल देना चाहिये। व्यापारी वर्गको उन्नतिका समय है। राज्य द्वारा भी धंधों में सहायता प्राप्त होगी। मान सम्मान ठीक रहेगा। राज्य सेवी लोगों को उक्त दो मासमें अधिकारियोंका कोप भाजन बनना पड़ेगा। स्थानान्तर या अवनतिके योग बन सकते हैं, अतः ऐसे समयमें भाषा संयत रखना चाहिये। विद्यार्थी वर्गको कठिन परिश्रम करना चाहिये। वर्षका द्वितीयार्ध लाभप्रद रहेगा। श्रमजीवी वर्गके लिए सामान्य है। महिलाओंको भी द्वितीयार्ध ही ठीक रहेगा। धार्मिकजन वक्ता एवं वकील समुदाय सामान्य उन्नति करेंगे। कार्तिक मासमें इस राशि वालोंको सभी प्रकारकी सावधानी रखना चाहिये।

वृश्चिक

यह वर्ष स्वास्थ्यकी दृष्टिसे मिश्रित फल देने वाला है। कौटुम्बिक सुख श्रेष्ठ रहेगा। संतान जन्म या संतानों का उत्कर्ष होगा। श्वसुराल पक्षसे मदद मिलेगी। व वैशाख-ज्येष्ठमें वहां विवाहादि मंगल कार्योंमें शामिल होंगे। आर्थिक आय भी होगी। परन्तु पत्नीका स्वास्थ्य थोड़ी बहुत चिंता पैदा करता रहेगा। राज्यपक्ष निर्बल है। स्थाई सम्पत्तिके लिए वर्ष शुभ नहीं जा सकता। नवीन जायदादके क्रय-विक्रयमें न पड़ें तो ही अच्छा है। नीच मनुष्योंकी सलाहसे बचते रहिये। यात्रादि कार्योंमें व्यय भी वर्षमें अधिक होगा। भाई व मित्रोंसे सन्तोष रहेगा। उनकी भी उन्नति होगी। वर्षका द्वितीय चतुर्थांश यात्रा, धार्मिक कार्य, नेत्र कष्ट आदि विषयोंमें कष्टकारक रहेगा। व्यापारी वर्गको असन्तोष रहेगा। मालका समय पर क्रय-विक्रय न होनेसे इच्छित लाभ न हो सकेगा। कामकाज भी कुछ साधारण ही चलता दिखता है। विद्यार्थी, वकील, शिक्षक, धर्मगुरु आदि विद्याजीवी वर्गको उन्नतिका समय है। श्रमजीवी वर्ग विशेष सुख एवं लाभका अनुभव करेगा। कृषक वर्ग भी गत वर्षकी हानियोंकी पूर्ति कर लेंगे। राजकीय शासकोंको कार्तिक मास संकटका दीखता है, किसी अपयश या भारी दोषारोपणसे त्रस्त होंगे, परन्तु बुद्धिमानीसे व शांतिसे काम लेंगे तो अंतमें सफल होंगे। महिलाओंको वर्ष सन्तानका देने वाला है। अनेक मनचाही सुन्दर वस्तुओंकी प्राप्ति होगी।

धनुः

वर्ष लग्नसे यह राशि पंचममें गई है। परन्तु स्वामी अष्टममें रहेगा। अतः वर्ष मिश्रित फल ही देने वाला है। वर्षके प्रथम भागमें गुरु चौथा है व दशम शनिसे केन्द्र योग कर रहा है, जो उन्नतिके अनेक प्रयत्नोंका लक्ष्य करता है। परन्तु वास्तविक लाभ दिवाली बाद ही शुरू होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। वर्षके द्वितीय चतुर्थांशमें सम्हलने की आवश्यकता रहेगी। कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष सुन्दर है। कुटुम्बकी वृद्धि होगी। विवाहेच्छु युवक-युवतियोंके मनोरथ पूर्ण होंगे, तथा धनी सुसराल मिल कर सन्तोषजनक लाभ होंगे। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष प्रगतिकारक है। नये कामोंका आरम्भ होगा। किसी जमानतके चक्करमें न आवें। न ऋण उधार दें या लें। सन्तानकी ओरसे क्वचित् पीड़ाका भय है। अगस्तसे अक्टूबर मध्य तकका समय अशांतिप्रद है। मातुल पक्षमें किसी अशुभ घटना की सम्भावना है। राज्यपक्ष प्रबल है। गतवर्षके मामले मुकद्दमोंमें इस वर्ष निश्चय विजय होगी। स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी परिवर्तन द्वितीयार्धमें ही लाभप्रद हो सकेंगे। श्रमजीवी वर्गको यह वर्ष उन्नति सूचक रहेगा। अचानक लाभके योग हैं। औषधि, विष तथा लौह व्यवसायी अच्छे लाभमें रहेंगे। चांदी, कपड़ा तथा अन्य धातु व्यवसाइयोंको काम सावधानीसे करना चाहिये। विद्यार्थी वर्गको सफलताका वर्ष है, पर स्वास्थ्यके हेतु खेल कूद व मनोरञ्जनका ध्यान रखना आवश्यक है। राज्य कर्मचारी उच्च पद, वेतन वृद्धि आदिकी निश्चयात्मक आशा रख सकते हैं। वकील, न्यायाधीश, डाक्टर आदि लोग उन्नति करेंगे। व्यापारी वर्ग भी लाभमें रहेंगे। धार्मिक जन (विशेषकर हठयोगी, निम्बार्क सम्प्रदायी) अपने प्रयत्नोंमें सफलता पावेंगे। महिलाओंको समय शुभ है। गर्भवती स्त्रियोंके लिए प्रसूतीके एक माह पूर्वसे ही सावधानीकी आवश्यकता रहेगी। शत्रु नाश होगा।

मकर

आपकी जन्मराशि व वर्षप्रवेश कालिक चन्द्र राशि दोनों एक हो गई हैं, तथा वर्ष लग्न षष्ठ हैं। स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्षका प्रथम भाग ठीक है, अन्तिम तीन मास में कुछ साधारण कष्ट हो सकेंगे। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष उन्नति कारक है, परन्तु राहु अधिक व्यय, चोरी व व्यर्थमें धन नाश कारक है, अतः विवेकसे काम लेने वाले लाभमें रहेंगे। व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा, श्वेत वस्तु एवं पश्चिम दिशा विशेष लाभकारी है। कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष कष्टकर है। सन्तानकी ओरसे रोगादि की चिन्ता रहेगी। स्त्री पक्ष प्रथमार्धमें ठीक है। भाई व मित्र पक्षकी उन्नति होगी व प्रेम रहेगा। विवाहेच्छु लड़के-लड़कियोंके विवाह वर्षारम्भमें हो जावेंगे। पांतीदार, पत्नी तथा मुकद्दमोंके लिए लाभकारी वर्ष है। स्थायी-सम्पत्ति सम्बन्धी कार्य दिवालीसे पूर्व ही निपटानेके प्रयत्न कीजिये। मकान, जायदाद या पशु खरीदनेके लिए वर्ष बुरा नहीं है। राज्यपक्ष शत्रुनाश कारक है, परन्तु विशेष लाभकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि धन खर्च करनेसे ही शत्रुनाश होने वाला है। विद्यार्थी वर्गको १९५१ की परीक्षाओंमें अवश्य सफलता होगी। शिक्षक, धर्म-गुरु, वक्ता लोगोंकी उन्नति होगी। श्रमजीवी कार्य एवं धन दोनों प्राप्त करेंगे। व्यापारी वर्गके लिए मिश्रित फलोंका वर्ष है। महिलाओंको वर्ष सुख सन्तोष देने वाला है। धार्मिक पुरुषोंको उन्नति होगी। सट्टा, लाटरी दिवाली बाद लाभ दे सकेंगे।

कुम्भ

जन्मराशि वर्षलग्नके सप्तम स्थानमें है। जन्म राशि पर राहुका परिभ्रमण, लग्नेश शनिका अष्टममें जाना स्वास्थ्यकी दृष्टिसे शुभ नहीं है। वर्षके मध्य तीन मास क्वचित् कष्टकर होंगे, जबकि छठा मङ्गल नीचका रहेगा। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष शुभ कारक रहेगा। स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी लाभ भी ठीक रहेंगे। कौटुम्बिक दृष्टिसे वर्ष उन्नति कारक है। कुटुम्बकी वृद्धि, भ्रातृस्थानका स्वामी कर्म स्थानका अधिपति हो, वर्षारम्भमें सुखस्थानीय है, अतः व्यापार, रोजगारकी उन्नति, सुख तथा भाइयोंकी उन्नतिका समय है। स्त्री संतान सुख ठीक रहेगा, सन्तानको छोटी-मोटी पीड़ाएं चलती रहेंगी। मिष्ठान्न पदार्थों एवं अपचसे सावधानी रखें। इस राशिके विद्यार्थी वर्ग एवं बालकोंके उत्साह, विद्या, सफलता तथा उत्तम स्वास्थ्यका समय है। छोटे-छोटे (दो वर्षसे कमके) बालकोंको अग्निका या गिर पड़नेका भय रहेगा, महिलायें

यदि अपने व बच्चोंके स्वास्थ्यकी सावधानी रखेंगी तो वर्ष सन्तान ज्ञान, धर्म, द्रव्य प्राप्ति एवं मनोभिलाषाओंकी पूर्ति करने वाला अनुभव करेंगी। व्यापारी वर्ग अच्छे लाभमें रहेगा। अचानक द्रव्य प्राप्ति, सट्टा, लाटरीसे लाभ व तेजी-मंदी द्वारा उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। लौह, तैल, पशु फैशनेबल वस्तुओंके व्यवसायी कुछ हानि कर सकते हैं, अतः सावधानीसे काम करें। विशेष संग्रह की (पकड़ रखनेकी) मनोवृत्तिका त्याग करें। वकील, न्यायाधीश, शिक्षक, धार्मिक लोग तथा अन्य विद्याजीवी वर्गके लिए वर्ष प्रगति व द्रव्य लाभ कारक है। श्रमजीवी वर्ग कुछ दुःखका अनुभव करेगा। सामान्यतः इस राशि वालेको वर्ष अशुभ नहीं है।

मीन

आपकी राशि वर्षके अष्टम स्थानमें हैं। स्वास्थ्यके लिए शुभ वर्ष है। कुछ मानसिक अशांति रहेगी। आर्थिक दृष्टिसे वर्ष उन्नति कारक है। पराक्रम की वृद्धि, व्यापार, रोजगारमें वृद्धि; भाग्योदय आदि शुभ फल कारी है। कौटुम्बिक दृष्टिसे उन्नति होगी। भाइयोंसे लाभ हो। पुत्र प्राप्ति तथा संतानोंका उत्कर्ष करेगा। राज्य पक्ष संतोष जनक रहेगा। भूमि, स्थायी सम्पत्ति आदि मामलोंमें लाभ रहेगा। मुकद्दमोंमें जीतके योग रहेंगे। बारहवां राहु अधिक व्यय व बंधन कारक होता है। अगस्त सितम्बर मास संतान पक्ष को कष्ट कर होंगे। कार्तिक मासमें इस राशि वालोंको स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताएं हों, शत्रु पक्ष भी चैतन्य हो सकेगा। सावधानी रखना चाहिए। इस राशि वाले विद्यार्थी फैशन एवं आनन्दकी वस्तुओंमें बहुत समय नष्ट न करें तो सफलता हो सकती है। व्यापारी वर्ग सुखी रहेंगे। मार्केटसे सावधान रहना चाहिये। राजकीय सेवा वाले लोग स्थानान्तर आदि योग का अनुभव करेंगे, परन्तु आर्थिक लाभके साथ। अन्यथा अपने स्थान पर ही सुखी रहेंगे। विद्याजीवी वर्ग उन्नति करेगा। कृषिकार अच्छी उपज व अन्य साधनों द्वारा प्राप्ति करेंगे। औषधि, विष, मादक पदार्थ सेवन करने वाले कष्ट व व्यवसाय करने वाले बन्धन पावेंगे।

★

❋ व्यापार रुखका साप्ताहिक विवरण ❋

[ले० ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य प्रो० श्रीगणेश विद्यासागर "दैवज्ञ"]

ता० १६ अप्रैल से १३ जुलाई १९५१ तक

ता० १६ से २२ अप्रैल तक (प्रथम सप्ताह)

ता० १५ को बुध वक्र होकर ता० १७ को अस्त हो गया है, चन्द्र केतुकी राशि युति और सूर्य मंगलकी युति चल रही है बुध ग्रह भले ही पीछे हटता हुआ पश्चिममें अस्त हो जावें। लेकिन भावोंमें रुई १५) १८) कालीमिर्च २०) ३०) चांदी शींगदाणा ऐरंडा ३) ४) कपासिया, गुवार, सौना, १॥) २) अलसी, सरसों २) २।) खोपरा, गेहूं ॥) १) भाव बढ़ते हुए प्रतीत होंगे। सौदागरों सावधान ! व्यापारीको चाहिये समयका वातावरण देख व्यापार करें करावें। ता० २१, २२ को बाजार दोनों तरफ चलता मंदीसे गुजरे तो आश्चर्य नहीं है।

ता० २३ से २९ अप्रैल तक (दूसरा सप्ताह)

ता० २३ को सूर्य मंगलकी पूर्ण दृष्टि होना मंदीका झटका ता० २४ के ३ बजे तक बतला देगा। ता० २५ चन्द्र मंगल वेध चांदी सुवर्ण, शेयर, सरसों, गुवारमें अच्छी तेजी लायेगा। अन्य योग भी ता० २५ से २६ तक हर वस्तु घटे भावोंमें माल पोते करो और तेजीके उछालेमें नफा लेते रहो, मतलब लेवा बेची—लेलीकी और गुल ज्यादे रहें, ढंगसे काम करने वालोंको दो पैसा कमाई का मिल जावें।

ता० ३० अप्रैलसे ६ मई तक (तीसरा सप्ताह)

राहु केतुने नक्षत्र परिवर्तन किया है, इससे तेजी ता० १ मई तक रह सकती है। ता० २ अप्रेल को चंद्र गुरु युति हर एक मार्केटको मंदीका रास्ता दिखाये बिना नहीं रहेगी, अपितु चांदी एरंडा मूंगफलीमें १॥) २) टूट जावेंगे। लेकिन ता० ४ के २ बजेसे बुधका सूर्यमें उदय होना, चन्द्र, सूर्य मंगलकी युति होना भावोंमें अच्छी तेजी, हर वस्तुमें जैसे शेयर, सरसों, गुड़, चांदी, सुवर्ण गुवारमें घट-बढ़ चलते असर तेजीका मालूम दे। ता० ५ को मिथुन राशि पर शुक्र देव आ रहे हैं वहां हर्शलसे राशि युति होगी, यह चांदीमें ४) ५) एरंडा ३) ३॥) सुवर्ण कपासिया १॥) २) अलसी तिल गुवार ॥) १) शेयर आईरन १) १॥) सरसों २) २॥) का व्यापार तेजीका करड़ा लिये। इस समय तेजी खेलना जिगर वालेका काम है, आप भी कलेजेमें व्यापार करनेकी करामात रखते हैं तो तेजी का दाव खेल जाइये। कभी खाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा अनुभूत योग है।

ता० ७ से १३ मई तक (चौथा सप्ताह)

योग संयोग तो यहां अच्छी तेजीके चल रहे हैं। वैसे तो ता० १७ तक घटे भावों पर माल खरीदमें रहना चाहिये (शेयर मार्केटोंमें ता० ५ से १५ तक एक लाईन तेजी चलेगी) लेकिन अन्य ग्रहोंके द्वारा सर्व वायदा वस्तुओंमें ता० ७ को तेजी तथा ता० ८ को मंदा रहनेकी सम्भावना है। भाव दोनों तरफ चले वहां घटे भाव माल पोते करनेमें रहना चाहिये। ता० ९ से १३ तक ऐसे योग हैं कि बुधका मार्गी होना चन्द्र शुक्रकी युती होना, गुरु चन्द्रकी दृष्टि होना भावोंको नीचा दिखानेमें रहेंगे, लेकिन मंदी ठहरेगी नहीं भाव बढ़ जावेंगे।

ता० १४ से २० मई तक (पांचवां सप्ताह)

मंगलकी चन्द्रसे प्रतियुति, केतुकी राशियुति ता० १४, १५ को उछाला दिखायेगी, ता० १६ से चन्द्र शनिकी युति गुरुसे इनकी प्रतियुति भावोंमें उछाला देकर झुकाव कर देगी। यहां ता० १६, १७ को समय देख मालका बेचाण बोल दो भाव घटेंगे, लेकिन धीरे-धीरे आगे उछाले बेचाण करो, घटने पर नफा बढ़ालो। योगोंमें बात गोल-मोल पाई जाती हैं, परन्तु शतरंजीय चालसे ग्रहोंके तर्फ रुई चांदी गुवार सुवर्ण सरसों शेयरके भावोंमें सिकस्त लगी है, तेजीका तूफान भले ही आ जावे लेकिन परिणाम ता० १७ से २३ तक मंदीका ही दिखाई देगा।

संयोगोंकी समझसे आंकड़ेकी तफावत देख व्यापार सब तरहसे सोच समझकर करना।

ता० २१ से २७ मई तक (छठा सप्ताह)

ता० २१ से २३ तक चन्द्र सूर्यकी दृष्टि गुरुकी देख रेखमें होना भावोंको उंचे-नीचे रूपमें दिखावेगी। ता० २३ को घटे भावोंमें माल पौते करो, मंगल ग्रहकी ऐसी मंशा है देर भले ही हो जावे अंधेर नहीं होगा। ता० २४ से २७ तक इन चार दिनोंमें तेजीका तूफान मालुम देगा। अतएव यहां कालीमिर्च १५)२०) ऊन १०) १२) शेयर टाटा ४०) ४५) आईरन १।) १।।) सोना कपासिया ।।।) १) चांदी, एरंडा, मूंगफली ३) ४) अलसी गुवार १) १) सरसोंमें १।।) २) का असर तेजी का दिखाई दे जावे तो कोई बड़ी बात नहीं होगी।

ता० २८ मईसे ३ जून तक (सातवां सप्ताह)

ता० २८ को जो तेजी आवे उसमें मालका बेचाण करो ता० २६ से ता० २ तक भावोंमें मंदीका रियेक्सन कर्कके शुक्र द्वारा जाना पाया जाता है। आकड़ें समयानुसार समझना। ता० २ संध्या समय चांदी सुवर्ण शेयर सरसों गुवार, मूंगफली खरीदो भावोंमें ता० ३ के बंद होते बाजार तक एक बार तेजीका नफा मिले तो खा लेना चाहिये। यदि मुनाफा दिखाई नहीं दे तो तेजीका सौदा नहीं करना चाहिये।

ता० ४ से १० जून तक (आठवां सप्ताह)

ता० ४ से ७ तक मार्केट दोनों तरफ चलता हुआ तेजीमें दिखाई देगा। ता० ७ को आये उछाले मालका बेचाण करो। अचानक अच्छी मंदी आकर रहेगी। इस सप्ताहमें द्विविधा-गणित गणनामें आई है इसमें एक बात लिख देना समझदारी नहीं। ता० ८ से मन्दीका मार्का देखते इस मौके आवश्यकता समझो तो मालका बेचाण करो। आशा है चांस ठीक उतरेगा।

ता० ११ से १७ जून तक (नौवां सप्ताह)

ता० ११ को आखिरी मंदी समझो तो ता० १२ से घटे भावोंमें माल पोते करो। चन्द्र राहुकी युति तथा शनिसे षडष्टक योग होना भावोंमें ता० १३ से १६ तक तेजीकी एक लाईन चलादें। यहां आंकड़े लिखना तो उचित नहीं, कारण न तो एक धारी तेजी न मंदी ग्रहोंके द्वारा खास दिखाई देती है। ऐसी ओछी बातके भी आंकड़े लिखना कोई महत्व नहीं रखता। आप भाव स्थिरताजनक बाजार रुख देख चार व्यापारी मस्वरा करके ही व्यापार करें।

ता० १८ से २४ जून तक (दशवां सप्ताह)

मंगलवारी पूर्णिमा शुक्रका अश्लेषा पर आना हर्षल बुधकी युति, सूर्य बुधकी युति होना ता० २३, २४ को मंगल हर्शलकी युति होगी वह हर प्रकारके वायदा मार्केटोंमें मंदीका झटका देगी। प्रथम ता० १८ से २० तक मार्केट चांदी सुवर्णमें दोनों तरफ मार्केट चलते यदि मंदी आजावे तो २० ता० को सायंकाल माल पौते करो। ता० २१ को बाजारमें अचानक तेजी आयेगी। शेयर, सरसों, मूंग, मूंगफली, दालचीनी, खोपरा चांदी सुवर्ण सबमें तेजीका योग वेध द्वारा बताया गया है। सौदागरों सचेत रहिये।

ता० २५ जूनसे १ जुलाई तक (ग्यारहवां सप्ताह)

चन्द्र गुरुकी राशि युति होना, शुक्रका सिंह राशि पर आना इत्यादि दुतर्फा योग चल रहे हैं। ता० ३० को नैपच्यून मार्गी होगा। ग्रहोंका पूर्ण निर्णय होनेके बाद लिखा जाता है कि ता० २५ से २७ तक दोनों तरफ बाजार चलकर कुछ मंदा आ जावेगा। ता० २८, २६ को तेज रहेगा, ता० ३० को उछाला मामूली आकर अच्छी मंदी चांदीमें ४) ५) टके की ता० ५ जुलाई तक आजानी चाहिये। यहां ता० ३०, १, २, को अच्छी मंदी रहेगी।

ता० २ से २८ जुलाई तक (बारहवां सप्ताह)

ता० २ को मन्दी रहकर बाजार ता० ३ से तेजी, ता० ४ तक मामूली बढ़ जावेगी। ता० ५, ६, ७ को अच्छी मंदी आवेगी। कारण गुरुवारको चन्द्र दर्शन होगा। सूर्य, बुध पर गुरुकी दृष्टि, शुक्र चन्द्रकी युति ता० ८ को होगी, इन ग्रहोंका पूर्ण योग बन जावेगा अतः मंदी अचानक आवेगी।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

सं० २००८ की ग्रहपरिषद्का विचार

संसारकी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितिका विवेचन

[लेखकः—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

—:(०):—

इस वर्ष संसारकी भावी परिस्थिति पर शास्त्रीय विचार व्यक्त करनेसे पूर्व हम विज्ञ पाठकोंको स्मरण करा देना उचित समझते हैं कि आजसे तीन वर्ष पूर्व १५ अगस्त १९४७ के दैनिक 'नवभारत' 'वीर-अर्जुन' आदि पत्रों और 'श्रीस्वाध्याय' के सातवें वर्षके प्रथम अङ्क (सं० २००४ आश्विन) में हमने स्वतंत्र भारतीय उपनिवेशका जन्मलग्न देकर जो विस्तृत विचार प्रकट किये थे वे अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुके हैं। उसी लेखमें हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि —

"हम तो अपने पूर्व कथनानुसार आने वाले इन दश वर्षोंमें सं २०१४ वि० तक संसारमें चारों ओर भय एवं अन्धकारको ही विस्तृत हुआ देख रहे हैं। इसमें भी संवत् २००८ से २०१२ विक्रमी तकका समय भारतके लिए विशेष अनिष्टप्रद प्रतीत हो रहा है। ......सं० २००८से २०१२ तक सारे देशमें अराजकता फैलेगी। ......भारत संपूर्ण रूपेण सुखी एवं समृद्ध संवत् २०१५ सन् १९५८ के बाद ही हो सकेगा।"

इस भविष्यवाणीमें हमने तीन वर्ष पूर्व जिस अराजकताका उल्लेख करते हुए संसारके लिए अरिष्टप्रद समय का स्पष्ट संकेत किया था वह समय इसी वर्षसे प्रारम्भ हो रहा है, अतः इस वर्षकी ग्रहस्थितिका सम्यक् विश्लेषण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

षष्ठिसंवत्सरोंमें इस वर्षका नाम 'क्रोधी' है। तथा वर्षके सम्राट (राजा) शनि वर्षारम्भमें वक्री हैं। ये शनि देव वर्षलग्नमें धनभावमें तथा जगत्-लग्नमें लग्नेश होकर अष्टमभावमें गये हैं। वर्षलग्न कुण्डलीमें संसारकी आत्मा मन और ज्ञान सुख—सूर्य चन्द्र गुरु अष्टम स्थानमें शनि से दृष्ट हैं। जगल्लग्न और वर्षलग्नमें राहु केतुकी स्थिति है। इन सब योगोंका सम्यक्तया विश्लेषण करनेसे ज्ञात होता है कि यह वर्ष संसारके लिए महान् ऐतिहासिक अकल्पित घटनाओंको लेकर आ रहा है। संसारमें कहीं भी सुख शान्ति उत्साह आनन्द विवेक और सद्भावनाकी वस्तु दिखाई नहीं देगी। सारा संसार क्रोध लोभ राग द्वेष ईर्ष्या स्वार्थपरता और कृतघ्नतादि दोषोंसे अभिभूत रहेगा। समस्त संसारकी राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति सङ्कटग्रस्त रहेगी। कई प्रकारके षड्यंत्र एवं कूटनैतिक चालें राजनीतिमें चलेंगी। वर्षके पूर्वार्धमें किसी विश्वविख्यात महापुरुषका निधन होगा। धार्मिक सामाजिक राजनैतिक क्रांति, युद्धभय, रोग, दुर्भिक्ष, आंधी, तूफान, अवर्षण, अतिवर्षण, उत्पात, अपघात, अग्निकाण्डादि अनेक अप्रिय घटनाएं घटित होंगी। कोई सौभाग्यशाली परिवार ही ऐसा होगा जो इस वर्षमें पूर्णरूपेण सुख शान्ति एवं समृद्धिका अनुभव कर सके। छोटे बड़े राष्ट्रोंमें तो 'मत्स्यन्याय'की दुर्नीतिके कारण घात-प्रतिघात चलेगा ही। साथ ही प्रत्येक प्रान्त नगर ग्राम घर और यहां तक कि भाई-भाई, पिता-पुत्र और पति-

---

ता० ९ से १३ जुलाई तक (तेरहवां सप्ताह)

ता० ९ की ग्रह गणनासे चन्द्र राहुकी दृष्टि है अतः यहां अचूक निशान तेजीका है। ता० १० को मार्केट दोनों तरफ चक्कर खाता रहेगा। ता० ११ से १३ तक मंदीकी राय ग्रहोंकी मिटिंग द्वारा पास हो गयी है। मेरे ध्यान से अब मंदी खेलना अच्छा है।

पत्नी तकमें भी कई जगह अकारण क्रोध लोभ एवं मनोमालिन्य बढ़कर कलहका कारण बनेगा। किसी भी राष्ट्र जाति वा परिवारमें वास्तविक स्वास्थ्य स्नेह सद्भावना नहीं रहेगी। संसारके प्राणियोंका मन और आत्मा सदा सङ्काकुल बना रहेगा, और आर्थिक सङ्कटसे प्रजा त्रस्त रहेगी। यथा—

क्रोध्यब्दे त्वखिलालोकाः क्रोधलोभपरायणाः।
विषमस्थं जगत्सर्वं व्याकुलं दारुणाद्रणात्।
देशे ज्ञातौ कुटुम्बे च क्रोधी क्रोधपरस्परम्।"

युद्ध रक्तपात उत्पात अविवेक एवं विनाशकारक ग्रह शनि मंगल हैं। इसीकारण शनिका नाम यम वा 'काल' भी है। और संसारमें सुख शान्ति एवं विवेकका विस्तारक ग्रह गुरु है। इसीलिए गुरुका नाम 'जीव' है। शनि इस वर्ष कन्या राशिमें वर्षारम्भमें वक्री हैं और वर्षका अधिनायकत्व भी इन्हें ही प्राप्त हुआ है। अतः ये अपने क्रूरस्वभाव एवं विपरीतगामी (वक्री) होनेके कारण 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' के अनुसार संसारके प्राणियों और विशेषकर शासन-सूत्र संचालकोंको युद्धकी ओर प्रवृत्त कर विनाशोन्मुख बनानेका भरसक प्रयत्न करेंगे। फलतः छोटे-मोटे आक्रमण, गृहकलह, सांप्रदायिक संघर्ष, राजनैतिक धार्मिक क्रान्ति, दुर्भिक्ष, दुर्घटना एवं उत्पातादिका उपक्रम वर्षारम्भसे ही प्रारम्भ हो जायेगा।

कन्या मीने यदा सौरी राशौ वक्रं प्रजायते।
नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते॥

गुरुदेव इस वर्ष पूर्ण बली हैं। वर्ष भर ये अपनी राशि मीनमें रहकर शनिकी विनाशोन्मुखी प्रवृत्तियों पर पूर्ण दृष्टि रखते हुए विश्वयुद्धको रोकनेका पूर्ण प्रयत्न करेंगे। इस वर्ष जहां शनिने संसारको विनाशकी भट्टीमें धकेलनेका दुराग्रह किया है, वहीं गुरु देवने रक्षाकी प्रतिज्ञा भी साथ ही कर ली है अतः इस वर्ष इन दोनों महाग्रहोंका द्वन्द्व संघर्ष (प्रतियोग) चलता रहेगा। साथ ही सेनापति मंगल बलवान् होकर भाग्य एवं पराक्रम स्थानमें स्थित है अतः संसारके सभी शक्तिशाली राष्ट्र सैन्यबल संगठन शस्त्रास्त्र निर्माण एवं रक्षापंक्तिको सुदृढ़ बनानेके कार्यमें विशेष व्यस्त रहेंगे। इस वर्ष कार्तिक शु० १४से पौष शु० १०तक (ता० १२ नवम्बर १९५१ से ६ जनवरी १९५२ ई० तक) कन्या राशिमें शनि मंगलका योग होगा, वरुण (नेपच्यून) भी साथ ही हैं, अतः इस अवधिमें युद्धका वातावरण विशेष प्रबल बनेगा। साम्यवाद और साम्राज्यवादमें कहीं प्रत्यक्ष संघर्ष छिड़जानेकी सम्भावना है। अरब राष्ट्रोंमें कम्यूनिष्ट आतङ्क बढ़ेगा। मिश्र सीरिया लेबनान ईराक ईरानादिमें गृहयुद्ध गुप्तषड्यन्त्र और हत्याकांड होंगे। भारतकी पूर्वोत्तरीय सीमा भी सुरक्षित नहीं रहेगी। अनेक प्रांत दुर्भिक्ष और आर्थिक सङ्कटग्रस्त रहेंगे। लिखा भी है—

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमो यदा स्थितौ।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्य विवर्जिता॥
यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षयः॥

इस प्रकार उक्त ग्रहस्थिति व योगायोगोंको देखते हुए हम स्पष्ट कह सकते हैं कि गुरुदेव शान्ति सद्भाव व संरक्षणके जितने अधिक प्रयत्न करेंगे, शनिदेव उतने ही उग्ररूपमें विश्वव्यापी संघर्षको जागृत कर संसारके राजनैतिक गगनमण्डलमें विप्लवकी घटाएं गहराते हुए विश्वमें भयंकर विक्षुब्ध वातावरण उपस्थित कर भयंकर मानव संहारका बीजारोपण करनेका प्रयत्न करेंगे। शनिदेव विश्वव्यापी दावाग्निकी लपटोंको जितने उग्ररूपमें भड़काना चाहेंगे, गुरुदेव शांतिकी शीतल जलधाराओंकी अजस्र बोछारसे उन विनाशकी लपटोंको शांत करनेके लिए कटिबद्ध हो जायेंगे। इस प्रकार समग्र संसार एक दूसरेके रक्तके प्यासे दो परस्पर विरोधी प्रतिहिंसक गुटोंमें विभक्त होता दीखेगा। इनकी इस बढ़ती हुई प्रतिहिंसक भावनाओं पर गुरुकी दिव्य शक्ति ही कुछ काबू पा जाय तो भले ही पा जाये। इसे स्पष्ट शब्दोंमें यों कह सकते हैं कि किसी दिव्य शक्तिकी प्रबल प्रेरणासे प्रभावित होकर समग्र एशिया संगठित स्वरसे श्वेताङ्ग शोषकोंके विरुद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ देनेका प्रयत्न करेगा। निश्चय ही साम्यवादकी बढ़ती हुई शक्तिका इसमें बहुत बड़ा हाथ होगा। परिणामस्वरूप एक बार तो संसारके सभी प्रमुख राष्ट्रोंके शासनचक्रमें एक अकल्पित उलट-फेर होनेका अवसर उपस्थित हो जायगा।

भारत

वर्ष वर्षेशलग्न भारतकी राशि और भारतीय गणराज्यके जन्मलग्न तथा वर्षलग्नको ग्रह स्थिति पर भलीभांति विचार करनेसे प्रतीत होता है कि यह वर्ष भारतके लिए भी महान् संकट एवं अकल्पित उलट-फेरका जायेगा। गतवर्ष हमने सं० २००७के पंचाङ्गमें गणराज्यकी जन्म-कुण्डली देकर पूरे दो पृष्ठोंमें भारतीय गणराज्यका विस्तृत भविष्य लिखा था। वहां 'आरम्भिक पांच वर्ष कठिनाईके'। शीर्षकके नीचे पृष्ठ ३५ पर स्पष्ट लिखा है कि—"इस गणराज्यके सामने अनेक विषम समस्यायें उत्पन्न करके कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित करेगा ...." इत्यादि। इस वर्ष भारतीय गणराज्यका जन्मलग्न मीन वर्ष कुंडलीमें अष्टम गया है। लग्नेश राज्येश गुरु भी सूर्यचन्द्रमाके साथ अष्टम (मृत्यु) भावमें विराजमान है, एवं शत्रुभावस्थ सिंह राशि वर्ष लग्नमें गयी है। यह योग इस वर्षमें भारतीय प्रजा एवं जनतंत्री शासनको विषम स्थितिमें फंसाने वाला है। किसी प्रधान पुरुषको अपघात योग भी बन रहा है। गणराज्यके द्वितीय वर्षलग्नका फल गताङ्कमें दिया जा चुका है।

भारतीय कांग्रेस और भावी चुनाव

अनेक प्रकारकी दलबन्दियां और कांग्रेसके विरुद्ध वातावरण होने पर भी इस वर्ष सं० २००८में कांग्रेसकी राज्यसत्ता स्थिरप्राय रहेगी। क्योंकि ता० २३ मार्च १९५१को गुरु अपने स्वक्षेत्र मीनराशिमें आ जावेगा, यह कांग्रेस और भारतीय प्रजातन्त्रके जन्मलग्न एवं राज्य स्थान का अधिपति है, तथा जनतन्त्रके द्वितीय वर्षलग्न में भी राज्यभावमें रहेगा। अतः हमारी यह धारणा है कि राजकीय पूर्व सूचनानुसार मार्च अप्रैल १९५१में प्रजातन्त्री भारतके प्रथम चुनाव हो नहीं सकेंगे। शनि कोई वैधानिक या व्यवस्था सम्बन्धी अड़चन उपस्थित कर देगा। अतः अवधि आगे बढ़ जायेगी। इस वर्षके उत्तरार्धमें आश्विन कृष्णामावास्या ता० १ अक्टूबरके बाद जब गुरुसे उच्चराशिस्थ बुध और सूर्य शनि नेपच्यूनका प्रतियोग होगा, उस समय नये चुनाव होनेकी सम्भावना है। परन्तु वहां पर भी आश्विन शुक्लपक्ष १३ दिनका है और मंगल-शनिका द्विर्द्वादश तथा गुरु शनिका प्रतियोग है। यह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितके संकटापन्न होनेका द्योतक है, अतः यहां भी अवधि कुछ आगे बढ़ जाना सम्भव है। मार्गशीर्ष, पौष मासमें कन्या राशिमें शनि-मंगलका योग भारतमें भी सभी प्रांत वर्ग एवं सम्प्रदायके लिए संघर्षमय जायगा। वहां दलबन्दियां बढ़ेंगी, अधिकारारूढ पक्ष तथा प्रजा पक्षमें घोर संघर्ष चलेगा। और कई जगह अवांछनीय अप्रिय प्रसंग उपस्थित होंगे। इसी समय निर्वाचन युद्धकी अधिक सम्भावना है। यहां कांग्रेस जन्म-लग्न पर शनि की दृष्टि है, परन्तु गुरुदेव अपने घरमें बलवान् बैठे हैं, अतः निर्वाचन युद्धमें स्वल्प बहुमतसे कांग्रेसको सफलता मिल जाना सम्भव है। वर्षके उत्तरार्धमें केन्द्रीय एवं प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलमें उलट-फेर होगा। यथावसर विरोधीदल भी सत्तारूढ होनेमें सक्षम होगा। आन्तरिक संघर्षसे कांग्रेसकी शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती जावेगी। उक्त अवधिमें निर्वाचन न होने पर कांग्रेसकी सफलता संदिग्ध हो जावेगी।

यह तो हम दो वर्ष पूर्व सं० २००७ के पंचागमें भी स्पष्ट बता चुके हैं कि "सिंहके शनिमें ही कांग्रेसको साढे साती प्रारम्भ हो चुकी है। यह कांग्रेसकी लोकप्रियताको न्यून करके अनेक आंतरिक शत्रु उत्पन्न करेगी। पारस्परिक फूट, दलबन्दियां और व्यक्तिगत वैमनस्य कांग्रेसके शरीरको जर्जरित कर डालेगा।" तदनुसार यही हुआ और हो रहा है। साढ़ेसातीके आरम्भिक २॥ वर्ष गत भाद्रपद मास (सं० २००७)में समाप्त हो चुके हैं, गत १४ सितम्बर १९५०को कांग्रेसकी जन्मराशि पर शनि लोहपाद पर आया है, यह भी शुभ नहीं है। साथ ही अक्टूबर १९५०से शनि महादशामें राहुका अन्तर प्रारम्भ हुआ है। यह जुलाई १९५३ तक रहेगा। इस अवधिमें कांग्रेसकी आंतरिक स्थिति बहुत बिगड़ेगी, मित्र शत्रु बन जावेंगे। कांग्रेसियोंमें ही इतना मतभेद एवं आंतरिक कलह बढ़ जायगा कि समानांतर दल गुटबंदी के रूपमें सामने आयेगा। साढ़ेसातीके अंत और शनिमें राहु अन्तरका उत्तरार्ध कांग्रेसके वर्तमान रूपको सर्वथा परिवर्तित कर डालेगा।

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा ।
राज्यपीड़ा द्रव्यनाशः पुत्रद्वेषं रिपोर्भयम् ॥
क्रूरस्य खेटस्य दशान्तराले क्रूरग्रहस्यान्तरजा दशा चेत् ।
शत्रूद्गमोऽर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति वदेन्नराणाम् ॥

सं० १६४३में कांग्रेसके औरसपुत्रों द्वारा ही कांग्रेस के वयोवृद्ध वर्तमान शरीरको हानिकी आशंका है। अतः उक्त पुत्रद्वेषादि अरिष्टोंसे कांग्रेसको आत्मरक्षार्थ सावधान रहनेकी आवश्यकता है। इस वर्षके उत्तरार्धमें भी किसी प्रभावशाली नेताके वियोग व पदत्यागसे कांग्रेसकी हानि होनेकी संभावना है।

काश्मीर

काश्मीरके सम्बन्धमें तीन वर्ष पहले जो हमने लिखा था वही होता आ रहा है। यह वर्ष भी काश्मीरकी प्रजा के लिए सुख शांतिकारक नहीं है। भारत पाकिस्तानके लिए काश्मीर एक विषम समस्या बन कर प्रतिस्पर्धाका अखाड़ा बना रहेगा। अखण्ड काश्मीर भारतीय संघमें नहीं रह सकेगा। गिलगित आदि महत्वपूर्ण स्थानोंमें पाकिस्तानी षड्यन्त्र प्रकट होंगे। कुछ विदेशी शक्तियोंकी वक्रदृष्टि काश्मीर पर लगी रहेगी। कुछ भाग पर संयुक्त-राष्ट्रसंघ अपना शासन थोपनेका प्रयत्न करेगा। वर्षारम्भ में और कार्तिकसे आगे कन्याके शनि-मंगल योगमें काश्मीर में भयानक विग्रहकी सम्भावना है।

प्रांत और राज्यसंघ

बंगाल, पंजाब, उड़ीसा, मद्रास, बम्बई, आसाम, बिहार, मध्यभारत और बृहद् राजस्थानकी राजनैतिक और आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहेगी। प्रजामें असंतोष बढ़ेगा। मंत्रिमंडलोंमें भी उलट-फेर होगा। गतवर्ष हमने सं० २००७के पंचांगमें लिखा था कि—"पंजाब और राजस्थान पर शनिका कुप्रभाव होनेसे शासन सम्बन्धी अनेक कठिनाइयां आवेंगी।......राजस्थानके शास्त्री-मंत्रिमंडलके विरुद्ध जनतामें तीव्र असंतोष फैलेगा।" तदनुसार जो परिस्थिति उत्पन्न हुई, वह पाठकोंको विदित ही है। अब हमारी यह धारणा है कि वर्षारम्भसे पूर्व सं० २००७में ही राजस्थानी शास्त्री मंत्रिमंडलका भंग हो जाना अवश्यम्भावी है। (यह भविष्यवाणी गत आश्विनमासमें लिखी गई थी, गत पौषमें शास्त्रीमंत्रि-मंडल भंग हो चुका है।) श्री जयनारायणजी व्यासकी जन्मकुंडलीमें मेष लग्न है और चन्द्रमा वृषभका उच्चस्थ है। चतुर्थ शनिका जो उन पर कुप्रभाव था, वह गत १६ सितम्बर ५०को समाप्त हो चुका है। माघ शु०में व्यास जीको ५३ वां वर्ष प्रवेश होगा। इस वर्ष राज्यस्थ चन्द्रमा उच्चका है और राज्येश त्रिकोणमें है, अतः इस वर्ष व्यास जीकी लोकप्रियता बढ़ेगी और वे पुनः राजस्थानमें गौरव-पूर्ण स्थान प्राप्त करेंगे। राजस्थान और मध्यभारतमें सामन्त जागीरदार एवं राजन्यवर्गके क्षत्रिय लोग संगठित होकर वर्तमान कांग्रेसी शासनसे असन्तुष्ट प्रजाको अपने पक्षमें लानेका प्रयत्न करेंगे। पीड़ित प्रजा एवं विरोधी तत्वोंकी सहानुभूतिसे उन्हें यत्रतत्र सफलता भी दिखाई देगी। पंजाब, राजस्थान पर इस वर्ष भी शनिका कुप्रभाव रहेगा। पंजाबमें राजनैतिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक समस्या चिन्ताजनक रहेगी। भार्गवमंत्रिमण्डलको वर्षके उत्तरार्धमें अपना अस्तित्व स्थिर रखना कठिन हो जायेगा। बंगाल, मद्रास, बिहार, आसाम, उड़ीसा, सौराष्ट्रमें वर्षा वायुतूफानादिसे हानि और दुर्भिक्षका भय रहेगा। वर्ग-कलह और कम्यूनिस्ट आतङ्क भी बढ़ेगा। युक्तप्रांत, राजस्थान, मध्यभारत और मध्यप्रदेशमें खनिज पदार्थों का उत्पादन अधिक होगा। बड़े-बड़े कारखाने, फैक्टरियां खुलेंगी और कई प्रकारकी नवीन योजनाएं सामने आवेंगी। परन्तु व्यक्तिगत द्वेष व दलबन्दीके कारण शासन कार्यमें कठिनाई आकर प्रगतिमें बाधा पड़ेगी। किसी प्रभावशाली व्यक्तिके वियोग वा स्थानान्तरित हो जानेसे प्रान्तकी बड़ी हानि होगी। विन्ध्यप्रदेश हिमाचल प्रदेश और पेप्सू संघके शासनसे प्रजा असन्तुष्ट रहेगी। वर्षान्तमें इन प्रदेशोंके शासकोंको अपना अस्तित्व स्थिर रखना कठिन हो जायेगा।

आसाममें जहां गत वर्ष प्रकृति-प्रकोपसे भयानक विनाश हुआ है, वहां ध्वस्त स्थलमें भूमि जल एवं उत्पादनोपयोगी कुछ ऐसी वस्तुएं प्राप्त हो सकेंगी जो भविष्य में जीवनके लिए वरदान सिद्ध होंगी। नैपाल भूटान हिमाचलप्रदेश बंगाल बिहार और आसामके सीमान्त प्रदेशोंमें कम्यूनिष्ट आतङ्कसे सैनिक हलचलें होंगी। पंजाब और

पटियाला संघमें साम्प्रदायिकता एवं भाषाके प्रश्नको लेकर प्रजामें असन्तोष बढेगा । पंजाबकी नई राजधानी का निर्माणकार्य द्रुतगतिसे नहीं चलेगा ।

पाकिस्तान

पाकिस्तानी जनतामें घोर असन्तोष रहेगा । पड़ोसी राष्ट्रों (भारत अफगानिस्थान पठानादि) से पाक-सरकार सशंक रहकर "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः" के अनुसार अपनी सारी शक्ति सैन्य संगठन और युद्धकी तैयारीमें लगा देगा । आन्तरिक विद्रोहसे पाकिस्तानकी नींव हिलने लगेगी । मियां लियाकतअलीकी कूटनीति आरम्भमें आतङ्कपूर्ण रहेगी । सीमाप्रदेशों पर कई जगह सैनिक कार्यवाहियां होंगी । गुण्डों द्वारा लूट खसोटसे जनधनका नाश होगा । भारतको हानि पहुँचानेके गुप्त षड्यंत्र होंगे, परन्तु पाकिस्तान इस कूटनीतिमें सफल न हो सकेगा । परिस्थितियोंसे बाध्य होकर मियां लियाकतअली सभी समस्याओंको शान्तिपूर्ण ढंगसे सुलझाने और सहयोगके लिए हाथ पसारनेका आडम्बर रचेंगे, पर उनकी वाणी और कर्ममें सामंजस्य नहीं रहेगा । अतः भारतको अपने इस 'पड़ौसी मित्र' की गतिविधिसे सदा सतर्क रहना चाहिए । प्रधान व्यक्ति और सेनापतिको अपघात योग भी है ।

व्यापार

इस वर्ष व्यापारमें भारी उथल-पुथलके योग बन रहे हैं । शनि गुरु प्रत्येक वस्तुके भावोंको नीचा गिराने और अकल्पित मन्दी लानेके प्रयत्नमें हैं तो नेपच्यून शनिका गुरुसे प्रतियोग मन्दीमें बाधक बन जाता है । अतः आई हुई मंदीको स्थिर नही रहने देगा । चांदी सोना रुई आदि वस्तुओंमें अकल्पित तेजी मंदीके झटके आयेंगे पर वह अधिक दिन ठहर नहीं सकेंगे । कुछ दिनके बाद बाजार फिर पूर्व स्थितिमें आ जावेंगे । कुछ एक पदार्थोंका कण्ट्रोल इस वर्ष समाप्त हो जायगा और कुछका ढ़ीला पड़ेगा । इस वर्षके आरम्भिक तीन मासोंमें ही एक बार चांदी सोना रुई आदिमें अकल्पित मंदी आजावेगी और आगे फिर एक दम तेजी आकर भाव पहलेकी स्थितिमें ही पहुँचने लगेंगे । तेजी मंदीका ठीक निश्चित समय विशेष सूक्ष्म रूपसे स्थानाभावके कारण यहां नहीं दिया जा सकता । जो सज्जन विशेष जानना चाहें वे पत्र व्यवहार करें । खाद्य वस्तु अन्नादि पदार्थोंकी मंहगाई रहेगी । वस्त्र भी सस्ते नहीं होंगे । कहीं अनावृष्टि तो कहीं शीत ओले टिड्डी आदि प्रकृतिप्रकोपसे उत्पादनमें हानि होगी । अतः कई प्रान्तोंमें दुर्भिक्ष जैसी स्थिति रहेगी । सरकारके लाख प्रयत्न करने पर भी खाद्यसमस्या इस वर्ष समाधान कारक नहीं बन सकेगी । वर्षारम्भमें ही आवश्यकतानुसार गेहूं चावलादि अन्नका संग्रह करने वाले लाभ में रहेंगे । शेयर बाजारोंमें ज्येष्ठ तक मंदीका रुख, आषाढ़से भाद्रपद तक तेज, आश्विन कार्तिकमें मंदा, मार्गशीर्ष पौषमें तेज और आगे काफी मंदीके योग हैं । तिल तेल एरण्डा अलसी मिर्च मसाला सोना चांदी गेहूं चणा मूंग मसूर उड़द ज्वार आदि धान्यके भाव चैत्रसे ज्येष्ठ तक मन्दी में जाकर आषाढसे तेजीके योग हैं । घृत गुड़ शक्करमें आषाढ तक तेजी बाद मन्दी और कार्तिकसे माघ तक पुनः तेजी चलेगी । लोहा स्टील तैलके भाव ज्येष्ठसे श्रावण तक और मार्गसे माघ तक प्रायः तेज रहेंगे । माघ सं० २००७में टाटाडिफर्ड शेयर २००० होना संभव है । (गत माघमें यह २०००से ऊपर जा चुका था ।)

भारतका वायुमण्डल वर्षा आदि

इस वर्षके ग्रह योग भी देशके वायु मण्डल और पर्जन्यके लिए शुभ नहीं हैं । आषाढ़ तक वायु जोरसे चलेगी, आंधियां अवेंगी । वैशाख ज्येष्ठमें कई जगह भयंकर अग्निकाण्ड होंगे । पर्वतीय प्रदेशी जंगलोंमें भी दावानलसे हानि होगी । कहीं खण्डवृष्टि तो कहीं अति वृष्टिसे फसलमें हानि होगी । टिड्डीका भय रहेगा । अनेक नदियोंमें बाढें आवेंगी । राजस्थान मद्रास पूर्वीय बंगाल उड़ीसा कौंकण और सौराष्ट्रमें नियमित वर्षा न होनेसे हानि होगी । कई प्रान्तोंमें महामारी विषूचिकातिसारादि रोगोंसे प्रजाकी हानि होगी । अपघात दुर्घटना और सांसर्गिक रोग अधिक होंगे । पशुओंमें भी रोग बढेगा । चैत्र वैशाख कार्तिक मार्गशीर्ष पौष और फाल्गुन मासमें राष्ट्रके लिये कोई कष्टप्रद घटना घटेगी । आषाढ़ शुक्ल और श्रावण मासमें कहीं अतिवृष्टि होगी और कहीं वर्षा

तीन मासकी दैनिक तेजीमन्दी

[लेखकः— श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्]

वैशाख मास

वदी २ सोम ता. २३ अप्रैल—चांदी, गुड़, रुई, तेज

वदी ३ मं० ता० २४ अप्रैल – चांदी मन्दी।

वदी ४ बुध ता० २५ अप्रैल—चांदी मन्दी होके तेज। गुड़ मन्दा, सरसों, अन्न तेज।

वदी ५ बृह० ता० २६ अप्रैल—चांदी, गुड़, सरसों तेज।

वदी ६ शु० ता० २७ अप्रैल—कुछ मन्दी होके तेज। तथा गुड़, सरसों, अन्न तेज।

वदी ७ शनि ता० २८ अप्रैल—चांदी कुछ मन्दी के साथ तेज।

वदी ९-१० सोम० ता० ३० अप्रैल – चांदी तेज, घटाबढ़ी बहुत हो, रुई तेज।

वदी ११ मं० ता० १ मई—चांदी मन्दी हो अन्न सरसों तेज।

वदी १२ बुध ता० २ मई—चांदी गुड़, सरसों अन्नादि सब वस्तु मन्दी।

वदी १३ बृह० ता० ३ मई—सब वस्तु मंदी।

वदी ३० शनि ता० ५ मई – चांदी, सरसों आदि वस्तु तेज होके मन्दी।

सुदी १ सोम ता० ७ मई—चांदी तेज होके मन्दी। सरसों अन्नादि वस्तु तेज होके मन्दी।

सुदी २ मं० ८ मई—रुई तेज। चांदीमें घटाबढ़ी हो। अन्न तेज।

की न्यूनता रहेगी। भाद्रपदमें भारी वर्षा होगी, कई जगह बाढें आवेंगी। श्रावणसे माघ तक पूर्वोत्तर और पश्चिमी विभागोंमें भूकम्पादि उत्पात व प्रकृति-प्रकोपसे यत्रतत्र हानि होगी। इस अवधिमें दक्षिण - उत्तर प्रान्तोंमें रोग विस्तार भी होगा। राष्ट्रके कर्णधारों और विदेशोंका भविष्य जाननेके लिए हमारा सं० २००८ का 'श्रीविश्वविजय पंचांग' देखिये। ['श्री विश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

सुदी ३ बुध ता० ९ मई—गेहूं, जौ, चना, अन्न तेज। तिलहन मंदी हों, चांदी तेज।

सुदी ४ बृह० ता० १० मई—चांदी मन्दी। गुड़, खांड, शक्कर मंदे।

सुदी ५ शु० ता० ११ मई—चांदी, गुड़ शक्कर, सरसों गेहूं, जौ, चना रुई तेज।

सुदी ६ शनि. ता० १२ मई—चांदी, गेहूं तेज।

सुदी ८ सोम ता० १४ मई—कुछ मंदे होके चांदी तेज। गुड़, सरसों अन्न मंदे।

सुदी ९ मं० ता० १५ मई—रुई तेज, चांदी तेजी से मन्दी हो।

सुदी १० बुध ता० १६ मई—चांदी तेज।

सुदी ११ बृह० ता० १७ मई—रुई गुड़ तेज।

सुदी १२ शु० ता० १८ मई—चांदी रुई मंदी होके तेज।

सुदी १३ शनि ता० १९ मई—तिलहन आदि पदार्थ तेज, चांदी तेज।

सुदी १५ सोम० ता० २१ मई—चांदी तेज।

सुदी १६ मंगल ता० २२ मई—चांदी तेज।

वैशाख मासका सारांश

इस मास चांदीमें कई बार घटा-बढ़ी निकलेगी। गुड़ खांड शक्करके भावोंमें रुख मन्दा रहेगा। सरसों, लाहा आदि तिलहनमें रुख तेजी का रहेगा। अन्नादि पदार्थ सुदी पक्षमें तेज रहेंगे। लाल, काली मिर्च तेज हों।

ज्येष्ठ मास

वदी १ मं० ता० २२ मई—यहांसे प्रत्येक वस्तुमें इकतरफा लाइन चलेगी।

वदी २-३ बुध ता० २३ मई—चांदी तेज, परन्तु तेजी अधिक न ठहरे।

वदी ४ बृ० ता० २४ मई—घटाबढ़ी।

वदी ५ शु० ता० २५ मई—चांदी मन्दी होकर तेज। गुड़, सरसों, अन्न, रुई तेज।

वदी ६ शनि ता० २६ मई—चांदी, सरसों, रुई तेज।
वदी ८ सोम ता० २८ मई—चांदी, सरसों मन्दी।
वदी ९ मंगल ता० २९ मई—चांदी मन्दी।
वदी ११ बृह० ता० ३१ मई—चांदी मन्दी, रुई तेज गुड़ सरसों तेज अन्न मन्दे।
वदी १२ शु० ता० १ जून—चांदी मन्दी।
वदी १३ शनि ता० २ जून—चांदी तेज होके रातको मन्दी।
वदी १५ सोम० ता० ४ जून—चांदी, गुड़, सरसों, रुई मन्दी अन्न तेज।
सुदी १ मं० ता० ५ जून—चांदी मन्दी, रुई अन्न तेज।
सुदी २ बुध ता० ६ जून—रुई तेज, चांदी मन्दी, गुड़, अन्न मंदे।
सुदी ३ बृह० ता० ७ जून—चांदी, गुड़, अन्न मंदे।
सुदी ४ शु० ता० ८ जून—सरसों, रुई, अरहर मसूर तेज, चांदीमें घटबढ़।
सुदी ५ शनि ता० ९ जून—चांदी तेज होके मन्दी, गुड़ तेज, अन्न तेज।
सुदी ७ सोम० ता० ११ जून—अन्न तेज, चांदी तेज।
सुदी ८ मं० ता० १२ जून—चांदी, सरसों तेज।
सुदी ९-१० बृह० ता १४ जून—चांदी तेज।
सुदी ११ शु० ता० १५ जून—प्रत्येक वस्तु तेज।
सुदी १२ शनि ता० १६ जून—चांदीमें घटबढ़ होके मंदी। गुड़ मन्दा, रुई तेज।
सुदी १४ सोम० ता० १८ जून—घटाबढ़ी चले।
सुदी १५ मं० ता० १९ जून—चांदीमें इकतरफा लाइन निकलेगी।

ज्येष्ठ मासका सारांश

इस मास ५ मंगलवार हैं। चांदीमें ८) १०) या १५), गुड़में २), सरसों लाहामें २) मनकी घटबढ़ निकलेगी। कई वस्तुओंमें कई बार जोरदारतेजी-मंदी होगी। लाल वस्तु, मसूर, गेहूं, लालमिर्च आदि तेज हों। गर्मी अधिक पड़ेगी। अग्निकांड अधिक हों, हैजेकी बीमारी फैले।

आषाढ़ मास

वदी १ बुध ता० २० जून—चांदीमें घटाबढ़ी होके मन्दी, अन्न तेज।
वदी २ बृह० ता० २१ जून—चांदी मंदी।
वदी ३ शु० ता० २२ जून—चांदी, रुई, अलसी, सरसों, गुड़ अन्न तेज।
वदी ४ शनि ता० २३ जून—चांदी, गुड़, सरसों, अन्न तेज। यहांसे चांदीमें अच्छी घटाबढ़ी निकलेगी।
वदी ७ सोम० ता० २५ जून— चांदी तेज होके रात को मन्दी, रुई अन्न मंदा।
वदी ८ मं० ता० २६ जून—चांदी तेज होके मन्दी।
वदी ९ बुध० ता० २७ जून—चांदी मन्दी होके तेज, अरहर, मटर तेज।
वदी १० बृह० ता० २८ जून—सोना, चांदी, अन्न, मटर, अरहर, सरसों, गुड़, खांड तेज।
वदी ११ शु० ता० २९ जून—सोना, चांदी, गुड़ आदि रस, सरसों मटरा तेज।
वदी १२ शनि ता० ३० जून—रुई मन्दी, अरहर, मटरा तेज, अन्न, चांदी मन्दे, सरसों रस तेज।
वदी १३ सोम० ता० २ जुलाई—चांदी तेज होके मन्दी, गुड़ मन्दा, अलसी सरसों तेज।
वदी १४ मं० ता० ३ जौ०—चांदी, गुड़, अलसी, लाल वस्तु, सरसों, अन्न, रुई तेज।
वदी ३० बुध ता० ४ जौ०—प्रत्येक वस्तु घटाबढ़ीके साथ मन्दी।
सुदी १ बृह० ता० ५ जौ०—चांदी मन्दी, गुड़ मंदा, घी, तेल तेज।
सुदी २ शु० ता० ६ जौ०—चांदी, सोना, अरहर, रसकस सरसों, रुई तेज।
सुदी ३ शनि ता० ७ जौ०—प्रत्येक वस्तु मन्दी।
सुदी ५ सोम० ता० ९ जौ०—घटाबढ़ी रहे।
सुदी ६ मं० ता० १० जौ०—प्रत्येक वस्तु तेज होके मन्दी।
सुदी ७ बुध ता० ११ जौ०—सोना, चांदी, अरहर, सरसों तेज।

सुदी ८ बृह० ता० १२ जौ०—चांदी मन्दी।
सुदी ६ शु० ता० १३ जौ०—चांदी, गुड़, अन्न, तेज, रुई मन्दी।
सुदी १० शनि० ता० १४ जौ०—अलसी, सरसों तेज। अरहर, गुड़ मन्दे।
सुदी १२ सोम० ता० १६ जौ०—वस्तु खरीदने का दिन है।
सुदी १३-१४ ता० १८ जौ०—चांदी, गुड़, अन्न तेज।
सुदी १५ बुध ता० १६ जौ०—प्रत्येक वस्तु मन्दी।

आषाढ़ मासका सारांश

इस मास वर्षा खूब होगी। चांदीमें घटाबढ़ी खूब निकलेगी। अलसी, सरसोंमें १) रु० मनकी मन्दी आने पर खरीदना चाहिये। गुड़, शक्करमें घटाबढ़ी चलेगी। बुखार आदि रोग फैलेंगे, अन्नादि पदार्थ इस मास तेज रहेंगे।

नोट—जहां गुड़ या रस शब्द लिखा हो उसके साथ ही उस दिन शक्कर तथा खांड पर भी वही तेजी मन्दी समझनी चाहिये। इसी प्रकार जहां केवल सरसों या अलसी या तिलहन शब्द लिखा हो, वहां तिलहन वाली सब वस्तुओंमें ही वही तेजी-मन्दी समझनी चाहिये।

★

जय! जय!! देश!!!

जय-जन शोषक! पोषक — पूंजीपति! जय नेता, जय जनता!!

बिल्ली हुई स्वतन्त्र, देश हो गया ऊंट, सेवक बन्दर!
ऊपर ही ऊपर सब दिखता, रहा नहीं कुछ भी अन्दर!
खादी क्या? हम टाट, टाट से बल्कल वसन पहिन सकते!
बिना मिनिस्टर बने, देशकी यदि कुछ सेवा कर सकते?
जन, मन, गण अधिनायक जय हे, खाली पेट नहीं भरता!
जय जन-शोषक, पोषक पूंजीपति जय नेता जय जनता!

दौरोंमें भाषण होते, प्रचार होता भत्ता पकता।
फल जब बन जाता है, तो फिर फलसे फूल नहीं बनता।
होटलमें सिगरेट फूंकता बोला टीलासे झब्बू!
कामरेड बन जाओ, अब तो छोड़ो नेतापन की बू!
ब्लेड चाहिये जहां, वहां चाकूसे काम नहीं चलता!
जय जन-शोषक, पोषक — पूंजीपति, जय नेता जय जनता!

खादी पहन घुसे कितने, खुलते आजादीका फाटक!
नकली शिवा प्रताप बनें ये, खेल रहे कैसे नाटक?
अनशनकी धमकी देना, हड़ताल कराना, खुलवाना!
भाषण देना, फिर शासकसे मिल समझौते करवाना!
इन भगवानोंकी लीलाओंका कुछ पता नहीं चलता।
जय जन-शोषक, पोषक पूंजीपति, जय नेता, जय जनता!

—श्री छैलबिहारीलाल पांडेय

★

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय पंचाङ्ग' से]

चैत्र शुक्ल	११ बुधवार	ता० १८ अप्रैल	कामदा एकादशी व्रत
	१२ गुरुवार	ता० १९ ,,	प्रदोषव्रत अनंग १३
	१५ शनिवार	ता० २१ ,,	सत्यव्रत चैत्री पूर्णिमा वैशाख स्नानारम्भः ।
वैशाख कृष्ण	३ मंगलवार	ता० २४ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।०
	११ मंगलवार	ता० १ मई	वरूथिनी एकादशीव्रत श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ।
	१३ गुरुवार	ता० ३ ,,	प्रदोषव्रत
	३० शनिवार	ता० ५ ,,	शनैश्चरी अमावस्या
वैशाख शुक्ल	१ सोमवार	ता० ७ ,,	चन्द्रदर्शन
	२ मंगलवार	ता० ८ ,,	श्रीपरशुराम जयन्ती श्रीशिवाजी जयन्ती ।
	३ बुधवार	ता० ९ ,,	अक्षयातृतीया
	४ गुरुवार	ता० १० ,,	श्री सूरदास जयन्ती
	५ शुक्रवार	ता० ११ ,,	श्रीमदाद्य शङ्कराचार्य जयन्ती
	७ रविवार	ता० १३ ,,	श्री गङ्गा ७
	८ सोमवार	ता० १४ ,,	वृषभ संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल सायंकाल
	११ गुरुवार	ता० १७ ,,	मोहिनी एकादशी व्रत
	१३ शनिवार	ता० १९ ,,	प्रदोषव्रत श्रीनृसिंह १४ व्रत
	१४ रविवार	ता० २० ,,	सत्यव्रत श्रीकूर्म जयन्ती
	१५ सोमवार	ता० २१ ,,	वैशाखी १५ वैशाखस्नान समाप्ति जलघटान्नदान ।
ज्येष्ठ कृष्ण	४ गुरुवार	ता० २४ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय स्टे० टा० १०।५४
	११ गुरुवार	ता० ३१ ,,	अपरा (भद्रकाली) एकादशीव्रत ।
	१२ शुक्रवार	ता० १ जून	प्रदोषव्रत
	३० सोमवार	ता० ४ ,,	सोमवती अमावस वटसावित्रीपूजन
ज्येष्ठ शुक्ल	२ बुधवार	ता० ६ ,,	चन्द्र दर्शन
	३ गुरुवार	ता० ७ ,,	श्री प्रतापजयन्ती
	६ गुरुवार	ता० १४ ,,	श्रीगंगा दशहरा
	१० शुक्रवार	ता० १५ ,,	मिथुन संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्न पर्यन्त निर्जला एकादशी व्रत
	११ शनिवार	ता० १६ ,,	निर्जला ११ व्रतं वैष्णवानां
	१३ रविवार	ता० १७ ,,	प्रदोषव्रत
	१५ मंगलवार	ता० १९ ,,	सत्यव्रत १५

आषाढ़ कृष्णा	३ शुक्रवार	ता० २२ जून	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।२०
	११ शुक्रवार	ता० २९ ,,	योगिनी ११ व्रत स्मार्त गृहस्थियोंका
	१२ शनिवार	ता० ३० ,,	एकादशीव्रत वैष्णवोंका
	१३ रविवार	ता० १ जुलाई	प्रदोषव्रत
	३० बुधवार	ता० ४ ,,	अमावस्या
आषाढ शुक्ल	१ गुरुवार	ता० ५ ,,	चन्द्रदर्शन गुरुपुष्ययोग
	२ शुक्रवार	ता० ६ ,,	श्रीजगदीश रथयात्रा
	६ शुक्रवार	ता० १३ ,,	भडुली ६

—★★—

बने रहें ?

[श्री गिरिराज 'मित्र']

बने रहें रक्षक ये शिक्षक हमारे प्रिय,
बने रहें हुक्म ये हाकिम भी बने रहें।
बने रहें बन्धन, हर वस्तु पर 'गिरिराज'
बने रहें स्वामी हम सेवक बने रहें।
बने रहें चोर अरु चोरनके साथी सब,
बड़े पेट वारे ये हाथी बने रहें।
बने रहें प्राण इस सूखे हुए पींजरामें,
बने रहें दर्शक ये नाटक बने रहें ॥१॥

नक्षत्रों पर होने वाले ग्रहवेधका फल

[ले० श्री पं० चानन रामजी शर्मा वैद्य]

ता० ६ अप्रैल १९५१से ११ जून १९५१ तक मीठा गुड़ शक्कर आदि मंदेकी लाइन पकड़े रहेगा, विशेष मंदा १४ अप्रेल १९५१से लेकर २१ अप्रैल १९५१ तक आयेगा। यहां पर खरीद करने वाले आगे लाभमें रहेंगे। १९ अप्रैल १९५१से तिल तैल अलसी सरसों चने मूंग तेज होने आरम्भ हो जायेंगे। २७ अप्रैल १९५१ से ७ मई १९५१ तक इन वस्तुओंमें विशेष तेजीकी भटकना आयेगी। वैसे तेजी मई तक रहेगी। गत पौष मासके श्रीस्वाध्यायके हेमन्तांक पृष्ठ ४२ पर नक्षत्रों पर होने वाले ग्रहवेधके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा था वह 'श्रीस्वाध्याय के ग्राहकोंके समक्ष है। रुई पर अचानक इतनी तेजी आई और उसी प्रकार २८ मई १९५१ तक सोने पर भी एकबार तेजी आकर रहेगी।

अनुभूत चांस

[एक अनुभवी दैवज्ञ]

चांदी

ता० १३ अप्रैल १९५१ तक चांदीमें तेजीका रुख रहेगा। इसके पश्चात् ता० १३ मई तक मंदीका योग है। तदनन्तर ता० १२ जून तक तेजी और इसके आगे ता० १४ जुलाई तक मंदीका रुख रहेगा। रुई भी इसीके अनुसार समझें।

बिट्वील-पाट-जूट

बिट्वील पाट जूटमें ज्येष्ठ कृष्णा ६ ता० २९ मई १९५१ तक मंदीका योग है। यहां ८०)के लगभग मंदी निश्चित रूपमें आयेगी। आगे फिर तेजी चलेगी। २९ मई तक मंदी एक दिनमें ८) १०) तक और तेजी २) ३) तक आना निश्चित है।

व्यापार भविष्य अप्रैल १९५१ ई०

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

अप्रैल में मं० श० रा० के योगोंसे चांदी सोना रुई के भाव में ता० १ से १० तक इकतरफा तेजी रहेगी। ता० ११से १८ तक मन्दी फिर दो दिन तेजी होगी, अप्रैल में सर्व वस्तुके भावोंमें तूफानी तेजी मंदी होगी। चांदी ऊंचे में १९५) नीचेमें १८०) सोना ११५) ऊंचेमें, नीचेमें १०८) रुई जरीला ऊंचेमें ९९०) नीचेमें ८५८)में खरीदना मत भूलो। ग्रहयोगों द्वारा तेजीकी ताकत कम नहीं हुई है व्यापारी सावधान, मंदी के रिएक्शनोंमें पोते करते रहें।

अप्रैलके ग्रहयोग—

ता० ५ को मीने गुरु तेजीकी रुख कम करेगा, अच्छी मंदी आ सकती है। ता० ५ को ४ बजे बेचो ता० ८ तक मन्दीकी धारणा है, व्यापारकी चाल दो तरफा चलेगी, बीच२में मिलता हुवा मुनाफा छोड़ना उचित नहीं है। ता० ८ को वृषेशुक्र तेजी दिखायगा। ता० ८ को १२ बजे से २ बजे तक घटे भाव खरीदनेकी राय है। ता० ८ की खरीद ता० १३ तक नफा देगी, किन्तु बीचमें ता० १० तक मिलता मुनाफा उठा लेना। ता० १० और ११को मन्दी रहेगी, यह खरीद का मौका देगी, हर घटे भाव पोते में बने रहो। ता० १३ को मेष संक्रांति मु० ४५ एक तरफा मन्दी दिखायगी, ता १३ को १२ बजेसे २ बजे तक वैस्ट तेजीमें डबल बेचो, ता० १६ तक लाभ सामने होगा। ता० १७-१८ को बाजार दो तरफा चलेगा, ऊंचे में बेचो नीचेमें खरीदो। ता० १७ के खुलते भावोंमें २॥) टकाकी ऊंच नीचका एवरेज समझो, ता० १९ को(चं. रा०) षडष्टक तेजी करेगा ता० २० को सूर्य सायन वृषभमें होगा इस योगसे मन्दी होगी, ता २० को बेचो, २२ तक बराबर मन्दीकी धारणा है। ता० २३ को र. शु. के योगसे एकदम तेजी आवेगी, ता० २३ से २६ तक जो धारणा है बराबर ता० २२के २ बजेसे ता०२२के १ बजे तक वेस्टमें मंदी खरीदना मत भूलो। ता० २६ तक लाभ हो जायगा, ता० २७ को अगस्त का अस्त मन्दी करेगा, ता० २६ को ४ बजे बेचो ता० २८ को लाभ सामने होगा। ता० २९ को .सू बु. का योग तेजी लावेगा, ता० २९ को १२ बजे खरीदो, ता० ३० को रातके १० बजे तक नफा लेकर सौदा बराबर कर लो यदि ३० को बराबर तेजी देखो रात को तो ता० १ को ४ बजे तक नफा अच्छा मिल जायगा।

नोट:—मईमें एक भारी योग मन्दी का बन रहा है, इस मासमें चांदीमें २५) सोनेमें १५ रुईमें ५०) गिरनेके योग हैं। इसलिये मन्दीकी गली लगाने वालों का भाग्य जोरदार रहेगा।

अल्मनाक द्वारा ग्रहयोग और अप्रैलकी तेजी मंदी

ता० ६ को ५ बजे तक लाभ लो, ता ६ की चं.मं.युति ४० घण्टेकी मन्दीकी चाल होगी। ता० ६ को ३बजे बेचो। ता० ८ के १ बजे तक मन्दी का जोर रहेगा, नीचे भावों में पोते कर लेना ही सच्चा काम है। ता० ८ को सू. श-युति ५२ घंटेकी तेजी लावेगी। ता० ८ को १ बजे तक खरीदो, ता० १० को ८ बजे श्याम तक लाभ उठाओ। ता० १० को चं. शु. युति १६ घण्टे मन्दीको मौका देगी, ता० १० को घटे भाव खरीदना ही चांस है। ता० १३ तक मुनाफा हो जायगा। ता० १३ को गु. नै. युति मन्दी को मौका देगी २। दिन मन्दी की चाल है, ता० १३ को ४ बजे से रातके १० बजे तक बेचो, १६तक मन्दीकी धारणा, है, किन्तु ता० १५ के १ बजेसे चार बजे तक तेजी देखो तो सौदा उलट दो वरना मन्दीकी इन्तजारी रखो, पूर्णिमा का योग चं. गु. योग से अच्छी मन्दी दिखा देगी। ता० १७ को चं. सू. के योगसे तेजी दिखाई देगी। ता० १७ को खरीदो १२ बजे, ता० १८के १० बजे तक लाभ उठाओ ता० १९ को श. र. योग ता० १८ के ३ बजे से २० के १२ बजे तक मन्दी रहेगी, इसमें व्यापार चांदी सोना रुई का पोते करना ही सच्चा काम है। ता० २२ तक लाभ हो जायगा। ता. २२ को चं. बु. का आपोजीशन १२ घंटेमें मन्दीको मौका देकर तेजी करेगा। ता० २३

को खरीदना मन्दी में चतुर सटोरिया का काम होगा। ता० २३ को १२ से ४ तक खरीदो, ता० २४ तक डबल लाभ लो, ता० २४ को र. श. योग मन्दी करेगा। ता० २४ को ४ बजे बेचो। ता० २६ तक मन्दीकी चाल ४० घंटे की होगी, नीचे भावोंमें खरीदना ही चांस है। ता० २४ के १० बजे रात से २५ के २ बजे तक बेचो। ता० २७ तक मन्दी में १॥ बजे डबल खरीदो, ३० तक अच्छा लाभ हो जायगा। नोटः — ग्रहयोग फल अश्मनाक फल दोनों का बराबर मिलान करो एक रुख पर पांच पेटी का, अलग-अलग रुख पर एक दो पेटी का काम करो, इतने पर भी आप न समझे तो हम हानि-लाभ के जिम्मेवार नहीं हैं चारों रुख का बराबर मिलान करो।

अप्रेलमें चांदी ऊंचेमें १९५) नीचेमें १८२)
ऊंचेमें बेचो नीचेमें खरीदो, लाभ होगा

जनरल चांस--ता० १ को खरीदो। ता० ६ तक तेजी ३॥) ता० ११ को खरीदो ता० १६ तक तेजी ४॥) रु० ता० २० को खरीदो ता० २६ तक तेजी ५॥) ता० ६ को बेचो। ता० ११ तक मन्दी ४) ता० १६ को बेचो। ता० २२ तक मन्दी ५) ता २६ को बेचो। ता० ३० तक मन्दी ३)।

नोट--अप्रेलमें तेजी २ रहेगी हमेशा घटे भाव खरीद जारी रखो। बेचाण सिर्फ ६-१६-२६ को करने पर ६ घंटे या २४ घंटे तक बाजार नीचा न जावे तो सोदा डबल कर पोते कर लो या काट लो बाजार का सामाना नुकसानकारी है।

—★★—

व्यापारिक तेजी मंदी और ज्योतिष

[लेखक—श्री प्रोफेसर बी. सी महता]

अप्रैल १९५१

अप्रैल मासका प्रारम्भ बृहस्पति शनिके प्रतियोग (आपोजिशन)से होता है, यह योग लगभग २० वर्षों बाद बना है, ऐसे योगोंमें ही डीवेल्युशन आदिकी सम्भावना होती है, अतः इस महीनेके प्रथम १०-१२ दिनमें चांदी, सोना, शेयर, गवार, एरंडा आदि वस्तुओंमें मंदीका ही काम करना श्रेयस्कर होगा। तेजीके उछालेमें पहले बेचो और पीछे खरीदोके सिद्धांतको अपनाना चाहिये।

तारीख १३से ३० तक हर व्यापारमें तेजीके योग बनते हैं। खास तौरसे चांदी ग्वार और एरंडामें तेजी आनेकी सम्भावना है।

मई १९५१

मई मासमें प्रथम पांच दिन मन्दीके हैं और ता० ७ से सब वस्तुओंमें तेजीके योग बने हैं। ता० २४ तक तेजी होकर फिर मन्दीके झटके प्रारम्भ हो जावेंगे। अंतिम तारीख तक चांदी, सोना, ग्वार, एरंडा आदिमें अच्छी मन्दी आनेकी सम्भावना है। उस समय शेयरोंमें भी अच्छी मन्दी आ सकती है।

जून १९५१

जूनमें इकतरफी घटाबढ़ीके योग पड़े हैं, इसलिए थोड़ी घट बढ़में ही अपना नफा खाते रहना चाहिये। ता० २से ६ तक चांदीमें तेजीके योग बनते हैं। एरंडा और ग्वारकी तेजी २० जून तक चलती है, बीचमें मंदीके रिएक्सन आ सकते हैं, परन्तु उसकी परवाह नहीं करनी चाहिये।

२० जून के बाद सब चीजोंमें मन्दीके झटके आवेंगे, सो अब तेजीका व्यौपार नहीं करना चाहिये, बल्कि पहले बेचो फिर खरीदो की पोलिसी अपनानी चाहिये।

तीन मासका साप्ताहिक बाजार भविष्य

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

पहला साप्ताह ता० १६से २३ अप्रेल तक

ता० १६को बुधका अस्त चांदी सोनेमें स्टे० टा० १२ से २ तक विदेशी खबरोंसे एक मंदीका झटका आवेगा ॥) ॥।) की मंदी आकर ठीक दो बजेसे चांदी, गुवार मटर के भावोंमें तेजी आवेगी। ता० १४को दो बजे खरीद करो ता० १२ तक तेजीका योग रहेगा। ता० १६को श० चं० युतिसे ता० १८ के ५ बजेसे ता० १६के सायंकाल तक मंदीक रुख रहेगा। ता० २०को तेजी २ बजेसे ४ तक रहेगी। तेजीकी चमकमें डबल बेचो, पूर्णिमा शनिवारी अवश्य ही मंदी दिखा देगी। इस साप्ताह एरयडा अरहर, मसूर, टाटा डिफर्ड, रंगलाल, पारा, हरड़, किराने के भावोंमें मंदी दिखाई देगी, घटेभाव खरीदनेकी राय है। आगेके ग्रहयोग तेजीकी सीमा बना रहे हैं।

दूसरा सप्ताह ता० २३ से ३० अप्रेल तक

ता० २३को खुलते बाजार चांदी; सोना, गुवार, सरसों खरीदो, रंग लाल पारा गंधक तिल तेल तेजाब अरंडा सींगदानाके भावोमें मंदी रहेगी। ता० २३ से २५ तेजी, बादको मंदी। किराना लालमिर्च कालीमिर्च घृत चना सरसोंकी खरीद ता० ३१ तक नफा दे जायगी। इस साप्ताह जूट तथा जूटकी बनी बस्तुओंके भावोंमें एक खासी मंदी आवेगी, गली लगाकर कार्य करने वाले लाभ उठा सकेंगे।

तीसरा सप्ताह ता० १ से ७ मई तक

इस साप्ताहमें, चांदी, सोना, गुवार मटर ता० १को ३ बजे बेचो, तारीख ४ तक लाभ सामने होगा। ता० ४ को २ बजेसे तीन तक डबल खरीदो, ता० ७ तक नफा मिल जायेगा। पाट कालीमिर्च टाटा डिफर्डके भावोंमें अच्छी मंदी आ सकती है। ता० ४ को बुध चंद्र युति बराबर मंदी लावेगी, शनैश्चरी अमावस्याके योगसे तिल तेल अलसी सरसोंके भावोंमें तेजी।

चौथा सप्ताह ता० ७ से १५ मई तक

इस साप्ताहमें चन्द्रदर्शन मु० ४५ बुध मार्गीके योगसे चांदी सोना गुवार मटरमें अचानक आश्चर्यजनक मंदी। ता० ६ से१० तक तीन दिनमें चांदीमें ३) ४) सोनेमें २) गुवारमें १) मटरमें १॥) की मंदी दिखा रही है। व्यापारी सावधान चांसमें देर भले ही हो जावे अंधेर नहीं है। ता० १२को वृषभ पर मंगल तथा वृषभ पर सुर्य तेजो करता है। ता० ११को खुलते बाजार खरीदो अरहर मसूर चांदी सोने में २) २॥) की तेजी करेंगे।

पांचवा सप्ताह ता० १५ से २२ मई तक

यहां १६को चं० श० युतिसे ठहरे हुए चांदी सोने के भावोंमें अचानक ३) ४) की मंदी आकर फिर इतनी ही तेजी आ सकती है। कारण सोमवारी पूर्णिमा भावोंका सुधारा कर देगी। व्यापारी ध्यान दें, चांदी ता० १५को घटे भाव दो बजे खरीद करके ता० १७के १२ बजे तक नफा लेकर डबल बेच दें। ता० १७ तक डबल मुनाफा मिल जायगा ता० १८को एक दिन तेजीका रियेक्शन आकर फिर मंदी अच्छी आवेगी। इस चांसको लेनेके लिए ता० १८को ठीक २से २॥ तक पूर्णमासीकी मंदी लगाना ही लाभका कारण होगा। रूई, पारा, हरड़ा रंग लाल जूट बारदानेमें मंदी रहेगी।

छठा सप्ताह ता० २३से ३१ मई तक

इस सप्ताहमें मं० सू० युतिसे चांदी सोना गुवार जूट टाटाडिफर्डके भावोंमें तेजी आवेंगी। ता० २३ को २ बजेसे ४ तक खरीद करो, ता० २६के दो बजे तक लाभ हो जायगा। ता० २६को समय २से तीन तक डबल बेचो, ता० ३० तक मंदी। इस मंदीके नफेको सम्हाल कर लेना होगा। अलसी सरसों रंगलाल पारा इत्यादि के भावोंमें भी मंदीका झटका आवेगा, टाटा डिफर्ड आयरन शेयरोंमें खासामंदी आनेकी संभावना है। सोमवती अमावस्या ता० ४ को एक रियेक्शन मंदीका अवश्य लावेगा।

सातवाँ साप्ताह ता० १से ७ जून तक

इस साप्ताहमें कन्या पर मार्गी शनि चांदी सोना गुवारके भावोंमें घटबढ़ समान करेगा। ता० १से ४ तक २) २॥) की मंदी लाकर पुनः उतनी ही तेजी बना देगा। व्यापारियोंको थोड़े नफेमें खरीद किये मालको नफा लेकर बेचाण करते रहना उपयुक्त होगा। ता० १, ५, ६, ७ तेजी। २,३,४ मंदीकी समझें। तिलहनोंके बाजारोंमें पुनः तेजी आवेगी, घटे भाव खरीदने की राय है। सन सूतली बान मूंजका स्टाक अवश्य ही लाभ देगा। टाटा स्टील शेयरोंमें इकतरफा तेजी रहेगी।

आठवां सप्ताह ता० ८ से १५ जून तक

चन्द्र दर्शन शु० १५ ता० ८ को चं० शु० युतिसे चांदी, सोना- रुई, ग्वारके भावोंमें स्थिरता रहेगी। १) २) की घटबढ़में बाजार रहेगा, निश्चित रुख मन्दीका रहेगा। ता० ७को ठीक २ बजे चांदी, सोना, खरीदो ता० ६के ४ बजे तक नफा ले कर डबल बेचो, १४ तक लाभ हो जायगा।

नौवां सप्ताह ता० १५से २१ जून तक

मिथुन पर सूर्य हर्शलका योग बराबर तेजी दिखायेगा ता० १५को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई- घृत खरीदो ता० १७के दो बजेसे ४ बजे तक डबल बेचो, ता० २२ तक दोतरफा लाभ हो जायेगा। व्यापारी सावधान, जेठ सुदी १५के कट वायदेके व्यापारकी आखरी मिती होगी। इस दिन मङ्गल-बुधकी युति बाजारको गिरा देगी, मन्दी वालोंको नफा मिल जायगा। तेजी वाले देखते रह जायेंगे। अलसी, मसूर, ग्वार किराना शेयर्स टाटा आर्डनरी मिल रजा टेक्स टाईलके भावोंमें तेजी रहेगी, घटेभाव खरीदनेकी राय है।

दशवां सप्ताह ता० २३से ३० जून तक

मिथुन राशि पर मंगल तेजी करेगा, ता० २३को दो बजे घटेभाव, चांदी, सोना, जूट, रुई खरीदो। ता० २६ तक इकतरफा तेजी, ता० २६को सूर्य, बुधकी युति से २४ घंटेका मंदीका झटका आवेगा, इस मन्दीमें माल पोते करना चतुर सटोरियाका काम होगा। अरहर, मसूर, ग्वारमें इकतरफा मन्दी रहेगी। टाटा डिफर्ड आयरन शेयरोंमें तेजी दिखाई देगी। ता० २७को गु० चं० युति ३८ घंटेमें चांदीमें मन्दी। ता० २७ को बेचो, ता० ३० तक मन्दीकी धारणा है। सावधान बाजार विपरीत जावें तो सामना करना ठीक नहीं है।

ग्यारहवां सप्ताह ता० १से ७ जुलाई तक

ता० २को ह० चं० युतिसे चांदी सोनामें तेजी आवेगी, ता० २को १२से १ तक चांदी, रुई, गुवार, पाट खरीदो, ता० ४ तक लाभ सामने होगा। ता० ४ को कर्क पर बुध मन्दी लावेगा। ता० ५ को चन्द्रदर्शन सु० ४५ मन्दीका कारण बना रहा है, यहां चांदीमें ४) ५) सोनेमें २) ३) की मन्दी आवेगी, पाट बारदानामें ३) ४) रु०की मन्दी। टाटा डिफर्डस्टील शेयर भी मन्दे जावेंगे। बराबर बेचान करते रहें। २४ घंटेमें मिलता हुआ मुनाफा छोड़ना भूल है।

बारहवां सप्ताह ता० ७ से १३ जुलाई तक

ता० ८को शु० चं० युतिसे तेजीकी सूचना है। पहले ता० ६को १२ बजे चांदी, सोना, रुई खरीदो। ता० १३ तक इकतरफा तेजीसे लाभ उठावें। सावधान, ता० १०को शनि-चं०की युति १२ घंटेकी मन्दीका रियेक्शन देगी। इसमें घटे भाव माल पोते करना ही चांस है। टाटा डिफर्ड आर्डनरी शेयरोंमें जबरदस्त मन्दी रहेगी। डबल बेचान करने वाले ही लाभ उठा सकेंगे, तिल तेल, अलसी, मसूर, अरहरमें मन्दीका स्टाक रखना हानिप्रद है। समयसे सचेत रहो!

साहित्य-समालोचना

[समालोचनाके लिए प्रत्येक पुस्तककी दो दो प्रतियां भेजनी चाहिएं। एक प्रतिकी समालोचना न हो सकेगी। — सम्पादक]

'कर्मयोगी' लेखक—योगिराज श्री अरविन्द। अनुवादक— श्री जगन्नाथ वेदालंकार, सम्पादक—डा० इन्द्रसेन एम० ए० पी० एच० डी०। प्रकाशक-अदिति कार्यालय, श्रीअरविन्द आश्रम पांडिचेरी। पृष्ठ संख्या ११५ मूल्य लिखा नहीं।

प्रस्तुत पुस्तकमें स्व० श्रीअरविन्दके कर्मयोगके सम्बन्धमें गहन किन्तु सरल और सुव्यवस्थित विचार हैं। श्रीअरविन्द ने वंगभंग आन्दोलनके समय अपने 'कर्मयोगिन्' नामक अंग्रेजी पत्रमें सन् १६०६-१० में 'The Ideal of the Karma Yogin'. नामक एक लेखमाला प्रकाशित की थी। उसीका यह पुस्तकाकारमें हिन्दी अनुवाद है। इस प्रकार मूलतः यह पुस्तक चालीस वर्ष पूर्व प्रकाशित है और उस समय लिखी गई थी, जबकि भारतकी स्वतन्त्रताके प्रयत्न प्रारम्भ हो रहे थे। किन्तु आज इतने वर्ष बीत जाने पर और देशके राजनैतिक या भौतिक दृष्टिसे स्वतन्त्र हो जाने पर भी इस पुस्तककी उपादेयता और महत्ता यथापूर्व बनी हुई है, प्रत्युत बढ़ गई है। क्योंकि भौतिक दृष्टिसे स्वतन्त्र हो जाने पर भी देशको आध्यात्मिक दृष्टिसे स्वतन्त्र होना अभी शेष है। और यह ग्रन्थ कर्मयोगके द्वारा इसी आध्यात्मिक स्वतन्त्रताका प्रतिपादन करता है। चालीस वर्ष क्या, सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी यह ग्रन्थ समाज और राष्ट्रमें चेतनाका संचार करता रहेगा। यों तो श्री अरविन्दका प्रत्येक शब्द प्रेरणाप्रद हैं, पर इस पुस्तकका अपना एक विशेष स्थान और इतिहास है। इसके प्रत्येक सन्दर्भको पढ़ते-पढ़ते प्राणोंमें एक अपूर्व स्फूर्तिका संचार होता है।

उदाहरणार्थ—आरम्भिक अंशको ही देखिये—"हम प्रत्येक व्यक्तिसे कहते हैं और विशेषतया उन युवकोंसे जो अब भारतका काम संसारका काम ईश्वरका काम करनेके लिए उठ रहे हैं, यदि तुम अपने मनको यूरोपीय विचारोंका गुलाम बना दोगे या जीवनको भौतिक व जड़वादी दृष्टिकोणसे देखोगे तो तुम इन आदर्शोंको धारण नहीं कर सकोगे और उन्हें सफल करना तो और भी कठिन होगा। भौतिक दृष्टिसे तुम कुछ नहीं हो, आध्यात्मिक दृष्टिसे सब कुछ हो। एकमात्र भारतीय ही प्रत्येक चीज पर विश्वास कर सकता है, प्रत्येक काम करनेका साहस कर सकता है, प्रत्येक चीजका बलिदान कर सकता है। इसलिए सबसे पहले भारतीय बन जाओ। अपने पूर्व पुरुषोंकी पैतृक सम्पत्तिको फिरसे प्राप्त करो। आर्य विचार, आर्य अनुशासन, आर्य चरित्र, आर्य जीवनको पुनः प्राप्त करें। वेदान्त गीता और योगको फिरसे प्राप्त करो। उन्हें बुद्धि या भावनासे नहीं जीवन द्वारा पुनः जीवित कर दो। उन्हें जीवनमें लाओ और तुम महान् दृढ़ शक्तिशाली अजेय निर्भय हो जाओगे। .... यहां (आत्मामें ही) माता विराजमान है और वह पूजाकी प्रतीक्षा कर रही है, ताकि वह शक्ति दे सके। उसमें विश्वास रखो, उसकी सेवा करो, अपनी इच्छाओंको उसकी इच्छामें, अपनी 'मैं'को देशकी बड़ी 'मैं'में, अपनी पृथक् स्वार्थपरताको मानवताकी सेवामें विलीन कर दो।' आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पुस्तकका प्रत्येक पद अपूर्व शक्तिका स्रोत है। हम सम्पादकके इन विचारोंसे सर्वथा सहमत हैं कि देशके स्वतन्त्र हो जाने पर आज राष्ट्रीय नवीनर्माणकी भावना हममें प्रबल हो रही है और चारों ओर अनेक राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि योजनाओंकी चर्चा सुनते तथा उन्हें कार्यान्वित होते देखते हैं। हमें आवश्यकता है कि हम इस दौड़ धूप में नवनिर्माणके मौलिक नियमों तथा सारे तत्वोंको सजगतासे स्मरण रखें, तभी हम अपनी आयोजनाओंसे वांछित तथा वास्तविक नवनिर्माणमें लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकार १. कर्मयोगीका आदर्श, २. कर्मयोग, ३. दोनों अवस्थाओंमें, ४. भारतकी जागती हुई आत्मा,

५. बलिदानका सिद्धांत, ६. विकासकी प्रक्रिया, ७. शांतिकी शक्ति, ८. तीन पुरुष, ९. प्रच्छन्न आत्माका दबाव, १०. व्यक्तिकी महत्ता, इन दश अध्ययायोंमें विभक्त यह पुस्तक प्रत्येक विज्ञके लिए पठनीय मननीय एवं आचरणीय है, अतः इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

योगविचार— (श्री अरविन्दयोग पर अनुभव पूर्ण लेखोंका संग्रह) प्रथम भाग। सम्पादक—डा० इन्द्रसेन। पृष्ठ २००, मूल्य २॥)।

इस पुस्तकमें जीवन और योग, योगका उद्देश्य, योगका अधिकार और दीक्षा, योग अभीप्सा, मनोविज्ञान और योग, पूर्णयोगकी साधना, पूर्णयोग विचार, श्री अरविन्दका आत्मसिद्धि योग, गीतामें अनासक्ति योग, श्री अरविन्दकी योगपद्धति और पातञ्जल योग, योगमय, प्रश्नोत्तरी, गीतामें योग समन्वय, श्री अरविन्दकी साधना-शैली, ये १६ लेख संकलित हैं। जिनके लेखक हैं श्री नलिनीकांत गुप्त, श्री अनिलवरणराय, डा० इन्द्रसेन, श्री मदनगोपाल गाडोदिया, श्री श्रद्धानन्द भारती, श्री अम्बालाल पुराणी, आचार्य अभयदेव, श्री श्रीनारायणप्रसाद।

मानवके हृदयसे काम, क्रोध, मोह, वैयक्तिक स्वार्थ आदि पाशविक वृत्तियोंको हटाकर उनमें सात्विक वृत्तियोंका संचार करना ही भारतीय योगका प्रमुख लक्ष्य है। और इसीकी साधना श्री अरविन्वन्दके पूर्णयोगमें है। इस पुस्तकमें संकलित लेखोंमें विद्वान् और अनुभवी लेखकों ने श्री अरविन्दकी उक्त साधना-पद्धति पर स्वानुभवके आधार पर बहुत सुन्दर विवेचन किया है। पुस्तक मननीय एवं संग्रहणीय है। जिज्ञासुजनोंको लाभ उठाना चाहिये। उक्त दोनों पुस्तकोंकी छपाई और कागज नयनाभिराम सुन्दर है।

इनके अतिरिक्त और भी कुछ छोटे बड़े ग्रन्थ और 'कल्याण'का स्कन्दपुराणाङ्क तथा 'धन्वन्तरि' 'प्राणाचार्य' 'अनुभूत-योगमाला' आदि कई सहयोगी पत्रोंके विशेषाङ्क समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं। इनकी आलोचना आगामी अङ्कमें प्रकाशित होगी।

—०—

तीसरी बार　　　　महामहिम आचार्य　　　　छप गया

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य हैं । हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं ।

हम संक्रांतिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिये जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र होते हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रांति किंक्रांति है, संक्रांति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये । मूल्य ॥) मार्गव्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्गके स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिए। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा।

मूल्य २) रु० मार्ग व्यय ।=) अलग।

व्यक्तिगत शंका समाधान

गताङ्कमें व्यक्तिगत प्रश्नोंके उत्तर प्रकाशित हुए देख कर इस बार अनेक ग्राहकोंने कूपनके साथ हमारे पास एककी अपेक्षा कई प्रश्न एक साथ पूछ डाले और कई ग्राहकोंने चांदी सरसों आदिके भावोंका ठीक उत्तर बिना मूल्य चाहा, तो कइयोंने उत्तर 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित न करके तत्काल डाक द्वारा भेजनेका आग्रह किया। ऐसे सब प्रश्नोंका निःशुल्क उत्तर 'श्रीस्वाध्याय' के कई पृष्ठों में प्रकाशित करना बहुत कठिन है। केवल एक साधारण प्रश्नका उत्तर प्रकाशित करनेका नियम रक्खा था, परन्तु ग्राहकोंने इसका ध्यान न रक्खा, अतः इस बार हम उत्तर प्रकाशित नहीं कर रहे हैं। जिन कुछ ग्राहकोंने केवल एक ही प्रश्नका उत्तर डाक द्वारा मांगा उन्हें भेजा जा रहा है। भविष्यमें बिना कूपनके केवल अपनी ग्राहक संख्या और एक प्रश्न लिखने पर वर्षमें एक उत्तर प्रत्येक ग्राहक को निःशुल्क मिल सकेगा।

—'ज्यो० गर्ग' C/o. 'श्रीस्वाध्याय' सोलन

प्राप्तिस्थान—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए--

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन अध्यक्ष अ०भा० राष्ट्रीय महासभा—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ....इस पत्र और इसके सञ्चालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।.... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी खाद्यमंत्री केन्द्रीय सरकार—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।........मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं........।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमार जी—"श्रीस्वाध्याय साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है।............ पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।................"

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूं।........"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।........यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।........"

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......."

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"........'श्रीस्वाध्याय'की सभी सामग्री ज्ञानवर्द्धक और उपादेय है।........प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......."

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (पू०सम्पादक 'सरस्वती')—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।........आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सात्वलेकर—"....'श्रीस्वाध्याय' के विषय में विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदय से इसकी सफलता चाहता हूं। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।